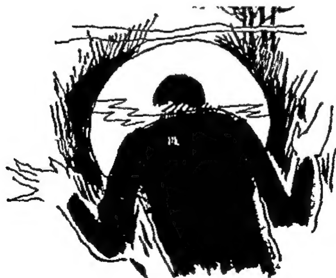


ज्ञान भारती

4/14, रूपनगर, दिल्ली-110007

पानी का पेड़

कृश्न चन्दर



प्रकाशक
ज्ञान भारती,
4/14, रूपनगर
दिल्ली 110007

मूल्य 38 00

प्रथम संस्करण
1990

मुद्रक
जतिन प्रिंटस,
नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

क्रम

पानी का पेड

जहा हमारा गाव है वहा दोनो ओर रूखे सूखे पर्वतो की पथरीली श्रृखलाए है। पूर्वी पर्वत माला बिलकुल नगी है, वनस्पति नाम को नही, केवल उनके अदर नमक की खाने है। पश्चिम पर्वत माला पर रूड, बहेकड, अमलतास और कीकर के वृक्ष उगे हुए है। उसकी चट्टाने श्यामल है परतु इन श्यामल चट्टानो मे मीठे पानी के दो अनमोल चश्मे है और इन दो पर्वत मालाओ के बीच, घाटी मे हमारा गाव आबाद है।

हमारे गाव मे पानी बहुत दुर्लभ है। जब से मैंने होश सभाला है, अपने गाव के आकाश को तपते हुए पाया है, यहा की धरती को हाफते हुए देखा है और गाव वालो के परिश्रम करने वाले हाथो और चेहरो पर एक ऐसी तरसी हुई भूरी चमक देखी है, जो शताब्दियो की अतृप्त तृष्णा से उत्पन्न होती है।

हमारे गाव के मकान और आसपास की धरती भूरी दिखाई पडती है। धरती से बाजरे की जो फसल पैदा होती है, वह भी भूरी बल्कि श्यामल-सी होती है। यही दशा हमारे गाव के किसानो की है और उनके कपडो की है। केवल हमारे गाव की स्त्रियो का रग सुनहरा है, क्योकि वे चश्मे से पानी लाती है।

बचपन से ही मेरी स्मृतिया, पानी की स्मृतिया है। पानी की तडप और उसकी मुस्कान, उसका मिल जाना और फिर उसका खो जाना—यह धरती इसी के विरह की तथा इसी के मिलन की कहानी की पृष्ठ-भूमि है।

मुझे याद है, जब मैं बहुत छोटा-सा था, तो दादी के साथ गांव की घाटी के नीचे बहती हुई रवेल नदी के किनारे कपड़े धोने जाता था। दादी कपड़े धोती थी मैं उन्हें सुखाने के लिए नदी के किनारे की चमकती हुई भूरी रेत पर डाल दिया करता था। इस नदी में पानी बहुत कम था। यह बड़ी दुबली पतली नदी थी—छरहरी और मन्द गामिनी, जैसे हमारे सरदार पदमसिंह की लड़की बाला। मुझे इस नदी के साथ खेलने में उतना ही आनंद मिलता था जितना बाला के साथ खेलने में। बाला की मुस्कान मीठी और मधुर थी और मिठास का मूल्य वही लोग जानते हैं जो नमक की खानों में काम करते हैं।

मुझे याद है हमारी रवेल नदी साल में केवल छः महीने बहती थी—छः महीने के लिए सूख जाती थी। जब चैत का महीना आने लगता, तो नदी सूखनी शुरू हो जाती और जब बैसाख उतरने लगता तो बिलकुल सूख जाती और उसकी तह पर कहीं कहीं छोटे छोटे नीले पत्थर पड़े रह जाते या नम नम कीचड़ जिस पर चलते हुए ऐसा लगता जैसे रेशम के मोटे गलीचे पर घूम रहे हों।

कुछ ही दिनों में नदी का कीचड़ भी सूख जाता और उसके मुख पर दरारों और पपड़ियों का जाल सा फैल जाता—ठीक वैसे ही जैसे किसी परिश्रमी किसान के होठों पर सूखी पपड़ियां जम जाती हैं। फिर ऐसा लगता जैसे उसकी गर्म गुदगुदी रेत ने वर्षों से पानी की एक बूंद भी नहीं चखी।

मुझे याद है, पहली बार जब मैंने नदी को इस तरह सूखते पाया था तो बिलकुल व्याकुल और चिंतित हो उठा था और उस चिंता में रात को सो न सका था। उस रात दादा ने गोद में लेकर मुझे अजीब-अजीब कहानियां सुनायी थीं। और सारी रात दादी की गोद में लेटे लेटे मुझे रवेल नदी की बहुत सी प्यारी प्यारी बातें याद आती रही थीं। उसका होले होले पत्थरों पर ठुमकते हुए चलना और पत्थरों के बीच से उसका वेग से और कतराकर निकलना—जैसे कभी-कभी बाला क्रोध में गली के नुक्कड़ से गुजर जाया करती थी।

नदी जहां ऐसे पत्थरों पर से गुजरती थी जो पास-पास होते थे, वहां

में और वानो वाजर के डठना से बनी हुई पनचक्की लटका लेत और गीला आटा पिसवात रहत थे। और पनचक्की नदी की मन्द गति के बावजूद कैसे-कैस तज चक्कर लगाकर घूमती थी !

परतु अब यह नदी सूख गयी थी।

इन सब बाता को याद करके मैंने दादी से कहा, "दादी, यह हमारी नदी कहा चली गयी ?"

"धरती के अदर छिप गयी है।"

'क्या ?"

"सूरज क डर से।"

"क्या ? यह सूरज से क्यो डरती है ? सूरज तो बहुत अच्छा होता है।'

'सूरज एक नही है बटा, सूरज दो हैं—एक तो जाडा का सूरज है, वह बडा अच्छा और दयालु है। दूसरा गमियों का है यह बहुत ज्यादा चमकीला और गुस्से वाला है। और ये दोना सूरज बारी-बारी म हमार गाव म आत ह। जब तक जाडो का सूरज रहता है वह नदी स खुश रहता है। परतु जब गमियो का जालिम सूरज आता है ता हमारी नदी क शरीर से उसका वस्त्र उतारना शुरू कर देता है। हर रोज कपडे की एक तह उतरती चली जाती ह। और जब बैसाख का अतिम दिन आता है ता नदी के शरीर पर पानी की एक पतली सी चादर रह जाती है। और उस रात को हमारी नदी लाज के मारे धरती म छिप जाती है और बाट जोहन लगती है जाडा क सूरज की, जो उसक लिए पानी की नयी पाशाकें लायेगा।"

मैंने आखें झपकात हुए कहा, 'सचमुच गमियो का सूरज तो बहुत बुरा है !"

ता लो, अब सो जाओ, बटा !'

मगर मुझे नीद नही आ रही थी इसलिए मैंने एक सवाल और पूछा, 'दादी, यह हमारे नमक के पहाड का पानी कडवा क्या है '

हमार गाव क बच्चे पानी के बारे म बहुत सवाल करत है। पानी उनकी जिज्ञासा को सदैव सचेत करता रहता है। दूसरे गाव म जहा पानी

बहुत होता है, वहा के बच्चे शायद सान में द्वीप ढूढते होंगे या परिस्तान का रास्ता खोजते होंगे। लेकिन हमारे गाव में तो बच्चे होश सभालते ही पानी की खोज में निकल पड़ते हैं—घाटी में और पहाड़ों पर पानी खोजने का खेल खेलते है। मैंने भी अपने बचपन में पानी खोजा था और नमक के पहाड़ पर पानी के दो-तीन चश्मे खोज निकाले थे। किस तरह कापते हुए हाथों से मैंने चट्टानों के बीच से झिझकते हुए पानी को अपनी छोटी छोटी उगलियों का सहारा देकर बाहर निकाला था। और जब पहली बार मैंने उसे अपनी आक में लिया, तो पानी हाथ में यो काप रहा था जैसे कोई नयी नयी पकडी हुई चिड़िया किसी बच्चे के हाथों में फड़फड़ाती है।

फिर जब मैं उसे आक में भरकर अपनी जीभ तक ले गया, तो मुझे याद है, मेरी कपकपाती खुशी कैसे एक कटु प्रतिक्रिया में बदल गयी थी। पानी ने जीभ तक जाते ही बिच्छू की तरह डक मारा और उसके विष ने मेरी आत्मा तक को कडवा कर दिया। मैंने पानी थूक दिया और फिर किसी नये चश्मे की खोज में चल पड़ा। परन्तु नमक के पहाड़ पर मुझे अब तक मीठा चश्मा न मिला इसलिए जब नदी सूखने लगी तो मीठे पानी के चश्मे की याद ने मुझे विह्वल कर दिया और मैंने दादी से पूछा, "दादी, यह नमक के पहाड़ का पानी कडवा क्यों है ?"

दादी ने कहा, यह एक दूसरी कहानी है।'

"तो सुनाओ !

' नही, अब सो जाओ !

"नही, सुनाओ ! नही तो हम रो देंगे।

"अच्छा बाबा सुनाती हू, पर तुम चिल्लाओगे तो नही ?'

"नही।'

' और न बीच बीच में टोकोगे ? '

' नही।

"अच्छा तो सुनो ! यह उस ओर जो नमक की पहाड़ी देखते हो, किसी जमाने में एक औरत थी जो उस पहाड़ की ब्याहता थी जहा आज कल मीठे पानी के चश्मे है।

"फिर ?"

'फिर एक दिन दानवों में बड़ी लड़ाई छिड़ी और यह सामने का पहाड़, जो इस औरत का आदमी था, लड़ाई में भर्ती हो गया और अपनी औरत को छोड़ गया। जाते समय अपनी औरत से कह गया कि वह उसके आने तक कहीं न जाये किसी से बात न करे, बस, अपने घर का ख्याल रखे।"

"अच्छा !"

'फिर कई वर्ष तक वह औरत अपने पति दानव की बाट जोहती रही। परन्तु उसका पति लड़ाई से न लौटा। आखिर एक दिन एक सफेद दानव उसके घर आया और उसका रूप देखते ही उससे प्रेम करने लगा।"

"प्रेम करना किसे कहते हैं, दादी ?"

दादी रूठ गयी बोली, "तूने फिर टोका !"

मैंने मन में सोचा अगर दादी रूठ गयी तो बाकी कहानी सुनने को न मिलेगी। कहानी दिलचस्प होती जा रही है इसलिए चुपके से सुन लेनी चाहिए। प्रेम करने का मतलब बाद में पूछ लेंगे। इसलिए मैंने जल्दी से सोचकर कहा, "अच्छा अच्छा दादी, अब आगे सुनाओ। अब नहीं टोकेंगे।"

दादी बड़ी रुखाई से बोली, जैसे उन्हें कहानी का आगे वाला हिस्सा पसंद नहीं है।

कहने लगी "होना क्या था ! पश्चिमी पहाड़ की औरत बेवफा निकली। जब उसे सफेद दानव ने झूठमूठ विश्वास दिलाया कि उसका पति लड़ाई में मारा गया है तो उसने सफेद दानव से ब्याह कर लिया।'

"दानवों में लड़ाई क्या हुई थी ?"

'तूने फिर टोका !" दादी बहुत नाराज होकर बोलीं, "चल, आगे नहीं सुनाऊंगी।'

"नहीं दादी जी, मेरी अच्छी दादी जी अब अब बिलकुल नहीं टोकूंगा'—मैंने खुशामद करते हुए कहा।

इस पर दादी कुछ पसीजीं, 'फिर एक दिन बहुत वर्षों बाद बूढ़ा दानव घाटी में आया। यह उसी औरत का पहला पति था। जब उसने

अपनी औरत को सफेद दानव के साथ देखा, तो उसे बडा क्रोध आया। उसने कुल्हाडा लेकर अपनी औरत और सफेद दानव को कत्ल कर दिया। फिर वह स्वयं भी मर गया। फिर ये दानव लोग पत्थर के पहाड बन गये—बूढा दानव भी और उसकी औरत भी। चूंकि बूढे दानव को अपनी औरत से प्यार था, इसलिए उसमें मीठा पानी है। इसके विपरीत चूंकि औरत ने बे-वफाई की थी, इसलिए उसमें खारा पानी है। खारे पानी का कारण यह है कि वह औरत पश्चाताप के आंसू रोती रहती है जब उसके आंसू सूख जाते हैं तो नमक के ढेल बन जाते हैं जिन्हें हर रोज तुम्हारा बाप पहाड के अंदर से खोदकर निकालता है।'

फिर ?

'फिर कहानी खत्म !'

कहानी खत्म हो गयी और मैं भूल गया कि मैंने क्या पूछा और मुझे क्या जवाब मिला। मैंने कहानी सुनी, चने की साग लिया और लेटते ही गहरी नींद सो गया। रात भर मेरी आंखों के सामने नमक की खान का दृश्य आया जहां मेरे अब्बा काम करते थे और जहां जवान होकर मुझे काम करना था। 'आह कितनी बडी खान थी। चारों ओर नमक की दीवारें नमक के खंभे नमक के आईने। एक ओर नमक की झील थी, जिसके चारों ओर नमक की दीवारें थीं और नमक की छत थी जिससे बूंद बूंद नमक का पानी रिसता था और नीचे गिरकर झील बन रहा था।'

मेरे अब्बा इस झील को देखकर बोले 'यहां इतना पानी है, परंतु फिर भी कहीं पानी नहीं है। दिन भर नमक की खान में काम करते करते सारे शरीर पर नमक की पतली सी तह जम जाती है, जिसे खुरचो तो नमक चूरा चूरा होकर गिर पडता है। उस समय कितनी अकुलाहट होती है ! जी चाहता है कहीं मीठे पानी की झील हो और आदमी उसमें गोते लगाता जाये।'

पानी !

पानी !!

सारे गांव में पानी कहीं नहीं था। पानी नमक के पहाड पर भी नहीं

था। पानी या तो सामने के पहाड़ पर जिसने प्रेम के साथ छल नहीं किया था, या पानी फिर रवेल नदी में था। परंतु यह नदी भी वर्ष में छः महीने गायब रहती थी। एक दिन तो यह बिलकुल ही गायब हो गयी, हमेशा के लिए। आज उसकी जगह नील पत्थर है और सूखी रेत। और उसके किनारे चलने वाली औरतों की निराश आँखें आज तक उसकी राह तकती हैं।

परंतु यह मेरे बचपन की कहानी नहीं है। यह मेरे लड़कपन की कहानी है, जब हमारे गाँव से बहुत दूर, उन पहाड़ी श्रृंखलाओं के दूसरी ओर, सैकड़ों मील लंबी चौड़ी जागीर के मालिक राजा अकबर अली खाँ ने हमारे इलाके वालों की इच्छा के विरुद्ध रवेल नदी का बहाव मोड़कर अपनी जागीर में कर लिया। और हमारी घाटी को तथा निकटवर्ती प्रदेश को सूखा, बंजर और वीरान कर दिया। उस समय हमारे गाँव वाले इस तरह व्यथित हो उठे जैसे बहुत-से बालक अपनी माँ के मरने से अनाथ हो जाते हैं। इस प्रकार रवेल नदी हमारे लिए मर गयी, उसका पानी मर गया। और हमारे लिए एक कसकती याद छोड़ गया।

मुझे याद है, उस समय हमारे गाँव वालों ने दूसरे गाँव वालों से मिलकर सरकार को एक अर्जी दी, राजा अकबर अली खाँ के अत्याचार के विरुद्ध। उन्होंने सरकार से अपनी खोयी हुई नदी माँगी थी, क्योंकि नदी घर की औरत की तरह होती है। वह घर में पानी देती है, खेतों को सींचती है। कपड़े धोती है, शरीर को साफ करती है। नदी के बिना हमारा गाँव ऐसा था जैसे बिना औरत का घर। गाँव वालों को बिलकुल ऐसा लग रहा था, जैसे किसी ने उनके घर से उनकी बेटी का अपहरण कर लिया हो। उनके अंदर वही रोष था, वही क्रोध था, उनके वही तेवर थे, वही मरने मारने के अंदाज थे।

लेकिन राजा अकबर अली खाँ चकवाल के इलाके का सबसे बड़ा जमींदार था। अफसरों के साथ उसका मेल जोल था। नमक की खान का ठेका भी उसी के पास था।

नतीजा यह निकला कि गाँव वालों को उनकी नदी न मिली, उलटे हमारे गाँव के बहुत से लोग, जो नमक की खान में काम करते थे, निकाल दिये गये। उनका दोष केवल यह था कि उन्होंने अपने गाँव की अपहरित

नदी को वापस लौटाने की मांग की थी। मुझे याद है उस दिन अब्बा कांपते कांपते घर में आये थे। उनके चेहरे का रंग उड़ा हुआ था और वे बार बार अपने कानों को हाथ लगाकर कहते 'तोबा-तोबा, कैसी गलती हुई! यह तो कुछ ऊपर वाले की मेहर थी कि बच गया, वरना राजा साहब तो मुझे भी निकाल देते। मैं तो अब कभी राजा साहब के विरुद्ध अर्जी न दूंगा चाहे पानी छोड़, मेरी लड़की ही क्यों न उठाकर ले जायें। तोबा तोबा!'

और यह भी सच है कि हमारे गांव में पानी की इज्जत, बेटी की इज्जत की तरह बहुमूल्य है—पानी, जो जीवन प्रदान करता है पानी जो नमी में रचकर प्रवाहित होता है पानी जो मुंह धोने को नहीं मिलता, पानी जिसके अभाव में वस्त्र मैले और गन्दे रहते हैं, सिर में जुएं, शरीर पर पसीने की धारियां और आत्मा पर गुबार जमा रहता है। यह पानी तो मान से अधिक मूल्यवान है और बेटी से अधिक रूपवान! उसका मूल्य और मान तो हमारे गांव वालों से पूछिए जिनका जीवन पानी के लिए लड़ते झगड़ते व्यतीत होता है। एक बार सामने के पहाड़ के मीठे चश्मे से पानी लाने के लिए सरवर खां की बीवी सरों और अय्यूब खां की बीवी आयशा—दोनों आपस में लड़ पड़ी थीं, यद्यपि दोनों इतनी गहरी सहेलियां थीं कि हर समय साथ रहती थीं। फिर भी उनके साथ-साथ थे चश्मे से पानी लेने इकट्ठे जाती थीं। पहले एक फिर दूसरी पानी भरती थी। बारी-बारी एक दूसरे का घड़ा उठवाकर सिर पर रखना और फिर बातें करती घर लौटती थीं। परंतु उस दिन न जाने क्या हुआ, दोनों को जाने क्या जल्दी थी कि एक कहती पहले पानी मैं भरूंगी और दूसरी कहती कि पहले मैं। शायद उन्हें एक दूसरे पर क्रोध नहीं था शायद उन्हें क्रोध इस बात पर था कि यहां मीठे पानी का एक ही चश्मा था जहां नदी के सूख जाने के बाद लोग दूर से पानी लेने आते थे। मुंह अंधेरे ही औरतें घड़ा लेकर चल पड़ती। जब वहां पहुंचती तो या तो एक लंबी लाइन पहले से लगी होती या चश्मे के मुंह में एक ऐसी पतली-सी धार निकलते देखती, जो आधे घंटे में मुश्किल से एक घड़ा भरती और तीन कोस का आना जाना एक आफत से कम न था। फसाद का कारण कुछ भी हो, असली

लडाई पानी की थी। दोनो औरतो ने देखते देखते एक दूसरे के मुह नोच डाले, घडे फोड़ डाले, कपडे फाड डाले और फिर रोती हुई अपने-अपने घरो को लौट आयी। वहा पहुचकर सदा ने सरवर खा को भडकाया और आयशा ने अय्यूब खा को। दोनो के पति क्रोध से पागल होकर, कुल्हाडिया लेकर बाहर निकल पडे और इससे पूर्व कि लोग आकर बीच-बचाव करें दोनो ने कुल्हाडियो से एक दूसरे को ढेर कर दिया। शाम होते होते दोनो पडोसियो का जनाजा निकल गया। हमारे गाव के कब्रिस्तान म बहुत सी कब्रें पानी ने बनायी है।

मेरे लडकपन के दिनो में जब य दोनो कत्ल हुए, उस समय सामने के पहाड पर ही मीठे पानी का चश्मा था। परतु बाद म जब मैं और बडा हुआ, तो यहा एक और चश्मा निकल आया। इस नये चश्मे की कहानी भी बडी अनोखी है। यह तब का जिक्र है जब हमारे पूठहार म बडा भयकर अकाल पडा था और गर्मी के कारण सारे नदी नाले और कुए सूख गय थ। केवल कही कही उन चश्मो म पानी रह गया था, जो पहाडो के खड्डो म थे, जहा सूय की किरणे नही पहुच पाती थी। उन दिनो हमारे घरो की औरतें रात के दो बजे ही उठकर चल देती और चश्मे के नीचे सदा घडो की एक लबी कतार दिखाई देती, प्यासे घडो की एक लबी कतार, जिसमे से प्यास से बिलखते बच्चो की आवाजें आती थी।

उस जमाने म बहुत से लोग भगवान मे सच्चाई म और नेकी म अपनी आस्था खो बैठे। उन लोगो मे एक जैलदार मलिक खा था। उसने थानेदार फजल अली से मिलकर उस चश्मे पर पहरा लगा दिया और फिर तहसीलदार गुलाम नबी म मिलकर चश्मे के आसपास की सारी धरती खरीद ली। फिर रातोरात उसके चारो ओर दीवार खडी कर दी और उसके द्वार पर ताला लगा दिया। इस चश्मे से कोई आदमी, बिना अनुमति के, पानी नही ले सकता था क्योंकि अब यह चश्मा जैलदार की मिलकियत था और जैलदार ने चश्मे से पानी ले जाने वालो पर टक्स लगा दिया— एक घडे पर एक आना दो घडो पर दो आने।

तब सारे गाव म इस अन्याय अत्याचार के विरुद्ध शोर मच गया। परतु पुलिस और सरकार जैलदार के पक्ष मे थी, और इसलिए कानून भी

उसकी आर था। और जिसकी आर मानून था, उसी भी और पानी था। इसलिए गाव के सारे जवान और बूढ़े और बच्चे इकट्ठे होकर मेरे अब्बा के पास आये और बोले चचा गुलाबसिंह अब तुम ही हमें इस मुसीबत से छुटकारा दिला सकते हो।'

'वह कैसे?' मेरे अब्बा ने विस्मित होकर पूछा।

'याद है यह मीठे पानी का चश्मा, जो अब जलदार मलिक का हो गया है, मुझे हाकिम ने कहा, 'तुम्हारा ही खोजा हुआ है। क्या तुम दूसरा चश्मा नहीं खोज सकते? आखिर इन पहाड़ के गर्भ में, इनकी गहराइयों में और भी तो कहीं मीठे पानी का चश्मा होगा, जो त्रस्त मानव को अमृत पान करा सके। तुम हम सबसे बड़े हो, अनुभवी हो, अपनी बुद्धि दौड़ाओ। हम तुम्हारे साथ दौड़ धूप करने को तैयार हैं। हमारे गाव में पानी नहीं है और पानी अब अवश्य चाहिए।

मेरे अब्बा चारपाई पर उकड़ू बैठे थे। तुरंत अल्लाह का नाम लेकर उठ खड़े हुए। सारा गाव उनके साथ था। पहाड़ पर चढ़ाई थी और पानी की तलाश थी। फरहाद के पहाड़ काटने से पानी की तलाश अधिक कठिन है यह बात उस दिन मालूम हुई, क्योंकि पानी दृष्टि के सामने नहीं होता। वह तो छलावे की भांति पहाड़ की सिलवटों में छिपा होता है। पानी तो एक खानाबदोश है। आज यहां कल वहां। पानी एक परदेसी है जिसके प्यार का कोई भरोसा नहीं। पानी का अस्तित्व उस भीनी सुगंध की भांति है जो तेज धूप में उड़ जाती है। इस पुंछ्गार के प्रदेश में जहां औरतें चरित्रवती और लज्जाशील हैं, वहां पानी छलिया और हरजाई है। वह कभी किसी एक का होकर नहीं रहता। वह सदा यहां से वहां, एक स्थान से दूसरे स्थान पर, एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश में विचरता रहता है। ऐसे छलिया, ऐसे हरजाई की खोज के लिए एक कुदाल नहीं, एक ऐसा शीशा चाहिए जिसके सामने पहाड़ का वक्ष खुली किताब की तरह रोशन हो जाय। मेरे गाव वालों ने कुछ समझकर ही मेरे पिता को इस काम के लिए चुना था।

उस रोज हम दिन भर ऊंचे ऊंचे पर्वतों की धूल छानते रहे। हमने कहां कहां पानी नहीं खोजा—दरिया की घनी झाड़ियों में चट्टानों की

गहरी गहरी दरारो म, गहरे अंधेरे खड्डो मे, जगली जानवरो की मादा म । पानी की खोज म हमन सारे पुरान चश्मे खोद डाले। लेकिन इनका खोदना ऐसा ही था, जसे आदमी जीवन की खोज मे कब्रें खाद डाले। पानी कही नही मिला । एक चोर की भाति उसन स्थान स्थान पर अपने चिह्न छोडे थे। परतु अत म वह जुल दकर कही लोप हो जाता था। जाने प्रकृति क किस कोन म, किस स्थान पर, किस गहरी खोह मे बैठा हुआ वह अपन चाहन वालो पर हस रहा था।

परतु गाव वालो न आशा नही छोडी । वे सारा दिन मेर पिता के पीछे-पीछे पानी की खोज करत रह। अत म जब शाम होन को आयी तो मेरे पिता न माथे का पसीना पोछकर, एक ऊचे टीले पर खडे होकर, उधर दृष्टि दौडायी, जिधर सूय अस्त हो रहा था। सहसा उन्ह अस्त होत हुए सूय क नारगी प्रकाश म चट्टानो की एक गहरी दरार म, फरन की घास दिखाई दी। और कहत है जहा फरन उगी होती है, वहा पानी अवश्य होता है। फरन पानी की पताका है और पानी एक विचरन वाला जीव है। पानी जहा जाता है, अपना झडा साथ ल जाता ह।

एक चीख मारकर मेर पिता उस ओर लपके जिधर फरन उगी हुई थी। गाव वाल उनक पीछे पीछे भाग। जल्दी-जल्दी म मरे पिता न धरती को नाखूनो ही स खोदना शुरु किया। धरती जो ऊपर से सख्त थी, नीचे कोमल होती गयी, गीली होती गयी। अत मे जोर स पानी की एक धार ऊपर आयी और सकडो सूखे हुए कठो स हष की ध्वनि निकली।

पानी ! पानी !!"

मेरे पिता ने कपकपाते हाथो स ओक म पानी भरा। सबकी दृष्टि उनके मुख पर थी। सैकडो दिल आशा और आशका से धडक रह थे—

"भगवान ! पानी मीठा हो ! अल्लाह ! पानी मीठा हो !!"

मेरे पिता न पानी चखा।

'पानी मीठा है !"—व खुशी म चिल्लाय।

"पानी मीठा है ! '—गाव वाल जोर से चिल्लाय।

'पानी मीठा है !"—सारी घाटी गूज उठी, "पानी मिल गया, पानी मीठा है।"

सारी घाटी में ढोल बजने लगे। बच्चे शोर मचाने लगे। गाँव वालों ने जल्दी से चश्मे को खोदकर अपने घेरे में ले लिया। अब चश्मा उनके बीच में था और वे उसके चारों ओर थे। और वे मुड़ मुड़कर उसे इस तरह देख रहे थे जैसे माँ अपने नवजात शिशु को निहार निहारकर पुलकित होती है।

वह रात मुझे सदैव याद रहेगी। उस रात को कोई आदमी गाँव न लौटा। उस रात गाँव वालों ने चश्मे के किनारे जशन मनाया। उस रात तारों की छाँव में वरियों की छाया में माओं ने चूल्हे सुलगाये और बच्चों को थपक थपक कर सुलाया। उस रात कुमारियों ने लहक-लहक कर मद भरे गीत गाये—ऐसे गीत जो पानी की तरह स्वच्छ और निर्मल थे जिनमें जंगली चश्मों की गूंज और जल प्रपातों का प्रवाह था। उस रात सारी औरतें सुंदर थीं सारी धरती उपजाऊ थी, सारी जड़ें हरी थीं और सारे बीज अंकुरित होकर फूट पड़े थे।

यह रात हमारे गाँव में तब आयी थी, जब मेरे पिता ने मीठा पानी ढूँढ निकाला था। पानी जो मानव के श्रम का द्रव था, पानी, जो उसकी चाह का अमृत था, हमारे गाँव में इस तरह आया था जैसे बारात की डोली आती है। वह नया चश्मा हमारे बीच आज इस तरह हौले-हौले लजाता बह रहा था जैसे नयी दुल्हन ठिठकती हुई अनजान आँगन में पग रखती है।

उस रात मेरे एक हाथ में पानी था दूसरे में बानो का हाथ था और आकाश पर घुन घुन तारे थे।

इस नये चश्मे से साथ मेरे यौवन-काल की अनेक सुखद स्मृतियाँ संबंधित हैं। इस चश्मे के किनारे मैंने बानो से प्रेम किया—बानो, जिसका सौन्दर्य पानी की भाँति सुलभ था। जिसे देखकर विचार आता था कि धरती के अंदर में मीठे पानी के जाने कितने चश्मे छिपे हैं सुंदर स्मृतियाँ की जाने कितनी कलियाँ खिलें जमीन पर पड़ी हैं। बानो का प्रेम कितना मौन सुकुमार था—धरती के नीचे बहने वाले चश्मे की भाँति। वह संध्या के धुंधलके में या प्रातः काल के झुटपुटे में इस चश्मे के किनारे आती थी—जब यहाँ कोई न होता—मुझे मिलती। मुझे देखकर उसके मुख पर मुस्कान की

आभा ऐसे झिलमिला उठती, जैसे रात्रि के अंधकार में प्रभात का प्रकाश। वह घड़े को चश्मे की धार के नीचे रख देती। पानी घड़े से बातें करने लगता और मैं बानो से। समय बीतता रहता और फिर घड़ा पानी से भर जाता। हमारे मन खुशी से भर जाते और हमारे जाने बिना, कहीं दूर से, सुबह यों धीरे धीरे चलकर हमारे पास आ जाती कि हम चौंक उठते। फिर मैं उसका घड़ा उठाकर उसके सिर पर रखी लाल रंग की इंडली पर रखता और वह मुस्कराती, पलटती, घूमती ढलवानों पर चली जाती और मैं उसे निहारता रहता। मैं उस समय भी उसे निहारता रहता जब दूसरी औरतें मेरी ओर देखकर मुस्कराने लगतीं। और मुझे वह दिन याद आ जाता, जब मैंने दादी से पूछा था, 'दादी! प्रेम करना किसे कहते हैं?'

और फिर उस चश्मे के किनारे की वह रात भी मुझे याद है जब मैं खान में काम करता था और दिन भर का थका घर लौटता था और चारपाई पर लेटते ही सो जाता था। सवेरे ही मेरी आंख खुलती थी। कई दिनों से बानो से मिलना नहीं हुआ था, परंतु कोई चिंता न थी। वह साथ ही के घर में तो थी। उन्हीं दिनों उसके चाचा का लड़का गुफ़रान आया और चला भी गया, परंतु मुझे उससे मिलने का अवकाश ही न मिला, क्योंकि मैं खान में नया नया नौकर हुआ था और मुझे काम सीखने का बड़ा चाव था। और यह तो सब जानते हैं कि नमक की खान में जाकर आदमी भी नमक हो जाता है।

एक रात बानो ने कहा कि रात में दो बजे चश्मे पर उससे मिलूं।

मैं बोला "मैं बहुत थका हुआ हूं।"

वह बोली, 'नहीं, जरूरी काम है। आना होगा।"

चुनांचे मैं गया।

दो बजे, आधी रात को, चश्मे पर कोई नहीं था—हम दोनों के अतिरिक्त। मैंने उससे पूछा, "क्या बात है?"

वह देर तक चुप रही।

मैंने फिर पूछा, "बताओ भई, बात क्या है?"

वह बोली, "मैं गांव छोड़कर जा रही हूं।"

मेरा दिल धक से रह गया। मुझे लगा, जैसे चश्मा बहते-बहते रुक गया हो।

मेरे गले से एक क्षीण सी आवाज निकली, "क्यों?"

"मेरी शादी तय हो गयी है।"

"किससे?"

"चाचा के लड़के के साथ, जो लाम से होकर आया है।"

"और तुम जा रही हो?" मैंने कटुता से पूछा।

"हां!"

वह चुप हो गयी। मैं भी चुप हो गया। सोच रहा था इसे अभी जान से मार दूं, या शादी की रात कत्ल कर दूं। थोड़ी देर ठहरकर बानो फिर बोली, "सुना है चकवाल में पानी बहुत होता है। सुना है, वहां बहुत बड़े नल होते हैं। उनसे जब चाहा, टोंटी खोलकर पानी ले सकते हो।"

उसका स्वर आह्लाद से विकंपित था। वह शायद कुछ और भी कहती, परंतु मेरी उदासी का ख़याल करके रुक गयी।

मैंने उसके बिलकुल निकट जाकर उसे दोनों कंधों से पकड़ लिया और ध्यान से उसकी आंखों में देखा। उसने एक क्षण मेरी ओर देखकर निगाहें झुका लीं। उसकी निगाहों में मेरी मुहब्बत से इनकार नहीं था, परंतु पानी के प्रेम का इकरार था। मैंने धीरे से उसके कंधे छोड़ दिये और उससे अलग होकर खड़ा हो गया। सहसा मुझे ज्ञात हुआ कि प्रेम सत्य, निष्ठा और भावना की प्रगाढ़ता के साथ साथ थोड़ा-सा पानी भी चाहता है। बानो की आंखों में एक ऐसा मार्मिक चाह का उलाहना था मानो वह कह रही हो, "जानते हो, गांव में पानी कहीं नहीं मिलता। यहां मैं दो दो महीने नहा नहीं सकती। मुझे अपने आपसे, अपने बदन से नफ़रत सी हो रही है।"

बानो चुपचाप चश्मे के किनारे बैठ गयी। मैं रात्रि के उस अंधकार में भी उसकी आंखों के अंदर प्रेम का एक रुपहला स्वप्न देख रहा था—स्वप्न जो गंदे, बदबूदार, जूओं, पिस्सुओं और खटमलों से भरे चीथड़ों में लिपटा हुआ न था, वह स्वच्छ और निर्मल था। उससे धुले वस्त्रों और नये जोड़े की महक आ रही थी।

मैं बिलकुल हताश और बेबस होकर एक ओर बैठ गया।

रात के दो बजे!

बानो और मैं!

दोनों मौन और निस्तब्ध!

कभी ऐसा सन्नाटा, जैसे सारा संसार शून्य है, कभी ऐसी निस्तब्धता जैसे सारे स्वर सो गये हैं।

चश्मे के किनारे बैठी हुई बानो धीरे-धीरे घड़े में पानी भरती रही। पानी धीरे-धीरे घड़े में गिरता हुआ बानो से बातें करता रहा—मुझसे कुछ कहता रहा, उससे कुछ।

पानी की बातें मनुष्य की सुंदरतम, स्वच्छतम और स्वस्थतम बातें हैं।

बानो चली गयी।

जब बानो चली गयी तो मुझे मुहब्बत की वह कहानी याद आयी, जिसमें मुहब्बत रोयी थी और आंसू नमक के डले बन गये थे। उस समय मेरी आंखों में एक भी आंसू न था। परंतु मेरे हृदय में नमक के बड़े-बड़े डले इकट्ठे हो गये थे। मेरे अंतर में नमक की एक पूरी खान थी—नमक की दीवारें, नमक के खंभे, नमक की छत और खारे पानी की एक पूरी झील। मेरे मन और मस्तिष्क पर नमक की एक बारीक सी तह जम गयी थी। और मुझे विश्वास हो चला था कि यदि मैं अपने शरीर को कहीं से भी खुरचूंगा तो आंसू फूटकर बह निकलेंगे। इसीलिए मैं मौन बैठा रहा था—निश्चल, निश्चेष्ट, भाव शून्य। जब बानो उठी थी, तो भी मैं बैठा ही रहा था, और उसने घड़ा उठाकर स्वयं ही सिर पर रखा, तो भी मैं बैठा ही रहा था और जब वह ढलवान पर से उतरकर चली गयी थी, तो भी मैं चुपचाप बैठा ही रहा था क्योंकि मेरे पास पानी नहीं था और बानो पानी के पास जाना चाहती थी।

जिस रात बानो का ब्याह गुफरान के साथ हुआ, मैंने एक अनोखा स्वप्न देखा। मैंने देखा हमारी खोयी हुई नदी हमें वापस मिल गया है और नमक के पहाड़ पर मीठे पानी के चश्मे उबल रहे हैं और हमारे गांव के बीचोंबीच एक बहुत बड़ा पेड़ खड़ा है। यह पेड़ सारा का सारा पानी का

है। इसकी जड़ें टहनियां, फूल पत्ते, पत्तियां सब पानी की हैं और इन सबसे पानी गिर रहा है और यह पानी हमारे गांव की बंजर धरती को सींच रहा था।

और मैंने देखा कि किसान हल चला रहे हैं, औरतें कपड़े धो रही हैं, खान में काम करने वाले अपने शरीर से नमक धो रहे हैं, और बच्चे फूलों के हार लिये पानी के पेड़ के चारों ओर नाच रहे हैं और नानी मरे कंधे से लगी मुझसे कह रही हैं, "अब हमारे गांव में पानी का पेड़ उग आया है, अब मैं तुम्हें छोड़कर नहीं जाऊंगी।"

यह बड़ा विचित्र सा स्वप्न था। लेकिन जब मैंने अब्बा को सुनाया तो वे मारे डर के कांपने लगे।

बोले "तुमने यह सपना किसी और को तो नहीं सुनाया ?"

मैंने कहा "नहीं तो। लेकिन आप डर क्यों गये अब्बा? यह तो सपना ही है।

वे बोले "अरे, सपना तो है, लेकिन यह लाल सपना है।'

मैंने हंसकर कहा 'नहीं अब्बा जो सपना मैंने देखा था, वह लाल नहीं था। उसका रंग तो बिलकुल वैसा था, जैसा पानी का होता है। वह पानी का पेड़ था। उसकी टहनियां पत्तियां—सब पानी की थीं। उस पेड़ पर फलों की जगह शीशे की सुराहियां लटक रही थीं और उनमें पानी बच्चों की किलकारियों की तरह चमक रहा था।

वे बोले "नहीं बेटा, कुछ भी हो, यह सपना खतरनाक है। अगर पुलिस ने सुन लिया। या इसका तुमने किसी से जिक्र किया, तो वे तुम्हें उसी तरह पकड़कर ले जायेंगे जिस तरह वे उन मजदूरों को पकड़कर ले गये थे जिन्होंने गांव की नदी को वापस लाना चाहा था इसलिए खैर इसी में है कि तुम इस सपने का जिक्र किसी से न करो। इसे भूल जाओ, जैसे तुमने यह सपना कभी नहीं देखा। क्योंकि इस सपने की चर्चा से कुछ न होगा। सूखी नदी सदा सूखी रहेगी और प्यासे सदा प्यासे रहेंगे।"

मुझे अपने अब्बा के कंठ का विषाद और उनके स्वर की निराशा आज तक याद है। शुरू-शुरू में इसका जिक्र मैंने किसी से नहीं किया।

लेकिन जब कुछ दिन बीत गये तो मैंने डरते-डरते अपनी खान के मजदूरों से अपने सपने का जिक्र किया।

परंतु मेरा सपना सुनकर भयभीत होने के बजाय वे हंसने लगे और जब मैंने उनसे पूछा कि इसमें हंसने की क्या बात है तो उन्होंने कहा कि भला इसमें डरने की कौन सी बात है ! यह सपना तो बहुत शुभ है और यहां खान में हर एक देख चुका है।

"क्या सच कहते हो—उसी पानी के पेड़ का सपना ?"

"हां हां, उसी पानी के पेड़ का सपना—सबने देखा है पानी का एक पेड़ हर गांव में, मीठे पानी का चश्मा हर नमक की खान में। घबराओ नहीं, एक दिन यह सपना अवश्य पूरा होगा।"

पहले मुझे उनकी बातों पर विश्वास नहीं हुआ। किंतु अपने साथियों के साथ काम करते करते अब मुझे विश्वास हो चला है कि हमारा सपना अवश्य पूरा होगा। एक दिन हमारे गांव में पानी का पेड़ अवश्य उगेगा, और जो जाम खाली हैं, वे भर जायेंगे, और कपड़े जो मैले हैं, वे धुल जायेंगे, और जो दिल तरसे हुए हैं वे तृप्त हो जायेंगे।

वे तृप्त हो जायेंगे। और सारी धरतियां, सारी सहराएं, सारे वीरान और सारे मरुस्थल पानी से संतृप्त होकर लहलहा उठेंगे।

क्या करूं ?

लगभग साढ़े नौ बजे सरदार मलावहारसिंह की फिल्म प्रोडक्शन नं० 1—चार चले धोखेबाज के पहले दो गानों का रिकार्डिंग लक्ष्मी स्टूडियो में समाप्त हो गया। बेचारे सरदार मदावहार सिंह फिल्म इण्डस्ट्री में नये नये आये थे इसलिए मास्टर अच्छन राव ने और गीत गाने वाली मिस धनाश्री ने और साज बजाने वालों ने अपने-अपने पैसे वहीं स्टूडियो में रिकार्डिंग से पहले ही वसूल कर लिये थे।

रिकार्डिंग समाप्त होने के बाद जब तीनों साज बजाने वाले स्टूडियो से बाहर निकले तो उन्होंने सोचा कि इस अवसर पर सबसे निकट का शराबखाना र रोड पर पड़ेगा। छोटी आँखों और लंबी दाढ़ी वाला सरमुख सिंह तालकिया आगे आगे हो लिया। उसके पीछे वायलिन बजाने वाला डिमलो और बांसुरी बजाने वाला नवाज (जो स्वयं भी इतना दुबला पतला था कि दूर से देखने पर एक बांसुरी नहीं तो बांस की एक खपची अवश्य दिखाई देता था), चल पड़े। ये तीनों पीने वाले थे। और इस समय तीनों ही बुरी तरह प्यासे दिखाई पड़ रहे थे। इस समय उन्हें लक्ष्मी-स्टूडियो से र रोड के शराबखाने तक पैदल जाना भी अखर रहा था। इसलिए इन तीनों ने मास्टर अच्छन राव की पैकार्ड कार को घेर लिया। उसमें उस समय मास्टर जी की प्रेमिका मिस धनाश्री बैठी हुई थी, किंतु शराब का प्रेम औरत के प्रेम से कम नहीं होता। बल्कि पीने वाले तो कहते हैं कि शराब का नशा औरत के नशे से अधिक बढ़िया और गहरा

होता है। खैर, यह एक लंबी बहस है जो सैकड़ों वर्षों से चल रही है और सैकड़ों वर्षों तक चलती रहेगी। तो मिस धनाश्री की पोजीशन का खयाल न करके तीनों ने मास्टर अच्छन राव से प्रार्थना की कि वे ... रोड के शराबखाने पर उतार दें।

"तुम पर साईं बाबा मेहरबान हो, मास्टर!" सरमुखसिंह मीरासिया के-से ढंग में बोला।

मास्टर अच्छन राव ने मुस्कराकर मिस धनाश्री की ओर देखा। सांवले रंग की, प्यारी-सी, नाजुक-सी लड़की आंखें झुकाये एक कोने में दुबकी बैठी थी। उसने मास्टर अच्छनराव की ओर देखा भी नहीं। किंतु मास्टर अच्छनराव को पता था कि इस समय मिस धनाश्री इस गाड़ी में एक क्षण के लिए भी इन लोगों की मौजूदगी को सहन नहीं करेगी। मामला टेढ़ा था। इधर साज बजाने वालों का बार-बार निवेदन, उधर उस मनमोहिनी मूरत का निःशब्द विरोध। आखिर मास्टर अच्छनराव ने एक जोर का कहकहा लगाकर कहा 'बैठ जाओ गाड़ी में दोस्तो! साईं बाबा की दुहाई देकर कहते हो तो मैं कैसे टाल सकता हूं? क्या जानिया?"

यह कहकर मास्टर अच्छनराव ने अपना काले बालों वाला खुरदरा हाथ मिस धनाश्री के कोमल कंधों पर टिका दिया और मोटर स्टार्ट कर दी।

साईं बाबा का नाम सुनते ही धनाश्री अच्छन राव के कंधे से लग गयी। साईं बाबा बंबई का सबसे बड़ा पीर है। वह हिंदुओं, मुसलमानों, ईसाइयों, सिक्खों—सबका पीर है। बंबई जैसी कॉस्मोपालिटन जगह में जहां हर धर्म, जाति और विचार के लोग बसते हैं वहां एक कॉस्मोपॉलिटन टाइप के साधु महात्मा, पीर पैगंबर की भी आवश्यकता है जो 'साईं बाबा' ने पूरी कर दी है। फिल्म इंडस्ट्री के लोग तो विशेष रूप से साईं बाबा के बड़े भक्त हैं। प्रत्येक नयी पिक्चर के मुहूर्त से पहले साईं बाबा के मजार पर चढ़ावा चढ़ाया जाता है। पिक्चर बनने के बीच में फूलों की चादरें भेजी जाती हैं। यदि पिक्चर सफल हो जाये तो यह साईं बाबा की कृपा समझी जाती है, असफल हो जाये तो पिक्चर बनाने वाले की गलती। दोनों अवस्थाओं में साईं बाबा का कोई दोष नहीं। मानव और

देवता मे यही अतर है कि आप मानव को—चाहे वह कितना ही महान क्यो न हो—दोषी ठहरा सकते है, किंतु आप देवी देवताओ पर किसी प्रकार का कोई दोष नही लगा सकते। इसलिए साई बाबा का नाम सुनकर मास्टर अच्छन राव की 'जानिया' मिस घनाश्री चुप होकर रह गया।

र रोड के अड्डे पर अच्छन राव ने गाडी का दरवाजा खोलकर सरमुख सिह, डिमलो और नवाज को उतार दिया। वायलिन बजाने वाला डिमेला, जिसकी ठोडी बात चीत करते हुए भी गरदन के साथ एसा कोण बनाती थी जैसे वह अब भी किसी वायलिन पर टिकी हुई है, मुस्कराकर बोला ' मास्टर, एक गिलास हमारे साथ पीना मागता ?'

' नही, नही डिमेला , अच्छन राव अपनी प्रेयसी की ओर देखकर बोला 'अब रुकूगा तो जानिया नाराज हो जायगी। क्यो, जानिया !'

और यह कहकर अच्छन राव ने एक जोर का कहकहा लगाया।

जब अच्छन राव कहकहा लगाता है तो इसका शरीर इस तरह कापने लगता है जैसे भूचाल आ रहा हो। साधारणतया लोग कहकहे लगाते ही नही और जो लगाते है वे इतना सक्षिप्त-सा लगाते हैं जसे यह कोई कहकहा नही है मेढक है, जिसे उन्होने मुह मे दाब रखा था, जरा मुह खोला और मढक फडाक से बाहर। कुछ लोग एसा कहकहा लगाते हैं, जिसमे आवाज ही नही होती। बस, मुह होठो से तालू तक खुला हुआ है—अदर सास की नलकी तक दिखाई दे रही है किंतु आवाज नही आ रही है। हा, आखो के बार बार खुलने और बद होने से पता लग रहा है कि रोगी पर कहकहे का दौरा पडा हुआ है। कुछ लोग कहकहे मे आवाज तो निकालते है किंतु यह आवाज इतनी पतली इतनी बारीक 'हि हि' किस्म की होती है कि ऐसा लगता है जसे यह आवाज फेफडो मे से नही आतो मे से निकल रही है। किंतु अच्छन राव का कहकहा इस किस्म का कहकहा नही है। उसका कहकहा उसके शरीर की भाति भारी भरकम है। वह जब कहकहा लगाता है तो उसके शरीर की सारी बिल्डिंग हिलने लगती है। एसा मालूम होता है कि कहकहा आतिशबाजी के अनार की भाति उसके सारे शरीर से फूट रहा है। हू-हू हा-हा की गगनभेदी आवाज बढती ही चली जाती है, यहा तक कि दूसरे लोगो को भी बिना कारण ही, उसके

कहकहे म सम्मिलित होना पडता है। अच्छन राव का कहकहा ववडर की भाति आगे आगे बढता ही जाता है।

उस समय यही हुआ। कहकहे के मेंच म सरमुख सिंह, डिमेंलो और नवाज को भी सम्मिलित होना पडा। हसत हसते सरमुख सिंह की दाढी के क्लिप खुल गये, और डिमेलो दोहरा हो गया। जब मिस धनाढ्यी ने जरा क्रोध से कहा, "अब चलो भी", तब मास्टर अच्छन राव ने झट से कह-कहा लगाना बद किया, अपने साथियो से क्षमा मागी और अपनी 'जानिया' को लेकर चला गया।

तीनो साथी र रोड के शराबखाने मे दाखिल हुए। यह शराबखाना एक दो मजिली इमारत म है। निचली मजिल मे 'बार' है और ऊपर की मजिल मे अलग अलग कमरे हैं—जहा जरूरतमदो के लिए मनोरजन के साधन जुटाये जात ह। इस शराबखान का वातावरण बहुत ही घरेलू सा है। वेटर बडे नम्र और समझदार हैं। शक्ल व चाल-ढाल से पेशेवर राजनीतिज्ञ दिखाई देते ह। मेजें न बहुत गदी है न बहुत साफ, और न वे बहुत मूल्य वान है, न बहुत घटिया। यहा हर प्रकार की शराब मिलती है—बढिया से बढिया विलायती शराब और घटिया से घटिया देशी शराब। मजदूर, क्लर्क दुकानदार, फिरम उद्योग मे काम करने वाले बीच के दर्जे के पूजी-पति, इजीनियर, विद्यार्थी—भि न भि न मेजो पर बैठे हुए बातें कर रहे है। वातावरण मे तबाकू और शराब की गध रची हुई है, पकौडिया और कबाबो की गध फली हुई है, मूगफली के 'घी' मे तले जाने वाले अडो की चसाद है और मिली जुली सासो की गध हवा मे तैरती हुई मालूम होती है। दीवारो पर महात्मा गाधी, जवाहरलाल नहरू और साई बाबा के कैलेंडर है। पारसी बार मन की मोटी, लाल नाक पर नीली नसो का जाल उभरा हुआ है। कभी कभी ऊपर की मजिल से कोई जनाना कहकहा तैरता हुआ आता है, तो एसा लगता है जसे एक क्षण के लिए बादलो के गुबार म बिजली चमक गयी। नीचे बार मे सबके कान खडे हो जात हैं। चेहरे उस बिजली की रोशनी से एक क्षण के लिए चमक उठत हैं। कोई सुदर स्वप्न कोई आतरिक तडप, कोई सुप्त भावना मचलकर जाग उठती है।

नवाज, सरमुख सिंह और डिमेलो ने बार में घुसते ही चारों ओर निगाह दौड़ायी। किंतु, कहीं कोई मेज खाली नहीं थी। केवल एक कोने में एक मेज खाली थी जिसके ऊपर फिल्मों की पुरानी विख्यात अभिनेत्री मिस कज्जन का चित्र उलटा लटका हुआ था। तीनों व्यक्ति जल्दी से उस मेज की ओर लपके। उन्हें उधर जाते देखकर बैरा उनके पीछे लपका। वे अभी बैठने भी न पाये थे कि बैरे ने बड़ी नम्रता से कहा, "हुजूर, यह मेज दी जा चुकी है।'

"किसको?' सरमुख सिंह ने दाढ़ी में क्लिप लगाते हुए कहा।

"एक साहब हैं।"

"चार कुर्सियाँ हैं, हम तीन हैं। हमारे बैठने के बाद भी एक कुर्सी खाली रहेगी। वे साहब उस पर बैठ सकते हैं।" नवाज ने तनिक क्रोध में कहा।

' किंतु यह मेज तो दी जा चुकी है, हुजूर!"

डिमेलो ने वायलिन का केस दीवार पर टांगते हुए कहा, "कोई बात नहीं। जब वे साहब आयेंगे, हम उठ जायेंगे। तुम लपककर स्कॉच ह्विस्की के तीन बड़े पैग ले आओ।"

बैरा अब क्या कहता? वह एक क्षण रुका। फिर ह्विस्की लेने चला गया।

तीनों मित्र कुर्सियों पर आराम से बैठ गये। वे अपने चारों ओर के दृश्य का अवलोकन करने लगे। नवाज की निगाह सहसा मिस कज्जन के उलटे लटके हुए चित्र की ओर गयी। वह चिल्लाया, 'अरे, यह किसने मिस कज्जन का चित्र उलटा लटका रखा है?' वह उठा और उसने चित्र को सीधा करके टांग दिया फिर वह परेशान-सा होकर बोला, ' बड़े आश्चर्य की बात है कि यहां हर रोज सैकड़ों आदमी आते हैं और किसी का ध्यान इस बात की ओर

'लो, पियो।

तीन बड़े पैग आ गये थे। डिमेलो नवाज और सरमुख सिंह ने जल्दी से गिलास उठा लिये।

सरमुख के होंठों और आंखों के बीच शायद कोई मार्ग था, इधर

उसने होठो से शराब लगी नही और उधर उसकी आखो म छनकी नही। दूसरे ही घूट म उसकी आखे शराबी हो गयी। बडे मजे म बोला, 'यह शराबखाना है प्यार! यहा थोडी दर म हर चीज उलटी दिखाई दन लगती ह। तुम मिस कज्जन के चित्र को रो रह हो। यहा अपन मित्र भी उलट दिखाई दन लगत हैं।"

ऊपर के किसी कमरे से किसी लडकी की हसन की आवाज आयी। सरमुख एकदम गभीर हो गया, और धीरे स कहन लगा, "वह साला तो अपनी जानिया क साथ चला गया। हम किसके साथ जायें?'

सरमुख के लहजे म घुटन, दुख और निराशा क तीव्र भाव भरे हुए थे। उसन जल्दी स गिलास खाली कर दिया और बैरे का दूसरा पग लान के लिए कहा।

"इतनी जल्दी न चलो,' नवाज न बडे स्नेहपूण लहजे म कहा।

'बहुत अच्छा, मेरे बाप!" सरमुख ने हाथ जोडते हुए और दाढी हिलाते हुए कहा।

इतन म एक दुबला पतला, लबा आदमी हाथ म छाता लिय धीरे धीरे चलता हुआ उस मेज के निकट आया। उसके साथ साथ वही बैरा आ रहा था।

"यह हुजूर की मज है" बैरे न कहा।

सरमुख सिंह और नवाज खडे हो गय। डिमैला भी खडा होना चाहता था कि इतन म नवागतुक न बडे मीठे और धीमे स्वर मे कहा, 'नही, आप अपना गिलास पूरा पी लीजिए। तब तक मै यहा कोन म खडा रहता हू।'

नवाज न उस व्यक्ति को सर स पाव तक देखा। सर पर गोल टोपी, गहरे रग का बद गले का कोट उसकी सफेद पतलून जिसक पायचे टखनो स ऊपर थे, जूते काले और मले, चेहरे पर मूछें भी काली और मैली सी जिनके कोने गिरे हुए थे। आखें भी बहुत मैली और काली थी जिनम अस्थिरता नाचती हुई दिखाई पडती थी और व कभी किसी एक जगह न ठहरती। वह बार-बार अपने खुश्क होठो पर अपनी जीभ फेर रहा था। उसका माथा तग और घुटा हुआ था और उस पर गहरी चिंता के कारण बल पड

गये थे। नवाज था वह आदमी बीमार लगा। उसने खाली कुर्सी की संकेत करके कहा, 'आप खड़े क्या है? यहां बैठ जाइए न। हमारे साथी ने दूसरा पैग मंगवा लिया है। अगर कोई हर्ज न हो तो हम भी—और वह भी अगर आप इजाजत दें तो—हम भी दूसरा पैग मंगवा लें। आप क्या पीयेंगे?

कोई हर्ज नहीं' उस आदमी ने टोपी उतारकर मेज पर रखी छाते को कोने में टिकाया और स्वयं कुर्सी पर बैठकर कहने लगा, 'मेरे बैरे को मालूम है मैं क्या पीता हूं। दो कुत्ता वाली रम।'

दो कुत्ता वाली रम बार में सबसे घटिया मानी जाती थी। बैरे ने उसकी बोतल सामने लाकर रखी और नवागन्तुक ने पहला पैग पी लिया। फिर उसने दूसरा पैग पीया। फिर वह तीसरा पीना चाहता था कि नवाज ने कहा तो इस हिसाब से तो आप रम की शायद तीन बोतलें पी जायेंगे।

तीसरा पैग पीकर आगंतुक ने कहा "नहीं, मैं तो बस एक बोतल रोज पीता हूं। हां किसी किसी दिन जब मन पर बोझ ज्यादा होता है तो डेढ़ पी लेता हूं। और कभी कभी दो भी पी लेता हूं।

चौथा पैग उडेलते हुए आगंतुक की निगाह दीवार पर पड़ गयी। वह उसी क्षण क्रोध में भरकर खड़ा हो गया और चिल्लाकर बोला, 'यह चित्र किसने उलटा लटकाया है?"

सरमुख ने चकित होकर कहा 'उलटा नहीं सीधा लटकाया है। मैंने सीधा किया है। पहले यह उलटा लटक रहा था।

आगंतुक अपनी कुर्सी को ढकेलकर दीवार के निकट गया और उसने मिस कज्जन के सीधे चित्र को फिर उलटा करके लटका दिया, और कहने लगा, "यूं नहीं, यूं सीधा है।'

इस पर सरमुख को बहुत क्रोध आया। उसने उठकर मिस कज्जन के चित्र को फिर सीधा लटका दिया। आगंतुक फिर उसे उलटा करने जा रहा था कि सरमुख सिंह ने गरजकर कहा, 'यदि चित्र को उलटा किया तो जान से मार दूंगा।'

आगंतुक कांपने लगा।

डिमलो ने सरमुख से कहा, "तुम गामखा क्यो झगडता है ? यह टेबल इसका है, यह छाता इसका है, यह टापी इसका है, यह सामने का दीवार इसका है, यह इस पर मिस कज्जन का फोटो रखेगा, अपने वाप का रखेगा, उलटा रखेगा, सीधा रखेगा। अम को क्या है ? तुम सरमुख-सिह क्या झगडा करता है ?"

"नही, हम औरत का अपमान नही सहन करगा। हम इस चित्र को सीधा रखेगा।" सरमुख सिंह ने मेज पर घूसा मारकर कहा।

'हम उलटा रखेगा,' आगतुक न बहुत नरमी स कहा।

"हम सीधा रखेगा।'

"हम उलटा 'आगतुक न अपना वाक्य पूरा नही किया। उसने जल्दी-जल्दी स अपन गिलास म दो पैग एक-दूसर क बाद उडेल और पी गया। फिर वह मेज पर आग झुककर बाला, सुनो, हम तुम्हे एक बात बताते हैं। इसके बाद तुम अपने-आप निर्णय कर लेना कि इस चित्र का यहा उलटा लटकाना चाहिए या सीधा।'

उसने जाम का अपने हाथ से घुमाया। उसकी आखें स्वप्नमय हो गयी। धुध चारो ओर गहरी हो गयी।

'आज से आठ वर्ष पहल की बात है, आगतुक न अपनी कहानी शुरू करते हुए कहा, 'मैं शोलापुर म छगनभाई की मिल म फोरमन था। वेतन ठीक था, मालिक भी ठीक थ। मैं किसी हडताल वडताल क झगडे म नही पडता था, इसलिए बडे मजे मे कट रही थी। न किसी का लना, न किसी का दना, बस, अपने काम स काम। दुनिया जाय चूल्हे म, अपन को क्या ?

"मेरा एक छोटा सा घर था जिसे मेरी प्यारी प्यारी धर्मपत्नी सदा दुल्हन की भाति सजाये रखती थी। मेरी पत्नी बहुत अच्छी थी, बहुत रूपवती, बहुत गुणवती, सुघड और समझदार। जब देखो साफ-सुथरे कपडे पहने एक गुडिया सी दिखाई देती थी। हमारा घर बहुत छोटा था, बस, एक कमरा था जिसके एक कोने मे नल था, किंतु मेरी पत्नी ने उस एक

कमरे को इस तरह सजा रखा था कि यदि तुम देखते तो चकित रह जाते। कभी कभी जब मगनलाल हमारे यहा आता "

मगनलाल कौन था ?" नवाज ने पूछा।

मेरा मित्र है। मंडी में दलाल है।"

' तुम्हारी उसकी मित्रता कैसे हुई ?"

' एक बार मुझे अपनी धर्मपत्नी की बीमारी के सिलसिले म चार सौ रुपय का आवश्यकता पड गयी थी। उस समय मुझे मगनलाल द्वारा हुडी पर रुपया मिला था। तब से हमारी जान-पहचान शुरू हुई थी। बाद म यह जान-पहचान मित्रता म बदल गयी। किंतु यह बहुत बाद की बात है। जिस समय की बात मैं सुना रहा ▪ उन दिनो तो साधारण जान-पहचान ही थी। फिर मगनलाल कभी-कभी हमारे घर आया करता था। वह जब भी आता, मेरी पत्नी के सुघडपन का देखकर चकित रह जाता। कहता, इस घर की सजावट को देखकर एसा लगता है जैसे तुम दोनो का आज ही विवाह हुआ हो। और सचमुच मैं और मेरी पत्नी एक दूसर से एसा ही प्रेम करते थे जसे हमारे विवाह को कुछ घटा स अधिक का समय नहीं हुआ।'

इतना कहकर वह महाशय चुप हो गये और कुछ सोचने लगे। कुछ क्षणो के बाद उन्होने बोतल म से रम गिलास म उडेली और गिलास को अपने दोनो हाथो म घुमाने लगे। फिर वह गिलास को अपने माथे के सामने लाया। उसके माथे के बल और गहरे हो गये।

' फिर क्या हुआ ? ' डिमलो ने पूछा।

' ठहरो," वह बोला, "वे मेरे जीवन के सबसे बढिया दिन थे। उन दिनो की याद में मैं हर रोज एक जाम पीता हू। आज तुम भी पियो।"

उसने अपना गिलास बढाया उसके तीनो साथियो ने उसके गिलास से अपने गिलास टकराये और पी गये। उस महाशय ने अपने होठो पर जीभ फेरकर कहा, ' उसके बाद—आज से पाच वर्ष पहले—तुम्हे याद होगा कि बबई पूना और अहमदाबाद म कितनी जोर की प्लेग फैली थी "

हा-हा, याद है ' डिमलो ने उदास होकर कहा, "मेरा बडा भाई उसी प्लेग मे मरा था।'

उमी प्लग का जिक्र है। यह प्लेग शोलापुर मे भी फली। शहर खाली होने लगा। हमारे वाला कारखाना बद हो गया। सडको पर व गली कूचा म लाशे पडी दिखाई दन लगी। मेरी पत्नी मारे डर के घर स बाहर न निकलती थी, किंतु मुझे तो सौदा लेने और इधर उधर का काम करने के लिए घर से बाहर जाना पडता था। हा, अपनी प्यारी पत्नी का घर से निकलना मैंने बद कर दिया था, क्योंकि यह छूत की बीमारी होती है, और कौन जाने क्या हो जाय और मुझे मेरी पत्नी बहुत प्रिय थी।

"एक दिन मुझे रात क समय हल्का सा बुखार हुआ। कधे म दद होने लगा। फिर गिल्टी निकल आयी। मैं बुखार म फुकने लगा। मेरी पत्नी मेरी ओर फटी फटी आखो से देखने लगी। मैंने उसे तसल्ली देते हुए कहा, 'घबराने की कोई बात नही है। दौडकर किसी डाक्टर को बुला लाओ।'

'किंतु श्रीमती जी मेरी ओर उमी तरह फटी आखा से देखती रही।

" मैंने तनिक क्रोध से कहा, 'क्या देख रही हो ? जल्दी से नुक्कड वाले डाक्टर कामथ का बुला लाओ। न आये तो नकद फीस साथ लेती जाओ।' "

मेरी पत्नी ने अपना ट्रक खोला, जिसम वह नकदी रखती थी। देर तक वह सदूक म उथल पुथल करती रही। मुझे यह दरी बहुत बुरी लगी। मैंने कहा, 'क्या कर रही हो ? यहा प्राण सकट मे है और तुम सदूक खोले बैठी हो।'

'क्या करू ? बाहर जाना है तो इन्ही कपडो मे कस जा सकती हू ?'

"मेरी पत्नी ने कपडे बदले। थोडी देर तक और सदूक को उथल-पुथल किया और फिर जल्दी से बाहर निकल गयी। जाते जाते उससे मैंने कहा 'बहुत जल्दी से डाक्टर को लेकर आओ।' "

आध घटा बीत गया, किंतु मेरी पत्नी डाक्टर को लेकर न आयी। उन दिनो डाक्टर भी बडे सकट मे फसे हुए थे। कहा-कहा जाते ? किस-किस को सभालते। न जाने डाक्टर कामथ इस समय कहा होगा ? मैंने

अपने आपसे पूछा।

एक घंटा और बीत गया। मैं बेहोश होने लगा। फिर मुझे पता नहीं क्या हुआ। मैं बेहोश हो गया। जब होश में आया तो देखा कि कमरे में लैम्प जल रहा है और मेरी आँखों के सामने दो चेहरे धुंधले में दिखाई दे रहे हैं। मैंने बहुत कमजोर आवाज में कहा, 'मुझे थोड़ा पानी दो।'

डाक्टर ने मुझे पानी पिलाया।

मगनलाल ने डाक्टर के कान में कुछ कहा। किंतु मैंने नहीं सुना कि उसने क्या कहा, क्योंकि उस समय मेरे कान में भयंकर शोर हो रहा था, बहुत से चूहे हंस रहे थे, लंबे लंबे दांतों वाले राक्षस अट्टहास कर रहे थे। आग की लपटें अपनी लंबी लंबी जीभें निकाले मेरे शरीर को चाट रही थीं। एक चीत्कार के साथ मैं बेहोश हो गया।

'मुझे पता नहीं, मैं कितने दिन बेहोश रहा—कितने दिन इसी तरह मृत्यु और जीवन के बीच लटकता रहा। आखिर जीवन की विजय हुई। मृत्यु की विजय होती तो भी शायद मुझे दुख न होता। और भी तो हजारों लोग थे—जो प्लेग में मर गये थे और रोज मर रहे थे। मैं भी मर जाता तो क्या बुरा होता। खैर मैं बच गया। मगनलाल की दिन रात की सेवा-शुश्रूषा, अनथक परिश्रम, और उसके स्नेह की प्रबल शक्ति ने मेरा जीवन बचा लिया। जिस तरह उसने अपने प्राणों की परवाह न करते हुए मेरे लिए दिन रात एक कर दिये उस तरह शायद कोई माँ भी अपने बेटे के लिए न कर सके। मैं चकित हूं। संसार में ऐसी भी महान आत्माएं हैं—मनुष्य नहीं, देवता। मगनलाल ने सात आठ दिन तक एक पलक न झपकायी।'

'और तुम्हारी पत्नी?' हिमलो ने पूछा।

'वह तो पहले ही दिन भाग गयी थी—संदूक में से रुपया और जेवर लेकर।'

"वह तो डाक्टर को बुलाने गया थी न?'

हां किंतु वह फिर वापस न आया।"

वह ध्यानपूर्वक अपने गिलास को देखने लगा।

थोडी देर सन्नाटा रहा। उस सन्नाटे मे दूसरी मेजो पर बैठे हुए लोगो की आवाजें बहुत विलक्षण और किसी दूसरी दुनिया से आती हुई मालूम हो रही थी। डिमेला को ऐसा लग रहा था जैसे य आवाजे इस दुनिया की नही है। वे वही शोलापुर म बैठे है, एक छोटा सा कमरा ह, एक स्त्री चार दृष्टि से अपने बीमार पति को ताकती हुई अपनी साडी मे जेवर अटकाती हुई भाग रही है, अपनी आप बीती सुनाने वाला प्लेग से कराह रहा है, बाहर एक चिता जल रही है, दिल के अदर भी एक चिता जल रही है, रम पानी नही है, अलकोहल है—यह आग बुझाती नही, लगाती है।

उस व्यक्ति न अपना पैग खाली करके कहा, "फिर प्लग दब गयी। मैन शोलापुर छोड दिया और यहा बबई म आकर काहनूर मिल म नौकरी कर ली। मेर साथ मेरा मित्र मगनलाल भी आ गया। हम दोना साथ रहने लग। और यह एक बिलकुल सीधी-सी बात थी कि वह मेरे साथ रहे, क्योकि ससार म मेरे सिवाय उसका और कोई नही था। और फिर उसन मेर प्राण बचाये थे, तो क्या मैं उसका इतना सा उपकार भी न मानता?

"अब वह परल म मेर घर म रहता है। मेरा घर उसी शोलापुर वाल घर की तरह है। अब वह फिर उसी तरह सज गया है, बन सवर गया है। मेरे घर मे फिर एक पत्नी है—रूपवती, गुणवती, सुघड, पहली पत्नी स भी अच्छी। जब मैं उसे शादी करक लाया था तो सारी बिल्डिंग चौक गी हो गयी थी—जैस किसी की आखें आश्चय स फटी की फटी रह जायें। एसी सुदर थी मेरी पत्नी। मगनलाल को भी मेरी पत्नी बहुत पसद आयी। फिर धीर धीर मेरी पत्नी को भी मगनलाल पसद आने लगा। धीरे धीर मैं उन दोना की आखो को परखने लगा। धीर धीर मैं उन दोना के हृदय टटोलन लगा। धीर धीर मैं उन दोना की अगुलियो की थरथराहट से परिचित होता गया। जब उनकी आखें मिलती, या जब वे मेर पीछे कभी चोरी से मिलत और मैं सहसा आ निकलता तो उन दोनो को ऐसा मालूम होता वे सन्नाट म चुप-से रह जात—तुम जानन हो न, प्रेम जब निस्तब्ध होता है तो कितना स्पष्ट होता है, इसकी चुप्पी म कितनी प्रबल अभिव्यक्ति होती है। मुझे ऐसा लगन लगा जस मैं अपन ही घर म अजनबी

हू। उनकी व्याकुल आखें, उडती उडती, रुकती रुकती भावनाए—तुम जानते हो न ? और तुम नही जानते तो मैं तो जानता हू—क्योंकि जिस आदमी ने प्रेम को एक बार देखा है वह उसे सदा पहचान सकता है।"

उसने कांपते हुए हाथो से एक पैग और उडेला।

'धीरे धीरे मैं कमरे के बाहर बाल्कनी म सोने लगा और व दोनों कमरे के अदर सोने लगे। धीरे धीरे मुझे मालूम हुआ कि जब मैं मिल से लौटकर अपने कमरे म आता हू। तो सारी बिल्डिंग चौकन्नी होकर मुझे देखने लगती है—जैसे मैं एक साधारण मनुष्य नहीं वरन कोई विलक्षण-सा पशु हू। जब मैं घर से बाहर निकलता हू तब भी इसी तरह, एक विलक्षण सी भावना के साथ लोग मुझे घूरते है। कभी कभी जब रात की शिफ्टें होती है और मिल म काम अधिक होता है और मिल क मालिक मुझे बुला लेते है तो मैं बिल्डिंग की सीढियो पर लोगो को खुसर पुसर करते देखता हू। मै उनकी बातें सुन नही पाता, किंतु अच्छी तरह समझ सकता हू कि वे क्या कह रहे है। व भी समझ रहे है कि जा रहा है कबख्त, अपनी बीवी का भडवा जा रहा है, कमजोर निकम्मा, भीरु, कायर, नामर्द जा रहा है, आज रात के शिफ्ट मे जा रहा है और आज रात इसकी पत्नी और इसके मित्र के ठाठ है। और फिर कोई सीढियो के ऊपर से हस देता है और मैं जल्दी जल्दी सीढियां उतरकर बिल्डिंग स बाहर निकल जाता हू और फिर काम समाप्त होने पर यहा आता हू—सीधा इस शराब खाने मे आता हू। यह मेज मेरे लिए सदा रिजर्व रहती है, यह मेज, यह दो कुत्तो वाली रम की बोतल। पाच बरस से मैं यहा आ रहा हू—बराबर रोज आ रहा हू, मैं अभी तक यह निश्चय नहीं कर सका कि किसका गला घोटू—अपनी पत्नी का, जिसे मैं प्यार करता हू, या अपने मित्र का, जिसने मेरे प्राण बचाये थे ? अपनी पत्नी का या अपने मित्र का ? अपने मित्र का या अपनी पत्नी का ?"

उसकी आवाज ऊंची होती गयी। उसके मुह से झाग निकलने लगे। उसने इतने जोर से गिलास को अपनी हथेलियो स दबाया कि गिलास हाथो म ही चकनाचूर हो गया और उसके हाथों से खून बहने लगा।

खून उसके हाथो से बह-बहकर संगमरमर की मेज पर गिर रहा

था। संगमरमर के टुकड़े में एक लंबी-सी दराज थी। खून उस दराज में घुसकर लोप होता जा रहा था। वह आदमी इस तरह उस बहते हुए खून को देख रहा था जैसे यह उसका खून न हो, किसी दूसरे का खून हो। थोड़ी देर के बाद वह उठा और नल से हाथ धोकर और रूमाल बांधकर वापस आ गया। वापस आकर उसने टोपी सर पर रखी, छतरी उठायी, दीवार पर लटके हुए मिस कज्जन के चित्र को उलटा कर दिया, फिर उसने उन तीनों को झुककर सलाम किया और शराबखाने से बाहर निकल गया।

अमरीका से आने वाला हिंदुस्तानी

एक दिन की बात है।

मैं चच गेट स्टेशन से निकलकर, रिटज होटल की ओर सिर झुकाये चला जा रहा था कि एकाएक किसी ने मेरे निकट आकर जोर से कहा, "हाइ किड।

मैं धरती से दो फीट ऊपर उछल गया। उछलने के बाद जो नीचे गिरा तो मेरे पाव फुटपाथ पर न थे, बल्कि चनेवाले की टोकरी में थे। दूसरे क्षण टोकरी औंधी हो गयी थी, और चने धरती पर बिखर गये थे, और चनेवाला मुझे गालियां दे रहा था। मैं मुडकर देखने भी न पाया था कि इतने जोर से कौन चिल्लाया है कि किसी ने जोर से मेरी पीठ पर हाथ मारा "हाउ सकर।'

अब जो भड़ककर पीछे देखता हूं तो एक नौजवान नीले रंग की शार्क स्किन की पतलून पर गुलाबी रंग का बुश कोट जिस पर हरे रंग के तरबूज बने थे पहने खड़ा था, और मेरी ओर देखकर हंस रहा था। मैं इतना क्रोध में था कि दो चार क्षण तक उसे न पहचान सका। मेरे क्रोध का अनुचित लाभ उठाकर उस नौजवान ने नाक में गुनगुनाकर फिर कहा, 'डोंट यू नो मी? (Don't you know me ?)—जगमोहन कापडिया।" सहसा मैंने उसे पहचान लिया और मेरे मुंह से निकला, "अरे लौंचड़,तुम हो ?

मैं हाथ मिलाने के लिए आगे बढा।

जगमोहन कापडिया, हु! हम सब इसे लौचड कहा करते थे। घर वाले जग या जगजग कहा करते थे। यहा तक कि उसकी पत्नी भी उसे जगजी कहकर पुकारती थी, जो आप समझ जायेंगे कि लौचड से कोई बहुत दूर की चीज नही थी। खैर मैंने अपने क्रोध पर काबू पाते हुए पूछा, "कोई तीन साल से तुम्हे देखा नही, कहा गये थे ?"

"स्टट्स (States) म !"

अमरीका मे आनेवाला आदमी अमरीका को 'स्टटस' कहकर पुकारता है। स्टटस को ये लोग क्या कहते इसके बारे मे कुछ मालूम नही।

'वहा क्या करने गये थे ?"

"होटल म चला वहा सब बनाऊगा। ओल्ड पार्क म ठहरा हुआ हू। हम दोनो ओल्ड पार्क की ओर जाने लगे। इतने म चनेवाले न टोक-कर कहा 'क्या शान है'"

"क्या हुआ भाई ?' मैंने बडी गम्भीरता से चनेवाले की ओर देखते हुए पूछा।

"अरे साहब, आपने मेरी टोकरी तोड दी, मेरे चने गिरा दिये, मेरी कोयला की हडिया लुढका दी। और इस पर पूछते हो कि क्या बात है ?"

लौचड ने अपनी पतलून की जेब की जिप खींची। उसके अदर एक पीले रग का बटुआ था। उसकी जिप खोली। उसमें से पाच रुपये का नोट निकाला और चनेवाले को दे दिया। चनेवाला बडे ध्यान से और बडे अचरज से नोट को उलट पुलटकर देखने लगा कि शायद नोट म भी कोई जिप लगी हो। फिर अच्छी तरह तसल्ली करके उसने नोट को जेब म डाल लिया और जब हम आगे चले गये तो हमारी ओर जोर से कहकहा लगाकर कहने लगा, 'क्या निराली शान है!"

जब होटल के कमरे म पहुचकर हम आराम से बैठ गये तो मुझे अच्छी तरह निरीक्षण करने का अवसर मिला। वह सचमुच पहले से अधिक स्वस्थ हो गया था और मोटा भी। अब वह बातें भी तेज-तेज करता था। इससे पहले जब वह भारत म था, तो सीधे-सादे ढग से हलक या मुह से बातें करता था। परतु अब ऐसा लगता था कि प्रत्येक वाक्य, जो वह बोलता

था, हाथ से निकलकर नाक की नालियों में घुस जाता था और वहां से घूमता हुआ, नथुनों की राह बाहर निकलता था। इससे वाक्य के स्वर में ऐसी गोलाइयां पैदा हो जाती थीं, जो भाषा को एक नया रूप और अक्सर वाक्य को नये अर्थ प्रदान करती थीं। मैं बहुत देर से उसकी बातें, बल्कि उसकी बातों की गोलाइयां सुनता रहा—यह ध्यान दिये बिना कि इन गोलाइयों के अंदर क्या है। इस बीच में मुझे वह घटना याद आ गयी जब जगमोहन और मैं मिंटगुमरी के एक स्कूल में साथ पढ़ा करते थे।

जब जगमोहन एक बड़ी पगड़ी और तहमद बांधे स्कूल में पढ़ने के लिए आया करता था, तो सब लोग उस पर हंसा करते थे। और चंचल बच्चे उसकी ओर उंगली उठा-उठा कहते थे

लांचड दीन
बजाय बीन
तहमद मोटा
पग महीन

उस समय लोग जगमोहन को लाँचड कहा करते थे। इस समय भी मैं उसकी बातें सुनते-सुनते वही गीत जोर-जोर से गुनगुनाने लगा। जगमोहन बात करता-करता चुप हो गया। फिर कुछ क्षणों के बाद शिकायत भरे शब्दों में बोला, 'भई अब तो मुझे लाँचड न कहा करो। अब मैं स्टेट्स होकर आया हूं—ट्रेनिंग लेकर आया हूं।"

काहे की ट्रेनिंग लेकर आये हो?"

तेल निकालने की।"

'किसका तेल निकालने की?'

'काजू का तेल निकालने की ट्रेनिंग।"

'काजू का तेल यहां भी तो निकल सकता है।"

'निकल सकता है किंतु अमरीका में तेल बहुत अच्छी प्रकार निकालना सिखाया जाता है।'

'वाह!'

इसके बाद उसने वार्ता का रुख बदलने के लिए मुझे वे चीजें दिखायीं

जो वह अमरीका से साथ लाया था। जूतो के दस-बारह जोडे थे। उन जूतो म फीता के स्थान पर लोहे की महीन जजीरें, जिन्हे 'जिप' कहते है, लगी हुई थी। जूता पहनकर जजीर खीच लेने से जूता पाव मे स्वय फिट हो जाता है। सामने पतलून मे बटन के स्थान पर जिप लगी हुई थी। कोट की जेबो म जिप लगी हुई थी। कमीजो और स्वेटरो से लेकर जुराबो तक मे जिप लगी हुई थी। फिर उसने मुझे कलेंडर दिखाये, जिनमें हर महीने के नये पन्ने पर एक नयी नगी अमरीकी औरत का चित्र था।

मैने आश्चर्य प्रकट करते हुए पूछा, "भई, इन औरतो की जिप कहा है? ये तो बिलकुल नगी हैं।"

उसने मुस्कराकर कलेडर बद कर दिया और उसके ऊपर एक जिप चढा दी और कहने लगा, "देखो, यह रही। अब बताओ अमरीका शानदार देश है कि नही ?"

सचमुच लौंचड! वहा मोजे से लेकर औरत तक, प्रत्यक वस्तु लोहे की जजीरो म बधी हुई है।"

"श्योर, श्योर" जगमोहन बात न समझते हुए भी सिर हिलाने लगा।

लौंचड हर बात म श्योर श्योर (sure sure) और फाइन फाइन (Fine) कहता था। और जब कोई वस्तु उसे अधिक पसद आ जाती, तो जोर से 'हूकी" (Hookie) कहता।

इसलिए उसकी पतलूनें फाइन थी, और स्वेटर हूकी। उसकी कमीजें फाइन थी, और बुशशर्ट हूकी। उसके जूते फाइन थे और उसकी टाइया हूकी। हूकी के आगे यदि कोई शब्द है तो रेस कोर्स का 'बुकी' है। किंतु कभी-कभी

फिर लौंचड की टाइया बहुत सुदर थी। य दोहरी टाइया थी, अर्थात् सीधी भी पहनी जा सकती थी और उलटी भी। इसके अतिरिक्त उन पर अजीब-अजीब तरह के चित्र बने हुए थे।

कुछ टाइया तो ऐसी थी, जो पुरानी छीटो के कपडो को काटकर तयार की गयी थी। कुछ टाइयो पर पुराने गलीचो का धोखा होता था। कुछ टाइया, ऐसा प्रतीत होता था कि बच्चो ने अपने हाथो से रगी है। कुछ टाइयो की गाठ इतनी मोटी आती थी कि ऐसा लगता था जसे य गधे

की गदन म बाधन क लिए तैयार की गयी है।

लोचड न एक टाइ मुझे दिखायी। उस पर एक ओर पहली बना हुई थी दूसरी ओर शयन कक्ष क भीतर एक स्त्री सा रही थी। मैंन पूछा, "यह क्या है '

वह बाला, 'यह अमरीकी दाशनिकता की टाइ है।"

वह कैस ?

वह बाला, ' तुम बताओ । '

मैंन कहा मैं अमरीकी दाशनिक होता ता बता दता। अब तुमको बताना पडेगा।

वह बाला प्यार प्यार ! दखो यह टाई कहती है, दिन को पहलिया हल करो। रात को किसी क शयन कक्ष म घुस जाओ।"

बहुत खूब, बहुत खूब ! क्या दशन है !" मेरे मुह स एकदम निकला।

और यह टाइ दखो !"

यह भी दाहरी टाइ थी। इसक एक ओर पाइप से धुआ निकल रहा था दूसरी ओर दो ऊची एडी के जूते थे, एक टाई के निचले भाग पर, दूसरा बिलकुल ऊपर—और दानो जूतो की एडियो म दस इच का फासला था।

उसन कहा अनुमान लगाओ, यह क्या है ? '

मैंन साच साचकर कहा, यह टाई कहती है कि तबाकू-नोशी करोग ता पत्नी पीटगी।

हा हा हा ! लाचड हसत हुए बोला ' तुम बिलकुल गोंग-गाजा हो एक दम गोंग गाजा !"

मैंन क्रोध से कहा "और तुम एकदम लौंचड एकदम लोचड !'

वह मेरी पीठ थपकत हुए बोला, "देखो क्रोध मे मत आओ। यह टाई सायकाल क समय पहनी जाती है। जब शराब पीन क लिए बार म जाओ, ता इस पाइपवाली तरफ को सामन कर लो। शराब पीओ और सुदर छोकरियो की चिट्टी टांगो की ओर दखो। और फिर अगर कोई पसद आ जाय तो टाई का रुख बदलकर उसके साथ डास करो, डास।

समझे ? डास अर्थात एक एडी ऊपर, एक एडी नीचे, बीच मे दस इच का अतर—रभा नाच की तरह। हा हा हा !"

इसके बाद उसने बुशकोट उतारकर एक अमरीकी कमीज पहन ली, जिसके कट अवे कालर (cut away collar) एक दूसरे से इतना बडा कोण बनाते हुए अलग हो गये थे कि उनके बीच एक छाड, तीन तीन टाग्या बाधी जा सकती थी। परतु इस समय मेरे मित्र ने केवल वही धुआ निकालने वाले पाइप और ऊची एडी के जूतो वाली टाई पर सतोष किया और चूकि शाम हो चुकी थी बबई मे उस समय तक, शराब बदी न हुई थी इसलिए वह मुझे अपने स्पेशल 'बार' मे ले गया।

वह बोला, 'तुम क्या पियोगे ?"

मैने कहा, 'सिर्फ ह्विस्की पीऊगा, और अगर ज्यादा जोर दोगे तो उसमे थाडा सोडा डाल लूगा।"

वह बाला, "क्या जगली ड्रिक है ! इसे केवल अग्रेज या अध अग्रेज हिंदुस्तानी पीते है। इससे अच्छा तो यह है कि तुम कोका-कोला पियो और च्यूइग गम खाओ।"

"गम तो मैं रोज खाता हू," मैंने उत्तर दिया, "कोई नयी बात बताओ।"

वह बाला, "बाए, ओ बॉए ! आज तुम्हे अमरीकी कॉकटेल पिलाता हू।'

इसके बाद वह अपनी मगरमच्छ की पटी सहलाता हुआ 'बारमैन' के पास चला गया और न जाने क्या अट शट शराबें मिलाने को कहता रहा। आखिर जब वह पद्रह बीस मिनट बाद प्रसन्नता मे हाथो को रगडता हुआ लौटा, तो बेरे ने दो गिलास हमारे सामने लाकर रख दिये, जिनमे भूरे रग का द्रव था, जो शराब के मुकाबले मे काढे के पनाव से अधिक मिलता था और उसमे अदर जैतून का एक बडा टुकडा पडा था।

इस अमरीकी कॉकटेल का मजा कडवा, मीठा करकरा और कसला था। ऐसा लगता था कि यह कॉकटेल होनोलूलू मे जगली झोपडे की सूअर के मांस म सडाकर तैयार की गयी है। मैंने मुह का जायका बदलने के लिए जैतून का टुकडा उठाकर मुह म रख लिया—उफ कितना तेज,

तीखा, खट्टा, सिरके की तरह जीभ को काटने वाला जायका था !

"अरे लौचड, यह कॉकटेल है या तेजाब ?" मैंने झल्लाकर कहा।

मगर लौंचड बड़े मजे से चुसकियां ले-लेकर कॉकटेल पी रहा था और बातें करता जा रहा था। दो-तीन कॉकटेल पीने के बाद उसकी हालत अजीब हो गयी और उसकी आंखें बार रूम की बेलबूटेदार छत पर गड़ गयी और वह अमरीका की स्मृतियों में खो गया।

'हाय, मुझे अमरीका में हॉट डाग्ज (hot dogs—गर्म कुत्ते) याद आते हैं।'

'गर्म कुत्ते क्या होते हैं ? अजीब सा नाम है।" मैंने पूछा।

वह बोला, "अमरीका में गर्म कुत्ते एक प्रकार के कबाब को कहते हैं।"

"और गर्म कुत्तों को अमरीका में क्या कहते हैं ?"

उसने मुझे घूरकर देखा और फिर निगाहें फेरकर छत पर गाड़ दी।

'हाय मुझे हेम बर्गर (Hame bargar) याद आता है।

'यह क्या बला है ?" मैं पूछे बिना रह न सका।

लौंचड व्याख्या करने लगा। दस मिनट की लंबी व्याख्या के बाद पता चला कि हेम बर्गर में तली हुई मछलियां बेची जाती हैं।

मैंने जल भुनकर कहा, 'साले, तो इसके लिए अमरीका जाने की क्या जरूरत थी ? यहां हर घर में हेम बर्गर है।"

वह बोला, 'हाय, वह बेस बाल' !"

'यह क्या होता है ?'

बीस मिनट की व्याख्या के बाद पता चला कि अमरीकी बेस बाल वही था, जिसे हम बचपन में मक्कड़-डाडा के नाम से खेलते थे। हिमालय की गोद में और अमरीका से बहुत दूर आज से हजारों साल पहले से हमारे पुरखे इस खेल को खेलते आये हैं—बेस बाल, हूंह !

'और नीकिंग पार्टी (neeking party) !"

यह क्या ?

लौंचड की आंखें अध मुंदी हो गयी। वह बोला, नीकिंग पार्टियों का पहला नियम यह होता है कि कोई पति अपनी पत्नी के पास नहीं

जायगा और पत्नी सदा दूसरे के पहलू में बैठेगी—आह वॉय, आह वॉय, मुझे सनसनाटी की वह पार्टी याद आती है।"

वह स्मृतियों में खो गया।

गर्म कुत्ते, गर्म औरतें, खाली बोतलें और खाली दिमाग़।

सहसा मुझे मितली-सी होने लगी।

मैंने कहा, "तुमने अमरीका में और कुछ नहीं देखा ?"

वह बोला, "क्या ?"

"हावर्ड फास्ट को देखा ?"

"कौन ?"

'पाल राबसन को देखा ? वाल्ट ह्विटमन की कविताएं पढ़ीं ? बच्चों को स्कूल जाते हुए देखा ?'

जगमोहन ने कहा, 'मैं स्टेटस में इन निरर्थक बातों के लिए नहीं गया था।"

मेरा क्रोध बढ़ता जा रहा था। मैंने लाचड की टाई पकड़ ली और कहा, "तुम अमरीका से यह टाई लाये हो जिसकी एक ओर जूएबाजी है और दूसरी ओर विलासिता का नंगा नाच, एक ओर शराबखोरी है, दूसरी ओर वेश्यावृत्ति एक ओर ट्रूमन है दूसरी ओर एटमबम। परंतु यह तुम्हारा अमरीका है। मेरा अमरीका ऐसी टाई नहीं। मेरा अमरीका तो ऐसी टाई है, जिसके एक ओर अब्राहम लिंकन है तो दूसरी ओर श्रम करने वाला हब्शी, एक ओर वाल्ट ह्विटमैन है तो दूसरी ओर अमरीकी मल्लाह। एक ओर पुत्र से प्रेम करने वाला पिता है तो दूसरी ओर पति की पुजारिन पत्नी, एक ओर पैंकलिन की शूरवीरता है तो दूसरी ओर शांति की कामना। इस टाई को मैं गले में बांधता हूं और इसको सौ बार चूमता हूं।

उसने अपनी टाई छुड़ाते हुए कहा, "तुम सदा में वैसे के वैसे राजनीतिक बुद्धू रहे।'

फिर उसने मेरी ओर से दृष्टि फेरकर छत पर गाड़ ली और बड़े हसरत भरे लहजे में बोला, "हाय, इस देश में कितनी घुटन है! काश, मैं फिर अमरीका जा सकता!'

"काश, तुम जा सकते !" मैंने भरपूर सहानुभूति और घृणा से कहा।

"परंतु अबके कौन सी ट्रेनिंग लूं" —मेरी घृणा को न समझकर बड़े उतावलेपन से उसने कहा, "स्कालरशिप तो मैं किसी न किसी तरह प्राप्त कर लूंगा।"

अबके तुम इमानी खोपड़िया का तेल निकालने की ट्रेनिंग लेना। इसके लिए तुम्हें स्कालरशिप भी आसानी से मिल जायेगी। और अमरीका के शासक वर्ग ने इसके लिए सुविधाएं भी बहुत जुटा रखी हैं।"

इतना कहकर मैं उठा और बाहर चला आया। लौंचड़ कुछ क्षण हक्का बक्का मेरी ओर देखता रहा। फिर उसे एक पुर्तगाली लड़की नजर आयी जो अपनी सीट पर बैठी बैंड की गति पर ताल दिए जा रही थी। उसकी टांगें बड़ी सुंदर थीं।

लौंचड़ ने बड़े जोर से कहा, "हुर्रे!"—और अपनी टाई का रुख बदलने में व्यस्त हो गया।

सौ रुपये

मैंने सौ रुपये का काम किया था, मुझे सौ रुपये मिलने चाहिए, इसलिए मैंने सेठ से बात की।

सेठ ने कहा, "सोलह तारीख को आना।"

मैं सोलह तारीख को गया।

सेठ वहां नहीं था। उसका बूढ़ा मनेजर, जिसकी चांद साफ थी और जिसका एक दांत बाहर निकला हुआ था और जो अपने असिस्टेंट को किसी गलती पर डांट रहा था, मुझसे बड़ी नम्रता से पेश आया, "तुमने सौ रुपये का काम किया है, तुमको बराबर सौ रुपये मिलेंगे। किंतु आज सेठ यहां नहीं है कल आना।

मैंने पूछा 'यदि कल भी सेठ यहां नहीं हुआ तो?"

मैनेजर बोला ' तो मैं प्रबंध कर दूंगा, तुम चिंता न करो। तुम्हारा पैसा तुमको मिल जायगा।"

मैंने दफ्तर से बाहर निकलकर, दो पैसे का पूना पत्ता सकेली मसाला और हरी पत्ती वाला पान खाया। दो पैसे में देसी कालर काडी और ठडक वाला पान भी खा सकता था और मुलैठी लाल मसाले वाला पान भी और बनारसी छोटा पत्ता, गोली, डली और इलायची वाला पान या मोहनी तबाकू वाला। किंतु मैंने केवल पूना पत्ता सकेली मसाला और हरी पत्ती वाला पान ही खाया, क्योंकि मुझे भूख बहुत लग रही थी। मेरी जेब में केवल डेढ़-दो आने थे, और यह पान जो मैंने खाया, काफी मोटा

होता है और देर तक मुह मे रहता है।

और फिर मैंने एक आने का ट्राम का टिकट लिया और ट्राम मे बैठकर मैंने जोर से सेठ की बिल्डिंग की ओर थूक दिया।

दूसरे दिन फिर सेठ वहा नही था। उसके मैनेजर ने कहा, "सेठ आज भी यहा नही है। और फिर तुम्हारे हिसाब मे कुछ गडबड भी है।"

मुझे क्रोध आ गया। मैं हिसाब दे चुका था। मैनेजर उसे दस बार चेक कर चुका था। फिर भी कही से गलती निकल आती है। परतु मैं कुछ कह न सका, क्योंकि मैनेजर का स्वर बहुत ही कोमल था, और उसका प्रत्येक शब्द रेशम मे लिपटा हुआ था। इसलिए मैंने भी नम्रता-पूर्वक कहा मेरा हिसाब तो बहुत साफ है।

इतना कहकर मैंने अपनी खाकी पतलून की जेब से एक मैला-सा कागज का टुकडा निकाला और मैनेजर के साथ ग्यारहवी बार हिसाब चेक कराने बैठ गया। इतने पैसे रेगमाल फेरने के, इतने पम रोगन के, इतने पैसे मजदूरी के। रेगमाल और रोगन की रसीदे मेरे पास थी। मजदूरी पहले से तय हो चुकी थी। सेठ का फर्नीचर मेरी मेहनत से जगमग-जगमग कर रहा था।

मैनेजर ने कहा, हा हिसाब ठीक है। अच्छा, कल आना।'

किंतु कल अवश्य मैंने तनिक जोर देकर कहा।

हा कल अवश्य ' मैनेजर ने चदिया को सहलाते हुए कहा। बाहर आकर मैंने दो पैसे का पान भी नही खाया। एक आने का ट्राम का टिकट भी नही लिया। फीरोजशाह मेहता रोड से साइन तक पैदल गया।

किंतु दूसरे दिन मैं फिर सेठ के दफ्तर गया। आज भी दफ्तर मे सेठ उपस्थित न था। मैनेजर भी गायब था। मैनेजर का असिस्टेंट अपनी चुधियाई हुई आखो से एक सिगरेट चाय अपने सामने रखे कुछ सोच रहा था। उसका मुख अत्यत पीला था मस्तक के निकट सफेद गालो के निकट पाला और ठोडी के पास मटियाला-सा था। ऐसा प्रतीत होता था, जैसे किसी ने उसके मुख की हड्डियो के ऊपर खाल की बजाय मैल-मैले पील-पीले कागज काटकर मढ दिए हो। मैं उसके मुख को ध्यान से देखने लगा।

असिस्टट न प्याली से दष्टि उठाकर मेरी ओर देखा, और हाथ के सकेत म मुझे कुर्सी पर बैठन को कहा।

मैंन पूछा, "सठ जी कहा हैं?"

वह बोला, "सेठ अपन दूसरे दफ्तर म गया है।"

"और मनजर कहा है?"

"मैनजर सठ के तीसरे दफ्तर म गया है।"

"तो मुझे यहा बोगी मजिल म किसलिए बुलाया है।" मैंन जरा क्रोध म तज होते हुए कहा।

असिस्टट ने चाय का अतिम कडवा घूट भी निगल लिया। धीरे स बोला, "तुम यहा बठ जाओ, मनेजर अभी आता होगा। उससे बात कर लेना।"

मैं एक कुर्सी पर साढे दस बजे स लेकर पौन दो बजे तक बठा रहा।

पहल मैंन सोचा कि एक शीशे का टुकडा लेकर इस सार रोगन को उतार दू, जो मैंन इतनी मेहनत से फर्नीचर पर चढाया था। फिर मैंन सोचा कि अपन दोनो हाथो स असिस्टट क नकली चहरे स पीले-पाल कागज के टुकडो को उतार दू, ताकि भीतर की हड्डी नगी हो जाय। फिर मैंन सोचा कि मनजर को जान से मार दना अच्छा होगा। बहुत देर तक सठ के लिए दड सोचता रहा। अत म विचार आया कि इसक समस्त शरीर पर जो नबर मोटा रगमाल रगड दू तो उसकी समस्त खाल उधड जायेगी। इतन म मनजर आ गया। मुस्कराते हुए बोला, 'तुम्हारा काम हो गया है किंतु चक मिला है—सौ रुपय का। परतु अब पौन दो बज चुक है, दो बजे बक बद हो जाता है, और बैंक यहा स दो मील दूर है। कल छुट्टी है, और परसो इतवार है।"

मैंन निराश होकर कहा, 'हाय!'

"हा'—मैनजर प्रसन्नता से हाथ मलता हुआ बोला।

मैंन रुखाई स कहा, 'चक मुझे द दो।'

पाच मिनट और चक लेन म बीत गये, क्योकि चेक पर मेरा नाम गलत लिखा हुआ था। मुहम्मद शेख के स्थान पर मुहम्मद रफीक लिखा हुआ था।

"हाय हाय", मैनेजर ने कहा, "बडी गलती हो गयी। मुहम्मद शव लिखते लिखते मुहम्मद रफीक लिख गया। किंतु कोई बात नही। अब तुम सोमवार को आकर नया चेक ले जाना।"

मैंने कहा, किंतु यह तो बेयरर चेक है, नाम की गलती से कोई अंतर नही पडता। तुम मेरे नाम की रसीद ले लो और मुझे चेक दे दो। सोमवार को मे कहा आऊगा, कही और धधा करूगा।"

"अच्छा तो ले जाओ"—मैनेजर ने रुक्ते रुक्ते कहा।

चेक लेकर बाहर आया तो दो बजने म पौने नौ मिनट थे। किसी प्रकार भी मैं पैदल चलकर बैंक नही पहुच सकता था, सौ रुपये का चेक मेरे हाथ म था। किंतु अभी कागज का टुकडा था। उसे सौ रुपये म परिवर्तित करने के लिए बैंक तक पहुचना आवश्यक था—दो बजने से पहल केवल एक बात हो सकती थी।

मैंने निणय कर लिया और चिल्लाकर कहा, "ए टैक्सी!"

पीली छत और काले शरीर वाली टक्सी मेरे सामने आकर रुक गयी।

मने भीतर बठते हुए कहा कालबादेवी रोड के नाके पर चलो। और जरा तेज चलाओ!"

जब कालबादवी के नाके पर पहुचा तो दो बजने म दो मिनट थे। परन्तु बैंक कालबादवी रोड पर नही था। यद्यपि चेक पर यही लिखा हुआ था किंतु बैंक कालवादेवी रोड के नाके पर दिखाई न दिया। दो एक दुकानदारो से पूछा किसी को इतना अवकाश न था। कोरिया मे जग तेज थी। भाव भी ऊचे जा रहे थे। किसी को गरीब कारनिम करने वाल के सौ रुपया की चिंता न थी।

हारकर मैं एक पजाबी सिख हारमोनियम वाले की दुकान म घुस गया।

आइए आइए क्या बाजा चाहिए आपको?" सरदार ने अपनी उस आरी को छोड़कर जिससे वह लकडी काट रहा था, मुझस मुस्कराकर पूछा।

मैंने कहा, "सरदार जी, मुझे बाजा नही चाहिए—मरकनटाइल बैंक का पता चाहिए। चेक पर लिखा है कालबा दवी रोड, और यहा कही

मिलता नही।"

सरदार जी ने मुस्कराकर कहा, "बादशाहो, वह बैंक तो साथ वाली गली मे है। इधर घूम के सट्टा बाजार के उस ओर, पुराने चादी वाले मदिर के पास।"

मैंने सरदार जी का धन्यवाद किया। भागा वापस टैक्सी के पास। जब बैंक पहुचा तो दो बजकर दो मिनट थे। नियम तो यह था कि मेरा चेक क्लर्क को नही लेना चाहिए था। किंतु शायद क्लर्क चेक पढने के अतिरिक्त चेहरा भी पढना जानता था। उसने चुपचाप चेक मेरे हाथ से ले लिया। फिर उल्टा करके देखा। मुस्कराकर कहने लगा, "इस पर दस्तखत कर दो।"

मेरा नाम मुहम्मद शेख था, किंतु मैंने मुहम्मद रफीक लिखा। यह मुहम्मद रफीक कौन था यहा कहा से आया था, कब जन्म हुआ था उसका, उसकी सूरत कैसी थी, उसके माता पिता कौन थे—कौन जानता है। कुछ जिंदगिया एसी होती है जिनका नाम चेक पर ही लिखा जाता है और चेक पर ही काट दिया जाता है।

मैं टक्सी वाले का बिल चुकता करने लगा। दो रुपये दो आने—टैक्सी छोटी थी इसलिए मीटर बढा नही। टैक्सी बडी होती तो पाच-सात रुपये खुल जाते। मैंने प्रसन्नता से शांति का सास लिया। इतने में किसी ने आकर जोर से मेरे कधे पर हाथ मारा, और कहा "कहा, दोस्त, मेरे यार, बडे टक्सी मे घूम रहे हो आज।'

मैंने घूमकर देखा, मेरा दोस्त इसहाक था। इसहाक बडे खुले दिल का आदमी था। वह स्वय तो अब्दुल रहमान स्ट्रीट मे एक खोजे के मकान में, एक तग से कमरे मे रहता है, और वही धधा करता है जो मैं करता हू—अर्थात वारनिश का और पुराने फर्नीचर को फिर से नया कर देने का, किंतु उसकी प्रेमिका मुहम्मदअली रोड और क्राफ्ड मारकेट के नाके पर एक अच्छे होटल मे रहती है। मैंने उसे देखा है बडी सुदर औरत है। बडे बडे सेठो के पास जाती है। इसहाक इससे पहले उसके पास ड्राइवर था। इसहाक को यह काम पसद नही आया। और वह उससे अलग हो गया।

वह औरत इसको बहुत पसद करती है। यह भी उसको चाहता है।

किंतु वह इसे अपने ढर्रे पर लाना चाहती है, और यह उसे अपने तराव पर रखना चाहता है। दोनों में सदैव लड़ाई होती है, और फिर यह उससे दस बारह दिन नहीं मिलता, फिर वह इससे मिलने को आती है। ऐसे ही यह चक्कर चलता रहता है। कभी कभी जब इसहाक कोई मोटी रकम कमा लेता है तो उसे जाकर दे आता है। और उसको एक लेक्चर भी झाड़ आता है। किंतु जिस स्त्री के पास अच्छा होटल होगा, यौवन होगा, सुन्दर सुडौल शरीर होगा और सोने चांदी वाले सेठ होंगे, वह बारनिश करने वाले इसहाक की बातें क्यों सुनेगी? सोचने की बात है न मित्र!

मैंने इसहाक से पूछा, 'मुझे भूख लगी है, कुछ खाओगे?''

वह बोला ''हां भूखा तो मैं भी हूं। चलो फीरोज की दुकान पर।'

फीरोज कबाबिये की दुकान से खा-पीकर निकलने के बाद इसहाक ने मुझसे दस रुपये उधार लिये, और अपने रास्ते पर चला गया।

मुझे इसहाक बहुत पसंद है। उसके पास पैसे हों तो 'ना' नहीं करेगा। सबको खिलायगा। और जब पैसे नहीं होंगे तो मेरे अतिरिक्त किसी से कर्ज नहीं मांगेगा—भूखा मर जायेगा, किंतु किसी से उधार नहीं लेगा। ऐसा मित्र, जो संसार में मेरे अतिरिक्त किसी और से उधार न ले कहां मिल सकता है! मुझे इसहाक की मित्रता पर बड़ा नाज है। मैं जब भी इसहाक से मिलता हूं, एक विचित्र-सी प्रसन्नता, निश्चिंतता, बच्चों जैसे आह्लाद का अनुभव करता हूं। मुझे ऐसा लगता है, जैसे मन में कोई क्लेश नहीं है, कोई कष्ट नहीं है। जैसे समस्त संसार खिलौनों से सजा हुआ है, और उसके सारे खिलौने मेरे लिए हैं। कई व्यक्तियों में कुछ ऐसी खूबी होती ही है।

इस समय इसहाक से मिलकर मेरा मन हल्का फुल्का हो गया। मैंने क्राफ्ड मारकेट से दो सेब मोल लेकर खाये। एक भिखारी को दो आने दिये। वहां से चलता चलता बोरीबंदर आ गया। किंतु जेब में रुपये थे, इसलिए अभी घर जाने को जी न चाहता था। इसलिए बोरीबंदर से हार्नबी रोड पर हो लिया। हार्नबी रोड की दुकानें मुझे बहुत पसंद हैं। कैसी-कैसी सुंदर वस्तुएं पड़ी हुई हैं—सुंदर टाइयां, मोजे पतलून के

कपडे, मफलर जूते। हर सप्ताह इन शो-केसों के भीतर सुंदर वस्तुए बदल दी जाती हैं और पुराने डिजाइनों के स्थान पर नये डिजाइन आ जाते हैं। शाम को घर जाने से पहले मैं प्रायः हानबी रोड के शो-केसों को देखा करता हू। जेब मे पैसे हो या न हो, इससे कोई मतलब नहीं। परंतु मैं प्राय अपना काम खत्म करके बोरीबंदर जाने के लिए हानबी रोड से गुजरा करता हू और हर एक शो-केस से नाक रगडकर भीतर की सुन्दर वस्तुए देखा करता हू। इसमे मुझे इतना आनंद आता है, जितना बचपन मे नये खिलौने देखकर प्राप्त होता था।

मैंने अपनी जेब मे हाथ डालकर नये-नये कुरकुरे नोटो को थपथपाया और बड़ी शान से ईवान एंड फ्रेजर के निऑन लाइटो से जगमगाते हुए शो-केस के सामने जा खडा हुआ। हाय कितनी सुदर कमीजें थी! बादामी रंग की साफ सुंदर कमीज, उस पर नील और लाल रंग की धारियां। मेरा तो जी मचल गया। मैंने अपनी कमीज के फटे हुए कालर को सहलाया। इस लाल रंग की धारीदार कमीज को पहनकर मैं कैसा दिखाई दूगा। मैंने कल्पना मे अपने आप को यह कमीज पहनकर एक बडे दर्पण के सामने देखा। वाह, क्या ठाठ थे! और कमीज के दाम थे केवल तीस रुपये। इससे तीन गुना अधिक रुपये इस समय मेरी जेब मे थे। मैं यह कमीज मोल ले सकता था। किंतु और अच्छी चीज देखने के लिए आगे बढ गया।

अगले शो-केस मे सुंदर साबुन थे, झाग वाले स्पंज और तौलिये। इन्हे देखकर आप ही आप नहाने की इच्छा उत्पन्न होती थी। यह सब मैं मोल ले सकता था। इससे अगले शो-केस मे पुरुषो के लिए गाउन थे। भड़कीले, रेशमी, कढाईदार गाउन जिन्हे पहनकर वार्निश करने वाला भी मिस्र का पाशा दिखाई दे। सत्तर रुपये का गाउन, और उससे अधिक रकम मेरे पास थी। मैंने उस गाउन को कल्पना मे पहना, और एक ईरानी गलीचे पर उडता हुआ, बहुत दूर चला गया। व्योम निर्मल था। मेरे नीचे सुंदर बागो वाली धरती घूम रही थी। और हरी-हरी दूब मे एक पतली-दुबली नदी, किसी कोमलांगी की भांति, धूप सेंक रही थी।

मैंने इस गलीचे को नदी के किनारे उतरने की आज्ञा दी। गलीचा

नदी के किनारे उतर आया, और स्वय ही विछ गया। फिर स्वय ही वहा से एक सुराही आ गयी और एक कोमल हाथ, और दो आखें और एक सुदर मुखडा। फिर मुझे किसी ने ठहोका दिया और कठोर स्वर म कहा, "आगे बढो, अब किसी और को भी देखने दो। आधे घटे से यहीं खडा है। न लेना न देना।"

मैंने मुस्कराकर ह्वाइट एड फ्रेजर के वरदी पोश गुलाम की ओर देखा जो मुझे डाट रहा था और आगे चल पडा। बेचारे को क्या मालूम था कि मेरे पास एक वायु मे उडने वाला गलीचा, और जेब म सत्तर स भी अधिक रुपयो की रकम है। मैं इस समय भीतर जाकर इस गाउन का भी माल ले सकता था, परन्तु जो नहीं किया। हार्नबी रोड पर इससे अधिक सुदर वस्तु भी अवश्य होगी, आगे चलकर देखा जाय। इस वर्दी पोश गुलाम को तो किसी भी समय भुगता जा सकता है।

आगे चलता चलता, बहुत सी दुकानें देखता भालता जगदवालाल पाटिल की दुकान पर पहुच गया। यहा सुदर शो केसो म कमरे पडे थे जिन्हे मैं मोल ले सकता था। कैमरे मोल लेकर मैं उन सब फर्नीचरो का चित्र ले सकता था जो पुराने थे, किंतु जिन्ह मेरी वारनिश, मेरी मेहनत ने इतना सुदर बना दिया था कि बिलकुल नये फर्नीचर की भाति जगमगा रहे थे। मैंने सोचा—य कमरे लेकर मैं इसहाक के पास जाऊगा, और उससे कहूगा, 'चल आज तेरी और तेरी प्रेमिका की इकट्ठी तस्वीरें लू।" मैंने अपना ईरानी गलीचा मगवाया और कमरा हाथ म लेकर सारे ससार के सुदर दृश्यो के चित्र उतारने लगा।

कैमरे के साथ एक जादू बीन पडी थी, जिसम देखने स तस्वीरें बिलकुल अपनी गहराई के साथ दिखाई देती है—अर्थात जसे मनुष्य बिलकुल आपके सामने चल फिर रहे हो, और मकान आपके सामने हो, जसे आपका घर। तस्वीरें अपनी लवाई-चौडाई और मोटाई के साथ इतनी अच्छी दिखाई देती है कि सिनमा मे भी इतनी भली मालूम नहीं होती। बचपन मे एक बुढिया एक बडी-सी जादू-बीन हमारे मुहल्ले म लाया करती थी। और हम लोग एक पैसा देकर तमाशा देखते थ। इस जादू-बीन को देखकर मेरा मन प्रसन्नता से नाच उठता था।

मैं दुकान के भीतर चला गया।

काउंटर पर मैंने एक युवक से पूछा, "यह जादूबीन कितने की है ?"

"साढ़े सैंतीस रुपये की।"

युवक बड़ी सुंदर कमीज पहने था। उसके बाल घुंघराले और पीछे को संवारे हुए, नि-आन की रोशनी में नये फर्नीचर के वारनिश की भांति चमकते थे। उसके होंठों पर भी यौवन की वारनिश थी। उसके होंठों पर एक गर्वपूर्ण मुस्कान थी—जो केवल चेक लिखते समय पैदा होती है। उसने मेरी ओर दृष्टि उठायी और फिर घुमाकर उस सुंदर युवती की ओर देखा, जो अभी-अभी दुकान में मेरे पीछे आयी थी। वह उसकी ओर आकर्षित हो गया और एक मैले मुरझाये चेहरे वाला गुजराती जो उसका असिस्टेंट लगता था, मेरी ओर आ गया। मैंने देखा उसके मुख का वारनिश जगह-जगह से उखड़ा हुआ है। उसने मुस्कराने का यत्न भी नहीं किया।

मैंने कहा, 'यह जादूबीन मुझे दिखा दो।"

उसने जादूबीन में एक लपेटी हुई फिल्म रखकर मेरे हाथों में थमा दी और मुझसे कहा, "इसे घुमाते जाओ। इस प्रकार स्विच दबाते जाने से नये नये चित्र तुम्हारे सामने आते जायेंगे।" मैंने बटन दबा दिया। टारजन हाथी पर सवार सामने से चला आ रहा था।

मैंने बटन दबा दिया

टारजन जल प्रपात में छलांग लगा रहा था। नीचे मगरमच्छ कितने भयानक प्रतीत हो रहे थे।

मैंने बटन दबा दिया

फूलों के गजरे, फूलों के हार और फूलों के लहंगे पहने हुए, हवाई द्वीप की सुंदरियां नृत्य कर रही थीं।

मैंने बटन दबा दिया

किनारे की रेत पर शराब, मीठे फल, लजीज बिस्कुट और खाने की चीजें एक साफ तश्तरी में पड़ी थीं, और एक स्त्री रेत पर आंखें बंद किये बैठी थी। उसका मुख मेरे इतने समीप था कि मैंने शीघ्रता से बटन दबा दिया

ईरानी गलीचा धरती पर आ गया।

मैंने खुजली के मारे गुजराती सनक से कहा, "यह जादूबीन तो बहुत अच्छी है—मेरे बचपन की जादूबीन से हजार गुना अच्छी है। कितने में दोगे?'

"साढ़े सैंतीस रुपये की जादूबीन आती है। ये लपेटी हुई एक दर्जन रंगीन फिल्म इसके साथ लेनी पड़ेंगी। दस रुपये की ये होंगी। सलटैक्स इसके अलावा—पचास से ऊपर रकम जायेगी।"

मैंने जेब में हाथ डालकर दस दस के नये कुरकुरे नोटों को गिना। आपको विश्वास नहीं आयेगा, किंतु यह बिलकुल सत्य है कि इससे पहले मेरे मन में जादूबीन के अतिरिक्त कोई चित्र न था। परंतु नोटों को हाथ लगाते ही एकदम मुझे झटका-सा लगा, और बहुत से चित्र बिना बटन दबाये मेरे सामने घूमने लगे

एक बच्चा फटी हुई कमीज पहने गली के फर्श पर बैठा हुआ है और रो रहा है। मैंने पहचाना, यह मेरा बच्चा है।

एक स्त्री की सलवार का पायंचा दूसरे पायंचे से ऊंचा है। उसकी ओढ़नी से उसके सिर के उलझे हुए बाल बाहर निकले हुए दिखाई दे रहे हैं। मैं समझ गया कि वह मेरी ।

एक व्यक्ति द्वार पर खड़ा है। इसकी सूरत हर क्षण बदलती जाती है। उसका क्रोध प्रत्येक क्षण बढ़ता जाता है।

कभी यह मकान मालिक का मैनेजर बन जाता है,

कभी दूध वाले सेठ का मुनीम,

कभी बिजली कंपनी का इंस्पेक्टर

कभी पानी के दफ्तर का अफसर।

मैंने बटन दबा दिया

अब मेरे सामने घर के फर्श पर, एक खाली तश्तरी पड़ी थी, जिस पर एक गिलास औंधा पड़ा था।

नोट मेरी जेब से बाहर निकले, पर वहीं हाथ में रह गये।

काउंटर वाला सुंदर युवक, उस सुंदर युवती को कमरा देखकर, मेरी ओर आ गया। मैं शीघ्रता से घूमकर दुकान से वापस जाने लगा।

मैं जानता था कि वह बलर्क अपनी सर्वोत्तम गर्वीली वार्निश फिरी मुस्कान से मेरे फटे हुए कालर को देख रहा है। मेरी खाकी जीन की पतलून देख रहा है, जिसके पीछे की ओर दो एक पैवंद लगे हुए हैं। मुझे मालूम था कि वह मुझ पर व्यंग्यपूर्वक हंस रहा है।

मैंने अच्छी तरह से दांत भींच लिये। अच्छी तरह से जेबों में हाथ डालकर नोटों को अपनी मुट्ठी में ले लिया, और नुमायशी शो केसों से आंखें चुराता सीधा वारीबन्दर की ओर चल दिया।

चलते चलते मुझे अनुभव हुआ कि किसी ने मेरे साथ घोर छल किया है। किसी ने मुझसे सौ रुपये देकर दो सौ रुपये छीन लिये हैं। साथ ही मेरा ईरानी गलीचा और जाडूवीन छीन ली है। किसी ने जोर से मेरे मुंह पर चपत मारी है। किसी ने मेरे हर नोट पर लिख दिया है, 'तुम्हारे लिए नहीं है।'

मेरे कदम प्रत्येक क्षण भारी होते गये। और मैंने अनुभव किया कि मेरे श्रम का प्रत्येक नोट अभाव की एक लंबी जंजीर है जिसे मैं स्वयं अपने हाथों से खींच रहा हूं।

वारीबन्दर पहुंचकर एकाएक मैंने निर्णय किया कि मैं आज गाड़ी से अपने घर वापस नहीं जा सकता। आज मैं पैदल ही वारीबन्दर से माहिम जाऊंगा।

बहुत रात बीते मैं थका हारा अपने घर लौटा। मेरी पत्नी चिंतित हो रही थी और मेरी प्रतीक्षा कर रही थी। किंतु जब उसने नोट देखे तो प्रसन्न हो गयी। मेरी उदासी का कारण वह समझ न सकी।

बोली, "किंतु यह क्या बात है कि तुम आज प्रसन्न होने के बजाय उदास हो?"

मैंने चारपाई पर बैठते हुए कहा, "मेरी जान, आज मुझे यह पता चला है कि यह दुनिया बहुत बूढ़ी हो चुकी है और मुझे ऐसी दुनिया चाहिए, जो बच्चों की तरह नयी, मुस्कराती हो।"

वह बोली, "मैं नहीं समझी तुम क्या कह रहे हो?"

मैंने कहा, 'मेरी जान, मैं कह रहा हूं कि अब पुराने फर्नीचर पर वार्निश करने से काम नहीं चलेगा अब नया फर्नीचर लाना होगा।"

सपनों के इशारे

एक बार मैंने सपना देखा कि मैं बच्चा हूं और गन्ना चूसते घूमते परियों के देश में आ निकला हूं। परियों के देश में वह रास्ता जाता है, जो घास के मैदान के नीचे से जाता है, जहां खजूर के बड़े ऊंचे ऊंचे वृक्ष हैं और झाड़ियों के जंगल, जिनमें चींटियों ने बड़े-बड़े पहाड़ बना रखे हैं। यहां तितलियां रंग बिरंगे घरों में रहती हैं और परियों के लिए शहद तैयार करती हैं। इस देश में कभी रात नहीं होती, कभी दिन नहीं होता, प्रकाश धरती पर आकाश से छन छनकर आता है। इसलिए यहां की धूप बड़ी सुहावनी और सुगंधित होती है और घास पर पानी की तरह बहता है और नदियां बनाती हुई परियों के देश को प्रकाश से सींचती है। इस देश में कभी बारिश नहीं होती कभी बादल नहीं गरजते कभी बिजली नहीं चमकती, कभी बर्फ नहीं पड़ती। गर्मी, बरसात, जाड़े का यहां पता नहीं लगता। हर समय बहार का सा समां छाया रहता है। कहीं से मोती लुढ़कते आ जाते हैं—एक के बाद दूसरा, दूसरे के बाद तीसरा, इस प्रकार मोतियों का तांता बंध जाता है। कभी तो ये मोती बिलकुल श्वेत और पारदर्शी होते हैं और कभी संगमरमर की भांति ठोस। कुछ समय बाद ठोस मोती पारदर्शी बन जाते हैं और फिर घास के गुच्छों में लुप्त हो जाते हैं। जो ठोस मोती बच रहते हैं वे धूप की नदी में बहते रहते हैं। और परिस्तानी बच्चे उनसे खेलते रहते हैं। उन पर सवार होते हैं, उन पर बैठ कर नदी की सैर करते हैं। और किनारों पर खड़े हुए फूल इन परिस्तानी

बच्चो का तमाशा देखते हैं, और तितलिया केसर की कोपलो पर झूलती रहती हैं। और यहा इत्र की वर्षा होती है। और हवा ऐसे चलती है कि सारा परिस्तान झूम झूम उठता है। यहा हवा, हवा नही होती, एक रागिनी होती है। और रागिनी की लय म हर परी सास लेती है। अजीब देश है यह परिस्तान !

जब मैं गन्ना चूमते-चूसते पहुचा, तो बच्चा था। इसलिए किसी ने मुझसे पूछ-ताछ या रोक टोक न की। मैं हर जगह घूमता रहा, मोतियो की नावा म बैठकर नदी पार करता रहा। किसी ने मुझसे न पासपोर्ट मागा, न टैक्स या कर, न मेरा गन्ना छीना। केवल एक राजकुमार को देखा जो कि उदास उदास घूमता या और एक फूल के द्वार से दूसरे फूल के द्वार मे झाकना फिरता था तथा खुबा और झाडियो के जगलो मे मारा मारा फिर रहा था। वह बडा ही सुदर था। परतु उसके होठो पर पपडिया जमी हुई थी और तलवो म छाले पडे थे। और जब वह सास लेता था तो उसकी सास की लय मे से आह निकलती थी। परिस्तान के लोग उसकी ओर देखकर मुस्कराते और चुप हो जाते और खामोशी मे उसे रास्ता दे देते। मैं कई दिन उसके पीछे पीछे घूमता रहा। वह मोतियो की नाव म जाने वाले हर यात्री को ध्यान से देखता जगल मे झाडियो की झापडिया और पत्तो की छतरियो और टहनिया के खबा के पीछे किसी को ढूढता। हर बार उसे निराशा होती और वह लौट आता।

मैंने एक दिन एक तितली से पूछा, 'यह राजकुमार क्या खोजता फिरता है ?"

तितली मुस्करायी, कहने लगी, "तुम्हे मेरी पचरगी साडी पसद है ?'

मैंने कहा, "मैं क्या पूछ रहा हू, तुम क्या जवाब दे रही हो !'

तितली ने फूल के अदर पीले पीले कोमल रेशो का झूला बना रखा था। वह उस पर जा बैठी और झूले की हिलोरो से फूल का सुनहरी जीरा चारो ओर उडने लगा।

क्यो धूल उडाती हो ?" मैंने क्रोध से कहा, "बडी बदतमीज मालूम होती हो।"

वह हसी।

कहने लगी ' शहद खाओगे ?"

मैंने कहा, ' पहले मेरे सवाल का जवाब दो।"

ऊह"—उसने इनकार से सिर हिलाया और फूल की पत्ती से द्वार बंद कर लिया। मैं चकित हो उस बंद द्वार की ओर देखने लगा। उसके बाहर ओस का एक बहुत बड़ा मोती लटक रहा था। मैं जो उसमें झांक कर देखता हू तो एक निराली ही दुनिया पाता हू।

नीलम के जडाऊ फर्श पर एक ऐसी सुंदर राजकुमारी नाच रही थी कि उसकी मुस्कान पर परिस्तान न्योछावर हो सकता है। वह अपनी सहेलियों के साथ नाच रही थी और मेरी ओर देख देखकर मुस्करा रही थी।

मुझे विस्मित देखकर बोली, 'आओ, नाचोगे ?'

मैंने कहा, "जी, मुझे नाचना नही आता।'

"अच्छा यह क्या है ?" उसने गन्ने के टुकडे की ओर संकेत करके कहा।

' यह गन्ना है। इसका रस मीठा होता है। हमारे यहा इसे नेशकर भी बोलते हैं। इसका गुड बनता है खाड बनती है और शक्कर तथा चीनी भी।

राजकुमारी कहने लगी, ' तुम बहुत रोचक बात करते हो। तुम कहा से आये हो ?'

"मैं धरती से आया हू।"

वह बोली, 'हम भी तो धरती पर रहते है। क्या परिस्तान के अतिरिक्त कोई और देश भी है ?"

अब उन पर मैं हसा। मैंने कहा, 'आपको कुछ पता ही नहीं—इस परिस्तान के अतिरिक्त इस धरती पर और बहुतेरे देश हैं। भारत है, इंगलैंड है अमरीका है जर्मनी है, जापान है। और ये देश आपस में लडते झगडते रहते है ।'

राजकुमारी बात काटकर बोली ' यह गन्ना मुझे दे दो।"

मैंने हाथ बढाया, तो गन्ना एकाएक ओस के मोती से जा टकराया।

और वह एक झटके से टूटकर लाखो कणा म बिखर गया। टूटत समय मुये राजकुमारी और उसकी सहेलियो के कहक्हो की विलीन होती आवाजें सुनाई दी। और मैं अपनी हरकत पर लज्जित खडा रह गया।

आग चला ता बहुत दूर जाकर मुझे एक द्रुतगामी टिडटा दिखाई दिया, जा अपन कधे पर उमी राजकुमार को उठाये लिय जा रहा था। मैंने राजकुमार से पूछा, "कहा जा रह हो?"

"खुबो के जगलो म—हटा, रास्ता न रोका, मुझे देर हो रही है। ओस के मोती उड जायेंगे। गुलाब का सारा जगल मैंने छान मारा है—अब खुबा का जगल दखूगा—हटो भी।'

मैंने कहा, "भलेमानस, यह तुम प्रतिदिन किसे खोजत हो और असफल रहत हो? इस परिस्तान मे मैंन केवल तुम्ह उदास दखा है।'

टिडडे ने गाकर कहा, "प्रेम ही जीवन है।"

मैंने कहा, "तो क्या राजकुमार का किसी से प्रेम है?"

टिडडा बोला, "वाह, तुम्ह पता हो नही।"

मैंने ग ना चूमत हुए कहा, 'भई, मैं परिस्तान म नवागतुक हू, मुझे क्या मालूम? आज आया हू, कल चला जाऊगा।"

राजकुमार ने टिडडे से कहा 'दर हा रही है, और तुम्ह बाते बनाने का बहुत चस्का है।"

टिडडे ने कहा "घबराआ नही, आज दिन भर मैं तुम्हार माथ हू। हम राजकुमारी को खोज निकालेंग।"

मैंन मुस्कराकर कहा, "तो तुम राजकुमारी को खोज रह हा? अरे भई, एक राजकुमारी ता मैंने अभी-अभी दखी थी—आस के माती म नीलम क फश पर, अपनी सहलियो के साथ नाच रही थी। वह उधर रास्ते मे एक फूल के द्वार ।"

राजकुमार यह सुनत ही टिडडे के कधे से उतरकर, भागा भागा उस ओर गया, जिधर मैंन सकेत किया था।

टिडडे न राजकुमार की आर देखकर सिर हिलाया, और फिर अपनी टागें धूप की नदी मे डाल दी। और फिर मुझे अपने पास बैठने का सकेत करते हुए बोला, "आओ, तुम्ह इस बेचार राजकुमार की कहानी

सुनाऊ।"

'बहुत अच्छा, यह ला गन्ना।"

"नही नही, मैं तनिक कमर के साथ शहद मिलाकर खाता हू—डाक्टर ने परहेज करने को कहा है।"

'अच्छा तो वह कहानी क्या है?"

'बहुत लबी कहानी नही, एक छोटी-सी कथा है। तुम्हे तो यह मालूम है कि सितारो से आगे जहां और भी है।"

मैंने कहा, 'हा, मैं जानता हू बिना जीने "

टिड्डा बोला हमारे यहा माता पिता नही होते। अच्छा, यह अलग बात है। तो सुनो ।"

परतु मैंने अनुरोध करते हुए कहा "माता पिता नही होते तो तुम्हारा पालन पोषण कौन करता है? तुम्हे पढना लिखना कौन सिखाता है? तुम्हारी शादी ब्याह कौन करता है? और बाजार से गन्ना मोल लेकर कौन देता है?"

"अरे भई" टिड्डा बोला, हम जीवन की भाति स्वय प्राकृतिक रूप से, उत्पन्न होते है। हमारे हर मास मे ज्ञान रचा हुआ है। वही हमे स्वत सब कुछ बता देता है। हमारे यहा बाजार नही है, क्योकि किसी को खरीदने बेचने या अपने अधिकार मे रखने का चाव नही है। यह जगल यह फूल यह धूप ये ओस के मोती, यह शहद, यह धरती की उपज—सब, सारे परिस्तान के लिए काफी है। क्या तुम्हारे यहा धरती उपजाऊ नहीं होती?

'उपजाऊ तो है, और सबके लिए पर्याप्त हो सकती है, परतु ।' मैं रुक गया।

परतु क्या?

'तुम नही समझोगे।

टिड्डे ने कहा 'तुम सच कहते हो। हम तुम भिन्न भिन्न ससारों मे रहते हैं। तुम हमारी बात नही समझ सकते, हम तुम्हारी बात नही समझ सकते। किंतु जो कहानी मैं तुम्हे अब सुनाना चाहता हू, वह दोनो ससारो मे समान है। यह प्रेम की कहानी है।"

"प्रेम !" मैंने कहा, 'हा, मा मुझे प्रेम करती है, मेरा मुह चूम लेती है, पिता मुझे अपने वक्ष से लगा लेते है—कभी कभी एक पैसा भी दे देते हैं। यही प्रेम है न ?"

"हा, यही प्रेम है। परतु प्रेम एक और प्रकार का भी होता है।"

"वह क्या प्रेम होता है ?'

"जैसे जस ।" वह मेरी ओर देखकर मुस्कराया।

"ओह—तुम्हारा मतलब 'इश्क' से है।"

टिड्डा घबरा गया, "ओह, तुम्हारे यहा इस प्रेम को 'इश्क' कहते है ? अजीब-सा लगता है—इश्क। सच यह है कि हमारे यहा ऐसा प्रेम नही होता, जिसे इश्क कहते हो। हमारे यहा प्रेम होता है, परतु पीड़ा पहुचाने वाला नही। किसी पर अधिकार पाकर उसे वश मे रखने की इच्छा नही होती। यह रोग पहली बार केवल इस राजकुमार को लगा है। पहले-पहले इसे इस राजकुमारी से प्रेम ही था। राजकुमारी का भी इससे प्रेम था। दोनो सुखी थे और परिस्तान के उद्यानो मे नाचते फिरते थे। राजकुमारी अपनी सहेलियो के साथ और राजकुमार अपने साथियो के साथ रहता था। किसी को कोई दुख न था, कोई अभाव न था । टिड्डा सहसा रुक गया।

दो मोती कही से लुढकते आये और नदी की सतह पर नाचने लगे। नाचते नाचते अलग हो गये। और फिर अलग होकर लुढकने लगे। फिर इकट्ठे होकर नाचने लगे। फिर दो-तीन मोती कही से आये। फिर नृत्य शुरू हो गया। अजीब मनोहर दृश्य था।

टिड्डे ने कहा, "यही हमारा जीवन है। हमारे यहा प्रेम है, 'दासता' नही। उल्लास है, इश्क नही। हम इकट्ठे मिलकर नाचते हैं, फिर अलग हो जाते हैं। एक से दो, दो से तीन—और फिर हम एक वृत्त बना लेते हैं और उसमे सारे परिस्तान को अपनी परिधि मे ले लेते है। परतु राजकुमार ने चाहा कि राजकुमारी को सारे परिस्तान से अलग कर दे। वह केवल उसकी होकर रह जाये—किसी से बात न करे किसी के साथ न हसे, किसी के साथ न गाये। वह दिन भर उसको निहारता रहता। उसके खिले हुए चेहरे पर विषाद की परछाइया आती गयी, होठो पर पपडिया जमती

गयी और सास की लौ से आहें निकलने लगीं।"

'फिर क्या हुआ ?"

राजकुमारी को भी राजकुमार से अथाह प्रेम था, परंतु उसके प्रेम में अधिकार भावना का अंश न था। अपने अहं को, अपने व्यक्तित्व को अलग रखकर वह प्रेम करती थी। उसने राजकुमार को समझाने का बहुत प्रयत्न किया, परंतु राजकुमार का प्रेम बढ़ता गया, बढ़ता गया। यहां तक कि वह परिस्तान के वातावरण में काला बादल बनकर मंडराने लगा। परिस्तान के सब लोग भयभीत हो गये—'हे भगवान, अब क्या होगा !'

फिर क्या हुआ ?'

'फिर यह हुआ कि राजकुमारी ने खुशबू के जंगल में जाकर, खुशबू के सबसे बड़े वृक्ष की परिक्रमा की और अपनी सहेलियों को लेकर नाचने लगी और आवाहन करने लगी कि वह उसे राजकुमार की दासता से बचा ले। खुशबू के सबसे बड़े वृक्ष ने उसकी प्रार्थना सुन ली और उसे अपने अंचल में आश्रय दे दिया। अब राजकुमार मारा मारा फिरने लगा—राजकुमारी की खोज में। परिस्तान के लोग उस पर हंसते थे परंतु अब तो वह उस पर हंसते भी नहीं। खैर, जब राजकुमारी नहीं मिली, तो वह भी खुशबू के सबसे बड़े वृक्ष के पास गया और विनती करने लगा। तब वृक्ष ने उसे समझाया कि राजकुमारी किसी की निजी संपत्ति नहीं बन सकती। इसलिए उसे यह दंड दिया गया कि राजकुमारी उससे छीन ली गयी।

इस पर राजकुमार ने बड़ा विलाप तथा रुदन किया और अपने सच्चे प्रेम की सौगंध खाने लगा।

अंत में वृक्ष का हृदय पसीजा और उसने राजकुमार को बता दिया कि उसने राजकुमारी को एक ओस के मोती में छिपा दिया है। जिस दिन वह राजकुमारी को ढूंढ निकालेगा राजकुमारी उसकी हो जायगी—सदा सदा के लिए।

बस, उसी दिन से राजकुमार राजकुमारी की खोज में ओस के मोतियों में झांकता फिरता है। परंतु परिस्तान में ओस के मोती अनगिनत हैं और

उनका जीवन बहुत थोडा है। वह चमकते है और फिर लोप हो जाते है। और राजकुमारी ओस के एक मोती से दूसरे मोती में नृत्य करती फिरती है। और कोई उसे देख नही पाता। कोई नही जानता कि वह किस बूद, किस मोती मे छिपी है। और राजकुमार सुबह शाम उसे खोजता फिरता है और असफल रहता है। हा, कभी-कभी वह किसी बच्चे को दिखाई दे जाती है—जैसे अभी तुम्हे दिखाई दी।

इतने मे राजकुमार भागता हुआ वापस आया। उसकी आखो मे आसू थे। मुझसे कहने लगा, "वहा तो नही है—अब मैं क्या करू ? कहा जाऊ ?"

फिर टिड्डे को सबोधित करके कहने लगा, "चलो, जल्दी से चलो। पुबो के जगल मे अभी ओस होगी।"

टिड्डे ने उसे कधे पर बिठा लिया। जब वह टिड्डे पर सवार हो गया तो मैंने राजकुमार से पूछा, "तुम्हारी राजकुमारी का क्या नाम है ?"

"सौदय।' उसने आह भरकर कहा।

"और तुम्हारा ?"

'इश्क' उसने सिर झुकाकर कहा, "तुम्हे मेरा नाम जानने की क्या पडी ?'

"कुछ नही,' मैंने कहा, 'यो ही पूछ लिया। लो यह गन्ना।"

"नही नही," राजकुमार ने कहा, "मुझे गन्ने से कोई दिलचस्पी नही। मुझे आग पसद है।"

'गन्ने का रस आग को बुझा देता है" मैंने मुस्कराकर कहा, "लो चखो इसे।"

टिड्डा सहसा कहकहा मारकर हसा और वातावरण मे छत से लाखो बुलबुले पैदा हो गये और छत से टूट टूटकर गिरने गये जल-प्रपातो के कोलाहल मे सारा व्योम गूज उठा, धूप की नदी ऊपर ही ऊपर चढती गयी और आकाश की छत से लगकर फव्वारे की तरह लाखो बूदो मे गिरने लगी और हर बूद मे राजकुमारी का नृत्य था और वर्षा की फुहार थी और धुध का रग गहरा होता जा रहा था। और फिर अध-कार, और अधकार, और अधकार। और फिर कुछ न था—न ज्योति, न

अधकार, न धरती, न आकाश, न अनुभूति, न ज्ञान—बस शून्य, महाशून्य, अनत शून्य !

शून्य और अधकार और घटियो का धीमा धीमा राग बढ़ने-बढ़ने सारे वातावरण म भर गया। और अधचेतन इन्द्रिया फिर से चेतन होने लगी। अध प्रकाशित वातावरण म जडाऊ स्तभ दृष्टिगोचर हुए। अगर और धूप की सुगध आने लगी। देवता की प्रतिमा के सामने एक हाथ घटी बजाने लगा। मैंने देखा, यह मेरा ही हाथ था जो घटी बजाकर देवता की पूजा कर रहा था। मैं एक ब्राह्मण पुजारी था और धोती बाधे, माथे पर तिलक लगाये मत्र पढ़ रहा था। और मेरी निगाह देवता से भी परे, मदिर की छत से भी परे आकाश की ओर उडती चली गयी।

मुझे ज्ञात हुआ मैं बडा धर्मात्मा, साधु और विरक्त प्राणी हू। दिन रात ईश्वर की महिमा का गान करने वाला, उसकी भक्ति म लीन रहने वाला। मेरी दाढी मुडी हुई थी। मेरा सिर भी मुडा हुआ था। मुडे हुए सिर के बीच म गाय के खुर के बराबर मोटी चोटी थी जिसमे गाठ लगी हुई थी। मेरे हाथ म लाल थैली थी और उस थैली म एक माला जिसके मनको को मैं दिन म एक हजार एक बार घुमाता था। माला म एक सौ एक मनके थे, दिन मे चौबीस घटे थे एक घटे म साठ मिनट और एक मिनट म साठ सेकिंड और एक सैकिंड म एक बार राम नाम। सोते सोते भी मेरा हाथ माला फेरता रहता, और सोते जागते भी मेरे मुह से राम राम निकलता रहता। मेरी आखें सदैव आकाश की ओर उठी रहतीं। ऐसा अनुभव होता कि सोते जागते, उठते-बैठते नाचते गाते, हसते बोलते, घटी बजाते पूजा-पाठ करते मेरी लौ भगवान से लगी है—'ऐ भगवान तू कहा है ?

किसी ने मुझसे कहा, 'हे भगवान, मेरी पत्नी बीमार है, उसे अच्छी कर दो।

जो भगवान की इच्छा !"

'हे महात्मा आज सटट म नौ सौ आ जायें।"

"जो भगवान की इच्छा !"

"हे महात्मा, मुझ पर रिश्वत का मुकदमा चल रहा है बचा लो।"

"जो भगवान की इच्छा !"

"हे महात्मा, मैंने एक रिश्वतखोर के विरुद्ध कार्यवाही की है। उसे दड दिला दो।"

"जो भगवान की इच्छा !"

मैं हर समय आकाश की ओर ताकता रहता और भगवान के चरणो मे पहुचने की कोशिश करता। मन मे, आत्मा मे, शरीर के रोम रोम मे भगवान को प्राप्त करने की इच्छा बसी थी, उस भगवान को जो नील गगन के पीछे अपने सिंहासन पर विराजमान था। मेरी आखें अनायास ऊपर उठ जाती। हाथ स्वत आराधना मे जुड जाते और कठ से एक ही राग निकलता—हे भगवान, मुझे दर्शन दो। मुझे अपने पास बुला लो, प्रभो !

मुझे हर समय अनुभव होता कि मैं अब उडा अब उडा। परतु पाव अभी धरती की गदी मिट्टी मे फसे थे। ऐसा लगता था जैसे मैं कीचड मे फस गया हू और प्रयत्न के बावजूद बाहर नही निकल सकता। इसीलिए बहुधा मैं व्याकुल हो उठता और मेरी आत्मा बुरी तरह खडखडाने लगती। परतु मैं निराश रहता, क्योकि मेरी नजरें आकाश की ओर होती पर पाव धरती मे गडे होते। और मैं न उड सकता और न अपने भगवान तक पहुच सकता था। यद्यपि तपस्या के तेज से मेरी आत्मा इस प्रकार प्रकाशमान थी, जैसे पानी की बहुतायत से धान की खेती परतु फिर भी मेरे मन मे एक अभिलाषा थी—मेरे स्वामी, मेरे प्रभु, मुझे मिल जायें। और इसीलिए मेरी आखे सदा ऊपर की ओर लगी रहती। बहुधा मैं सोचा करता—अगर किसी यत्न से मैं उडकर आकाशो से परे जा पहुचू, और अपने ईश्वर के चरण जा पकडू, तो क्या वे मेरी आत्मा को अस्वीकार कर देंगे—मेरी आत्मा को, जो ब्रह्म का एक अश है।

परतु मैं उडू कैसे !

हाय, यह ऊचा ऊचा आकाश ?

मदिर मे, घर मे, गली मे, सडक पर, बाजार मे, नदी के किनारे, कुज

म, उद्यान म हर जगह मुझे कही न-कही नारी दिखाई दे जाती थी। परतु मेरी तपस्या न अभी तक मुझे नारी से विमुख कर रखा था। मैं नारी का एक देवी मानता था एक मा, जिसका सौन्दर्य एक पवित्र भावना को जगाता था। जिसका स्नेह हर समय मुझे उसका पुत्र बन जाने को विवश करता। और यह पवित्र भावना और यह आध्यात्मिक प्रेम, सृष्टि कर्ता परमात्मा के स्वरूप का प्रतिबिंब था, जिसके स्नेह की एक चिनगारी नारी के हृदय म भी जा पहुची थी।

और मैं नारी को देखकर आसू भरी आखो से अपने प्यारे भगवान को देखने लगता, जो मेरी आखो से दूर, बहुत दूर, अपने सिहासन पर विराज मान था।

मैं अपनी खोज, अपनी लगन, अपनी आराधना म इतना लीन रहता था कि जीवन के पच्चीस वर्ष बीत जाने पर भी मुझे नारी प्रेम का ध्यान न आया। इसीलिए मैं जूही की भाव भगिमाओ को न समझ पाया—वह जूही जो सचमुच जूही की भाति सुदर थी, वह जूही जो सदा श्वेत वस्त्र पहनकर आती थी, वह जूही, जो मेरे सस्कृत के श्लोक बोलते समय मेरे मुख की ओर ताका करती, वह जूही, जो माथा टेकते समय अपने आखो के मोतियो से घटो मेरे चरणो को धोती थी वही जूही जो घटो मदिर की दीवारो से, ड्योढी से लगी लगी खडी रहती थी और अपने उस आराध्य को निहारती रहती जो ससार से विरक्त, अपनी पूजा म लीन रहता और हाथ उठाये मदिर की छत से भी ऊपर उस असीम शून्य की ओर देखता था, जिसके परे उसका परमात्मा रहता था। और जूही उसके तेजमान चेहरे की ओर देखती उसकी बलिष्ठ नगी भुजाओ की ओर देखती और फिर उसके पावो की ओर देखती जो सरसराती हुई रेशमी धोती की रगीन किनारी और सलवटो के बाहर कमल की तरह खिले नजर आते।

और जूही की आखो स आसू जारी हो जाते।

और नौजवान पुजारी जो मैं था, उसे सात्वना देता 'घबराओ नही जूही, तुझे परमात्मा अवश्य मिलेंगे। हे भगवान, तेरी लीला अपरपार है।'

और मेरी आखें फिर ऊपर की ओर उठ जाती।

परतु कभी-कभी मुझे लगता, यह ब्राह्मण मैं नही हू, कोई और है। मैं होते हुए भी नही हू। मैं भगवान के चरणो म जा गिरा। गिडगिडाकर दशना की विनती करने लगा। फिर मुझे एसा लगा, मैं अचेत हुआ जा रहा हू। मुझमे हिलने-डुलने की शक्ति नही रही। मैं देवता के चरणो मे बेसुध पडा हू। एकाएक प्रकाश की एक किरण पत्थर के देवता के नेत्र से फूटी और सारा मदिर जगमगा उठा। और प्रकाश बढता गया, और आरती के शख घडियाल बजने लगे, और उनके शोर ने मुझे अपनी लहरो पर उठा लिया और उछालकर आकाश की ओर फेंक दिया। 'अहा—अब मैं अतरिक्ष म उडा जा रहा था—हल्का फुल्का, सूक्ष्म। चारो ओर नीला आकाश था—और कुछ न था। ऊपर नीचे सब ओर नीलिमा। एक गहरी, अनत, असीम नीलिमा मे ऊपर-ही ऊपर उडता चला गया। फिर भी यह नीलिमा समाप्त होन मे न आयी। फिर मुझे यह भी ज्ञात न रहा कि मैं ऊपर उडा जा रहा हू या नीचे धसा जा रहा हू। यह आकाश है या अधा कुआ है, जिसमे नीलिमा के अतिरिक्त कुछ नही है। दिन हफ्ते, महीने, वष बीतत गय और मैं उस नीलिमा के भवर मे चक्कर काटता रहा। अब मैं ऊपर की ओर देखता तो वही नीलिमा और गहरी होती दिखाई पडती। अगर नीचे देखता तो बिलकुल अपने पाव तले मकडी के लाखो जाल पुरे दिखायी पडत। य मकडिया मुझे जीवित खा जायेंगी—इसलिए मैं उनके जालो से ऊपर ही ऊपर उडता रहता। परतु य जाले मेरे पाव से जरा ही नीचे रहते। उनस ऊपर मैं न उठ पाता। ऐसा लगता कि मैं अब गिरा, अब गिरा। मेरे लिए न ऊपर रास्ता था, न नीचे। मैं त्रिशकु की भाति बीच मे लटक गया था। ऊपर नीला शून्य था, तो नीचे मकडियो के जाले और मैं बीच म चमगादड की तरह लटका रह गया था। एकाएक मुझे अपने अदर दो विरोधी आवाजें, एक-दूसरे से लडती हुई सुनाई दी। एसा पहले कभी न हुआ था। मुझे लगा, जैसे मेरे व्यक्तित्व के दो टुकडे हो गये हैं। दोनो के सिर अलग-अलग हैं, परतु धड, जुडवा बच्चो की भाति, जुडे है। दोनो ब्राह्मण अब मेरे अदर लडने लगे। परतु क्या दोनो ब्राह्मण थे, विश्वास नही होता, क्योकि एक की शक्ल तो इतनी

भयानक थी, मनहूस थी कि उसे देखकर मुझे अपने से घिन आने लगी। निश्चय ही उनमे से एक राक्षस था और दूसरा ब्राह्मण, एक जकिल, दूसरा हाइड। पर थे—दोनो मेरे ही अश। मैं भी दोनो ही के अस्तित्व मे जीवित था। ये दोनो हर समय वाद विवाद करते रहते, तू-तू मैं मैं करते रहते गाली गलौच करते और गुत्थम गुत्था हो जाते। ये मेरे उस अवस्था को पहुचने के लिए एक दूसरे को दायी बताते। अत मे मैंने निर्णय किया कि यदि इस अतर्द्वद्व से मुक्ति पाना ही है तो मैं मकडी के जाले मे फस जाऊ। शायद इस जाल को तोडकर मैं धरती की ओर चला जाऊ और धरती मुझे अपनी ओर खीच ले। भवर से निकलने का एकमात्र तरीका यही है कि आदमी भवर के केंद्र मे सबसे नीचे चला जाय और फिर अपने को भवर की लहरो को सौप दे। मुझे मालूम है कि जब मैंने भवर मे गोता लगाये, तो मैं बहुत अधिक आशावादी न था। मेरे पाव जाल से टकराये और उसे तोडकर नीचे गिरते गये। एकाएक मैंने देखा—मैं पीपल के एक पेड की ऊपर की टहनियो पर आ रहा हू। मुझे नीचे आते देखकर एक कौआ जोर जोर से कहकहे लगाने लगा। फिर मैंने देखा मेरे व्यक्तित्व के निकट दोनो भाग वही पीपल की टहनियो पर लटक रहे है और मैं मन्दिर के गली मे खडा हू।

इतने मे जूही आयी और निकट खडी हो गयी। मैंने पूछा, "तुम क्या चाहती हो ?"

वह पीपल के पेड की ओर सकेत करके बोली, "ये दोनो ब्राह्मण कब तक लटकते रहेगे ?"

मैं जो अब उन दोनो से अलग था, और शायद नहीं भी था, क्योकि वे दोनो अब भी मुझे अपना आपा ही प्रतीत होते थे अब उनसे पूछ-ताछ करने गया।

मैंने उनसे पूछा "तुम क्या चाहते हो ?"

एक ने कहा "मैं धरती पर उतरना चाहता हू।"

दूसरे ने कहा मैं त्रिशकु बनकर अधर मे रहना चाहता हू।

पहले ने कहा 'मुझे जूही के चरणो की धूल ला दो और मेरे मस्तक से लगा दो।

दूसरे ने कहा, "मुझे मोक्ष चाहिए।"

पहले ने कहा "मैं भूखा हू। मैं भूखा हू।"

और व दोनो लडने लगे। एक दूसरे को खाने लगे। और पहला चिल्लाने लगा, "मुझे बचाओ, मुझे बचाओ, मुझे धरती पर अ न दो।"

मैं भागा-भागा जूही के पास गया और उसके पाव की धूल चुटकी म ली और पीपल की ऊपरी टहनी पर पहुचकर उन दोना पर छिडक दी। एकाएक मुझे झटका-सा लगा और पीपल क पड की सब टहनिया टूटती गयी, और मैं धम स धरती पर आ गिरा।

वातावरण म एक कहकहा गूजा और व दोना एक दूसर म लीन होते दिखाई दिये। एसा लगा जैस एक साप ने दूसर साप को खा लिया है। न मालूम राक्षस ने ब्राह्मण को हडप कर लिया था या ब्राह्मण न राक्षस को। किंतु मन उन दोना को और अपन आपको एक अदभुत तरीके स एक होते पाया। अग अग दु ख रहा था और मदिर की चारदीवारी थी और मैं मदिर के फश पर आधा पडा था। और जूही मेर पास थी।

एकाएक वह पुजारी, जो मैं था, उठ बठा और जूही स पूछन लगा, "तुम कौन हो?'

"मैं एक विधवा हू।"

"मुझसे विवाह करोगी?"

जूही ने कहा "मैं पापिन हू, तुम पुण्यात्मा हो। मुझे हृप न दो, विषाद दे दो।"

ब्राह्मण न उसका हाथ पकडकर कहा "आओ, बाहर चलें। अब यह घर उजड चुका है। इस मदिर म अब कोई नहीं है—ठहरो, अपन चरणो की धूल मुझे दो। यह धूल पाप को पुण्य म परिणत करती है।'

और वे चलन लग।

और मदिर भी उनके साथ साथ चलता गया। देवता के होठो पर प्रकाश की किरण फलती गयी और आगन विस्तत होते-होते, लहलहाते लब आडे तिरछे खेतो म बदल गया। और उनम गेहू के सुनहरी पौधे लहलहाने लग। पुजारी न फिर निमल आकाश की ओर देखा और उसे एक बार फिर प्रतीत हुआ कि उसके पाव फिर धरती स उठ रहे है। और

उसने घबराकर फिर जूही का हाथ पकड़ लिया। और वह फिर धरती पर था। किंतु वे दोनों एक दूसरे के हाथ में हाथ दिए, कंधे-से-कंधा मिलाये, चले गये—क्षितिज की ओर—क्षितिज से परे।

मैं सपनों की घाटी से गुजरकर विवेक के वास्तविक संसार में वापस आ रहा था कि मार्ग में एक माली मिल गये। बोले, "क्या समझे ?"

मैंने उस बच्चे की तरह जिसे नया पाठ मिला हो, रुक-रुककर कहा, 'यही कि परिस्तान इस संसार में है और—भगवान भी इस संसार में है और आकाश की ओर बार-बार ताकना मूर्खता है।

"शाबाश !" उन्होंने थपकी देकर कहा, "और प्रेम ?"

मैंने कहा, 'प्रेम में अधिकार भावना नहीं होती, दासता नहीं होती, वैधव्य नहीं होता, मौत नहीं होती, और जब कोई प्रेम को दास, विधवा या मृत बनाने का दुस्साहस करता है तो सौंदर्य इस संसार में तो क्या, परिस्तान में भी नहीं रहता और ओस की बूंदों में छिप जाता है।'

शाबाश ! यह कहकर वे रास्ते से हट गये। बोले, 'अब तुम जा सकते हो।'

परंतु मैं चलते-चलते रुक गया। मन में एक प्रश्न उठा। पूछ लिया, 'परंतु एक उलझन का तो समाधान कीजिए। मेरी समझ में यह नहीं आता कि इस सत्य के उपरांत भी राजकुमार की खोज क्यों जारी है अब तक ?'

वे हंसकर कहने लगे, 'अच्छा है, तुम प्रेम के वास्तविक रूप से अनभिज्ञ रहो। जिस दिन तुम इसे भी जान लोगे, तुम्हें जिंदा रहने की जरूरत न रहेगी।'

घर

दिन को बबई जाना पहचाना शहर मालूम होता है। उसकी गतिविधि, उसकी दौड धूप, उसकी चहल-पहल और उसके खेल-तमाशे आखो मे रसे-बसे मालूम होते हैं। परतु रात्रि के समय बबई मे सफर करना, और वह भी बारह बजे के बाद ऐसा है जैसे अनजान अजनवी समुद्र म नाव खेना। पता नही चलता कि कहा पानी गहरा है, और कहा चट्टानें छिपी हुई हैं। कहा भयानक भवर पडते है, और कहा लहरें इधर से उधर को घूम जाती हैं। देखने म लगता है यह एक सीधा रास्ता है। यूनिवर्सिटी ग्राउड के किनारे से होकर बडे तार घर को जाता है। उसके किनारे एक अग्रेज विद्वान का बुत है, जिसके पास जामुन के दो पेड खडे है। परतु रात के समय यहा जेब कतरो की एक टोली होती है। आगे चलिए तो पारसियो का एक कुआ है। कहते हैं कि जब पारसी लोग ईरान से भागकर भारत के तट पर आये थे, तो बबई मे सबसे पहले उन्होंने इसी कुए का पानी पिया था। इस कारण इस कुए का पानी अब एक ऐतिहासिक और धार्मिक महत्त्व प्राप्त कर चुका है। इस कुए के चारो ओर अब एक मजबूत लोहे का जगला है। कुए के ऊपर एक ऊची कक्रीट की इमारत है। चारो ओर रोगन की हुई बेंचें बिछी हुई हैं। कुए के पास एक आलीदार आला है, जिसमे बहुत से दीप जलते रहते हैं। इन दीपो का प्रकाश आले के बाहर लटके हुए फूलो के हारो से छन छनकर आता है। दिन को पारसी लोग बेंचो पर बैठते हैं और कुए का पानी पीते हैं और भगवान की प्रार्थना मे लीन नजर

आते हैं। रात को इस कुए की छज्जे वाली इमारत के पीछे रामधन फट वाला सोता है और गुलाम अब्बास सिल्क के रुमाल और औरतों की अंगिया बचने वाला और यूसुफ सिंधी फाउटन पेन बचने वाला और नत्थू चनेवाला और उसका प्रतिद्वंद्वी पंडित मुरलीधर।

प्रतिद्वंद्वी का नाम आते ही मैं चौंका। गोरे और मैं इस रास्ते से जा रहे थे। मैं फ्लोरा फाउटन जा रहा था, गोरे को बडे तार घर में काम था। इसलिए हम दोनो साथ साथ चल रहे थे और गोरे मुझे आम पास का भूगोल समझा रहा था। 'प्रतिद्वंद्वी क्या?'' मैंने गोरे से पूछा, 'क्या दोनों के बीच कोई औरत थी?

नहीं —गोरे ठोडी खुजलाते हुए हसने लगा, 'दोनों की लडाई औरत पर नही सतरी पर होती है। बात यह है कि कुए के पास जो चने वाला बैठता है, उसकी काफी बिक्री होती है। दोनो यहा चने बेचते हैं और दोनो चाहते हैं कि दोनो में से केवल एक यहा पर बैठे। इसलिए दोनों चौक के सतरी को अपने अपने ढंग से रिश्वत देते हैं। जिस दिन नत्थू अधिक पैसे दे देता है, उस दिन सतरी पंडित मुरलीधर को कुए पर से उठाकर गोखले के बुत के नीचे बिठा देता है, जहा कबूतर दिन रात बीट करते रहते हैं। जिस दिन पंडित मुरलीधर का दाव चढ जाता है उस दिन नत्थू को कुए से हटाकर गोखले के बुत के नीचे बिठा दिया जाता है। रात को दोनों की दो-तीन घंटे लडाई होती रहती है और सदा जिक्र उसी सतरी का होता है। इनकी लडाई बडी मनोरंजक होती है। ये नित-नयी गालियो का आविष्कार करते हैं। चुनाचे गालियो की शब्दावली में विशेष रुचि रखने वाले भाषा विशेषज्ञ बहुत दूर-दूर से इस दृश्य को देखने आते हैं। कभी-कभी बीच-बीच में रोककर कभी एक को, कभी दूसरे को बढ़ावा देते रहते हैं जिससे समां बधा रहता है। रात के बारह बजे के बाद यहा सचमुच बडी रौनक होती है। परंतु जिस दिन से यूसुफ सिंधी की हत्या हुई है, उसी दिन से कुए का यह पिछवाडा उजड गया।

'यूसुफ सिंधी की हत्या क्या हुई?'' मैंने गोरे की बांह पकडकर उसे ठहरा लिया। हम लोग उस समय ठीक कुए वाली इमारत के पीछे थे। वहा पर इस समय कोई नहीं सो रहा था। जगह बिलकुल खाली थी।

गोरे के काले होठों पर एक कड़वी सी मुस्कराहट आयी। उसने घूमकर हाकी ग्राउंड के पार उस नये रेस्तरां की ओर देखा, जिसे आल इंडिया वीमन का फरेंस के कार्यकर्ताओं ने सस्ता खाना और सस्ती चाय उपलब्ध करने के उद्देश्य से खोला था। फिर वह लोहे के जंगले से पीठ लगाकर खड़ा हो गया। उसने अपनी निक्कर की जेब से बीड़ी निकालकर सुलगायी। एक मुझे दी। फिर मेरे कंधे पर हाथ रखकर बोला, "यार, कभी तूने औरतों के होटल में खाना खाया है?"

"हां।"

"कैसा होता है?"

"पहली बात तो यह है कि वह औरतों का पकाया हुआ नहीं होता। दूसरी बात यह कि फीका होता है, और मैं चटपटा, मसालेदार खाना खाने के हक में हूं। तीसरी बात यह है कि उस समय तो पेट भर जाता है, पर थोड़ी देर बाद फिर भूख चमक उठती है। ऐसा लगता है जैसे कुछ खाया ही नहीं था, जैसे किसी ने भूख के साथ छल किया था।"

"बिलकुल ठीक कहते हो," गोरे ने मेरे हाथ पर हाथ मारकर कहा, "इरोज सिनेमा का पठान भी मुझे यही कहता था। और फिर आठ आने खाने के लेते हैं। इससे तो हमारी दो आने की मूंगफली अच्छी। पेट में बस जरा-सा दर्द ही तो करती है।"

"पर वह हत्या।"

गोरे ने जोर से कश लगाया। और बीड़ी को जलाकर आधा कर दिया। फिर मुंह से धुआं निकालते हुए, धीरे धीरे कहने लगा—जैसे किसी बड़ी लंबी यात्रा की, हजारों वर्ष पुरानी, कथा कह रहा हो।

"वह सामने जो रेस्तरां है, उसमें एक लड़की बर्तन साफ करने का काम करती थी।"

"लड़की सुंदर थी?" मैंने पूछा।

"नहीं, खाली जवान थी। मगर साली क्या जवान थी—मैं खुद दो चार चाय पीने के बहाने उसे देखने गया। रामधन फ्रूटवाले की उस पर नजर थी।"

"यह रामधन फ्रूटवाला कौन था?"

'साले को तुमने नहीं देखा ? अरे, कितनी ही बार देखा होगा। साला उस पारसी कुएं के पास फल बेचता था, जहां नत्थू और मुरलीधर चने बेचते थे। उनके बीच में उसकी साइकिल-गाड़ी होती थी, जिस पर वह फल सजाकर बेचता था—कश्मीर की नाशपातियां, काबुल के अनार, चमन के अंगूर। वह केला, नीबू-वीबू नहीं बेचता था। साला बहुत कमाता था। और रिश्वत भी बहुत देता था, यह जगह भी बहुत मौके की है। दफ्तर के रास्ते पर जब क्लर्क लोग दफ्तर से छूटते हैं, तो हजारों की संख्या में इस फुटपाथ पर उसकी साइकिल-गाड़ी के पास से गुजरते हैं। साले को आवाज भी नहीं देनी पड़ती थी। लोग आप ही रुककर उससे मोल-तोल लेने लगते।

"हां, तो वह था—रामधन। उसका चेहरा आड़ू की तरह चमकता था। सिर घुटा हुआ था, जिस पर चुटिया सदा खड़ी रखता था। कल्ले में सदा पान रहता था। साले ने थूक-थूककर गोखले महाराज का चबूतरा गंदा कर दिया है। किसी समय जाकर देखना। वही चाहने वाला था उस लड़की का। मगर साला बड़ा कंजूस था। जब शाम को लड़की अपने काम-काज से निपटकर उधर उसके पास आती, तो साला उसे कभी एक आड़ू या एक सेब देता। बस, एक फल। और कभी तो वह उससे पैसे ही उधार मांग लेता था। कहता, 'आज कमाई नहीं हुई।' बड़ा पक्का बदमाश था—एक नंबर का। वह लड़की पहले तो अपने होस्टल के बरामदे में सोती थी, फिर इधर फुटपाथ वाले की गाड़ी के साथ अपना बोरिया बिछाकर सोने लगी और रोज रामधन से एक खोली लेने के लिए कहती। और रामधन उससे कहता कि खोली तो मेरे पास है, उस पर ताला लगा हुआ है, और उसकी चाबी मेरे बड़े भाई के पास है, जो अपने घर मेरठ गया हुआ है। जब वह लौटकर आयेगा, अपने को खोली मिल जायेगी। फिर वह तुम्हारा घर होगा। लड़की घर का नाम सुनकर बड़ी हर्षोन्मत्त होती। इसी तरह तीन-चार छः महीने बीत गये। रामधन का बड़ा भाई न आया, न चाबी मिली न खोली। कहीं पर खोली होती तो मिलती। वह साला तो उसे चकमा दे रहा था। एक दिन क्या हुआ कि ..."

'क्या हुआ ?

"वह लडकी न आयी।"

"नही आयी ?"

"हा, रामधन रात के तीन बजे तक बाट देखता रहा। पर वह लडकी न आयी। यह साला बहुत चकराया। अपने पुलिस के दोस्तो को लेकर इधर-उधर घूमने लगा। दस बारह पशा कराने वाला के घर भी देख डाले। लडकी कही न मिली। लडकी सुबह को लौटी और बहुत पिय हुए थी।

"हा, बहुत पिय हुए थी और उसके मुह से बदबू आ रही थी। और वह लगभग ब सुध थी। रामधन न उसे बहुत पीटा "बता साली, किधर मर गयी थी ?"

लडकी बाली, "एक मद के साथ गयी थी। वह कहता था—'मैं तुझे अपने घर म रखूगा'।'

"फिर साली उसक घर म क्या नही रही"—रामधन ने उस लात मारत हुए कहा, "यहा क्यो आ गयी ?"

लडकी ने कहा, "वह मुझे अपने घर नही ल गया। वह मुझे एक होटल म ले गया।"

रामधन ने उसके सिर क बाल पकडकर उसे नीचे गिरा लिया और उसकी पीठ पर दा चार मुक्के जार म मार। लेकिन लडकी का जसे मालूम ही न था कि उसके साथ क्या व्यवहार किया जा रहा है। वह उसी शराब के नशे मे कह रही थी, "घर नही होटल, होटल नही बरामदा, बरामदा नही साइकिल गाडी। ह भगवान मुझे छाटा सा एक घर ले दो, एक न हा मु ना सा घर, बिलकुल इतना छोटा घर, जितनी दूर तक मेरी बाह फल सकती हैं।"

फिर रामधन ने उस और पीटा, और पीटा, परतु लडकी मार खाने के बाद भी होश मे न आयी। उसी बे सुधी की अवस्था मे सो गयी और दोपहर को उठकर चुपचाप काम करने चली गयी, जसे कुछ हुआ ही नही।"

"फिर ?"

'फिर इस घटना के दो दिन बाद यूसुफ सिंधी इस फुटपाथ पर आ गया। यूसुफ को रामधन फूटवाल की बगल म जगह मिली। वह वहा अपना कपडा बिछाकर सिल्क के रूमाल बेचता था। कभी फाउटन पेन,

कभी जुराबें, कभी लिखने का कागज—यहां चालाक था। दुबला-पतला, गोरे रंग का लड़का था। आंखें बड़ी नजों में इधर-उधर घूमती थीं। बड़ी जल्दी जल्दी बातें करता था। दूसरे आदमी को सोचने का मौका ही न देता था। बड़ी जल्दी ही उसने यहां अपना रंग जमा लिया। पता नहीं, कहां कहां से चीजें निकालकर लाता था, बाजार से सदा सस्ता भाव होता था। धड़ाधड़ उसकी बिक्री होती थी। इस फुटपाथ पर मैंने बड़े बड़े तेज बनने वाले देखे, पर यूसुफ सिंधी का जवाब न था। बस दो तीन घंटे दुकानदारी करता था। एक तो सुबह दस से ग्यारह तक, दूसरे शाम को चार से छः तक। बस, सारा माल खत्म कर डालता था। फिर दिन भर क्या करता था, इसका नहीं मालूम। उस साले के पास भी सोने की जगह न थी। वह भी रामधन के पास, इस कुएं की इमारत के पीछे सोने लगा। धीरे धीरे उसने इस लड़की से मिलना शुरू कर दिया। एक बार उसे सिल्क का रूमाल दिया, फिर नौ गज की एक सूती साड़ी लाकर दी। साला था बड़ा फिजूल खर्च। रामधन की तरह कंजूस न था। बहुत जल्दी उसने लड़की को अपनी ओर कर लिया। पर ईमान की बात कहता हूं, यूसुफ उस लड़की के लिए ही था। कहता था मैं तुमसे शादी करूंगा, तेरे लिए एक खोली लूंगा, वहां एक रानी की तरह रखूंगा। अगर वह जिंदा रहता तो वह सब कुछ करता। मगर बेचारा मारा गया। जिस दिन सौ रुपये देकर परेल में एक खोली ली, उसी रात मारा गया। अगले दिन सुबह वे अपनी खोली में जाने वाले थे, जैसा कि नत्थू चनेवाले ने पुलिस में बयान दिया। वे लोग उस रात बड़ी देर तक बातें करते रहे। देर तक धीमे धीमे सुरों में फिल्मी प्रेम गीत गाते रहे। जैसे उस रात सचमुच उनका ब्याह हो रहा हो। छः महीने की मेहनत के बाद यूसुफ ने परेल में खोली ली थी। उस रात वह होटल से बहुत सा खाना लाया था जिसे लड़की, यूसुफ और नत्थू चनेवाले ने मिलकर खाया। और मुरली तो पंडित था। इसलिए उसने नहीं खाया। और रामधन ने तो कई महीनों से वहां सोना छोड़ दिया था। अब वह अपनी साइकिल गाड़ी को गायत्री के बुत के पास रखता था और वहीं सोता था। जब कभी यूसुफ सिंधी से नजर मिलता घूरकर अपनी चोटी को बल देने

लगता । मूछें तो साल के थी ही नही, कि उन्हे बल देता मगर सि[illegible]
कुछ न कहता था । एक बार यहा तक हुआ कि यूसुफ ने उस लडकी क[illegible]
रामधन की गाडी से फल खरीदकर दिये । रामधन ने चुपचाप फल [illegible]
दिये । मुह से कुछ न बोला । वही बातें करते करते यूसुफ ने लडकी [illegible]
पूछा, "आज कौन सा सिनेमा देखेगे ?" हा यह बात तो मैं भूल गया [illegible]
रामधन लडकी को कभी सिनेमा न ले गया था । मगर यूसुफ ने तो न जी[illegible]
लडकी को कितनी बार दिखाया था । उस रात को भी, जब वे सुबह
अपनी खोली मे जाने वाले थे, यूसुफ उसे सिनेमा ले गया था । सिनेमा
जाने से पहले बडे गर्व से लडकी की ओर देखकर कहा था— देखो नत्थू, मैं
यूसुफ हू, यह मेरी जुलेखा है । सिनेमा से आकर दोनो वही नत्थू के पास सो
गये। नत्थू कहता है, उसने उन्हे सिनेमा से लौटते समय नही देखा था ।
एकाएक आधी रात को उसकी नीद खुल गयी थी । लडकी चिल्ला रही थी
और यूसुफ सिंधी का सिर धड से अलग उसके सामने पडा था । और सारी
धरती खून से भरी थी ।

"रामधन ने मारा ?" मैंने पूछा ।

गोरे ने बीडी का कश लगाया, मगर बीडी बुझ चुकी थी । उसने
बीडी को धरती पर फेंककर मसल दिया । बोला मारने को फासी होनी
चाहिए । आओ, आगे चले ।

हम दोनो चुपचाप जगल के साथ साथ तार घर की ओर बढते गये ।
फुट पाथ पर बढकर एक पेड आता है । उसके तने के नीचे एक औरत
मायी पडी थी । गोरे ने उसे देखा और फिर अपने पास बुलाकर कहा,
'देख लो, यह वही लडकी है । अब औरतो के होटल से निकाली जा
चुकी है । कितने ही दिन हवालात मे रही । कितने ही दिन जाने यहा-वहा
पागलो की तरह घूमती रही । अब फिर यही आ गयी है । पर अब इसका
दिमाग ठीक नही है । यह दिन भर इस पेड के नीचे बैठी उस कुए की ओर
देखती रहती है जहा कभी यूसुफ सिंधी की हत्या हुई थी । इस जगह की
धरती खोदने लग जाती है । और जब लोग हसकर पूछते हैं, "पगली, तू
क्या ढूढ रही है ?" तो चिल्लाकर कहती है कि 'मैं अपना घर ढूढ रही
हू।"

पेड की काली छाया मे वह काली लडकी सोयी पडी थी—छाया के तले एक गहरी छाया। उसके काले सूखे उलझे हुए बाल, उसके माथे और उसकी आखो को छिपाये हुए थे। उसकी टागें घुटनो तक नगी थीं। फटी हुई साडी कमर पर उडसी हुई थी। और उसमे उसने कोई भारी वस्तु छिपाकर रख रखी थी।

मैंने गोरे से पूछा, "इसने साडी मे क्या बाध रखा है ? रोटी ?"

नही, पत्थर। यह इधर उधर से पत्थर उठाकर लाती है। फिर उन्हे कुए के पानी से नहलाती है। और जब लोग पूछते हैं, "पगली, यह तू क्या कर रही है ?" तो कहती है, "देखते नही हो—मैं अपने बेटे को नहला रही हू। नहला धुलाकर मैं उसे दूध पिलाऊगी। और फिर उसे स्कूल भेजूगी।"

इस समय उस लडकी के दोनो हाथ खाली थे। उसका पेट नगा था। और उसके चारो ओर धूल थी। यह अच्छा है कि मैं उसकी आखें नही देख सका शायद उन आखो के अदर कभी न झाक सकता। इतना साहस मुझमे न होता। वे आखे यदि कोई प्रश्न कर बैठती तो मैं क्या उत्तर देता ? यह स्त्री जो तुलसी के पौधे की भाति पवित्र और पूजनीय होती, यह स्त्री जो गुलाब की टहनी की भाति किसी आगन मे रूप रग सुगध की कली महकाती, यह स्त्री जो अपने आचल की छाया मे सैकडो बहारो को जन्म दे सकती थी, क्या इस समय अपनी छाती से एक पत्थर को चिमटाये धूल मे कटी हुई टहनी की भाति पडी थी ?

क्या ?

क्या ?

हवा के बेटे

बहुत समय हुआ, मैंने एक कहानी पढ़ी थी, जिसमे हवा के चार बेटे थे—पूर्वी अक्खड़, पश्चिमी अक्खड़, उत्तरी अक्खड़ और दक्षिणी अक्खड़। हवा के ये चारो बेटे एक बडी खोह म अपनी मा क पास रहते थ। दिन भर ये चारो बेटे धरती और आकाश के बीच अतरिक्ष मे उछलते, कूदते कुलांचे भरते रहते और सांझ होते ही अपनी मा के पास आ जाते। और मा उन्हे खाना खिलाकर अलग अलग थैलो मे बद करके खोह के चारो कोनो म लटका देती। चूंकि य चारो बेटे बडे नटखट थे, और खाना खाते ही लडने-भिडने लगते थ, और इस लडाई भिडाई से दुनिया का बडी हानि होती थी इसलिए इनकी मा न इन्हें अलग अलग थलो मे बद करने की युक्ति ढूढ निकाली थी। उनकी मा बडी विशालकाय थी। उसका अट्टहास मर्दों के कहकहे की तरह भारी और गरजदार था। जब वह अपने बेटो को डाटने के लिए अपना मुक्का खाने की मेज पर जोर से मारती, तो चारो अक्खड डर के मारे अपनी कुर्सिया से उछल पडते। वह बडी अक्खड, उग्र स्वभाव की और गरजदार लहजे म बात करने वाली औरत थी।

परतु यह बहुत दिनो की बात है। उन दिनो मैं बच्चा था, और इस प्रकार की कहानिया पढता था, और इनमे विश्वास रखता था। परतु इस समय यह कहानी मुझे इसलिए याद आयी, कि उस शाम को, जिसका मैं उल्लेख कर रहा हू, मैं अपने एक मित्र के घर म चाय पीकर लौट रहा था। मेरे मित्र का घर मेरे घर स कोई दो मील दूर था। रास्ते मे देवदार का

एक बहुत घना जंगल पडता था और गदनाले का ऊंचा पहाडी दर्रा था, जिस पर बारह महीने बर्फ पडी रहती थी। उस समय, चूंकि सूर्य अस्त ही हुआ था इसलिए पश्चिमी आकाश में उसकी लालिमा शेष थी। मेरे हाथ में एक मजबूत छडी थी। यद्यपि रास्ता बहुत कठिन था, परंतु यह मेरी आदत थी कि अपने मित्र के घर से अपने घर तक पैदल सफर करता आता था। इसलिए मैंने उत्तरी क्षितिज में उठाकर आने वाले बादलों का कुछ खयाल न किया और अपने मित्र से विदा लेकर, छडी घुमाता हुआ, अपने घर की ओर चल दिया।

पतझड के अंतिम दिन थे। किसानों ने अपनी फसलें काट ली थीं और अब कहीं कहीं पहाडी ढलानों पर फसलों के पीले ठंठल शेष रह गये थे। गहलों में चरवाहे, बंसली बजाते हुए, ढोर डंगरों को वापस ले जा रहे थे। उनके जानवरों के गले में बंधी हुई घंटियों की आवाज, उनके पांवों से उडती हुई धूल में, सोने के सिक्कों की खनखनाहट जैसी मृदु मालूम होती थी। हवा में एक प्राण पावक ताजगी थी। परंतु अभी शरद ऋतु की वह सर्दी न आयी थी जिसमें जब हवा चलती थी, तो ऐसा प्रतीत होता था, जैसे किसी ने नाक पर बर्फ की अंगुली रख दी है।

यूं ही छडी घुमाते हुए सीटी बजाते हुए, अपने आप से बातें करते हुए, मैं आधा रास्ता तय करके दवन्नार के जंगल के पास पहुंच गया। जंगल में घुसते ही मेरी भेंट डाक हरकारे से हुई उसने बताया कि वह मेरे लिए बहुत-सी डाक घर छोड के आया है। यह समाचार सुनकर मुझे और भी प्रसन्नता हुई क्योंकि इस पर्वतीय प्रदेश में डाक, सप्ताह में केवल दो बार आती है। यहां बस्तियां बहुत दूर दूर है, और आने जाने के साधन दुर्लभ। इसलिए दूरस्थ स्थान पर जब डाक आती है तो मानो शहरी जीवन का एक ताजा झोंका आ जाता है और समय बडे रोमांच से कटता है। और जब डाक नहीं आती, तो आदमी यूं अनुभव करता है जैसे किसी ने उसे घड़े तक बड़े नाज की बर्फ में गाड दिया हो।

हरकारा सलाम करके अपनी घंटी वाली छडी हिलाता हुआ, तेज-तेज कदमों से जंगल की गहराई में दृष्टि से ओझल हो गया। मैंने उत्तरी आकाश की ओर दृष्टि उठायी, जिधर से काले बादल उमड रहे थे, और अपनी

फरगल को अच्छी तरह अपन शरीर पर लपट लिया। मैंने अपनी चाल तेज कर दी, क्योंकि हवा मे शीतलता बढती जा रही थी और उत्तरी आकाश मे बादल भयकर रूप धारण कर रहे थे, और बडी तेजी से कडे नाल के दर्रे की ओर बढ रहे थे। मैंने सोचा, यदि मैं इन बादलो के आने से पहले कडे नाले को पार कर लू तो अच्छा हो, वरना बर्फ और ओलो का सामना करना पडेगा।

थोडी देर मे हवा तज चलने लगी। उसके शीतल थपडे मेरे गालो को छून लगे। और उसके तेज झोंके एक उन्मत्त आह्लाद से चीखते हुए, देवदार के वृक्षो म से गुजरन लग। और इस समय मुझे एडरसन की वह कहानी याद आयी, जिसका मने ऊपर उल्लेख किया। मैन मुस्कराकर तथा फरगल को अपन शरीर पर और अच्छी तरह लपटते हुए कहा, 'हवा का बेटा, उत्तरी झक्कड आ रहा है।"

'गाव, गाव'—उत्तरी झक्कड देवदार के लट्ठुओ को गिराता हुआ, और उसकी टहनियो का तोडता क्रोध म गुर्राया। और फिर ओल पडन शुरू हा गय। ओल और वर्षा के बडे बडे छीट हवा के तेज फर्राट, 'तरड-तरड' देवदार के वक्षो के गिरने की आवाजें 'धाय धाय' पानी गिरना और चट्टानो का टूटकर खडडो म गिरना और इन सबके ऊपर उत्तरी झक्कड की विकराल चिंघाड। प्रलय का दृश्य बध गया।

थोडी दर म चारो ओर धुध छा गयी। रास्ता दिखाइ पडना बद हो गया। कई बार मैं खडडे मे गिरते गिरत बचा। मेरे जूत भीग गय, मेरे कपडे भीग गय, मेरा सारा शरीर भीग गया। फिर भी मैं चला जा रहा था। इस जगल म, इस तूफान से कही बचाव न था। दर्रे म भी कोई सुरक्षित स्थान न था। हा, अगर मैंने कडे नाल को पार कर लिया, तो उसके दूसरी ओर मेरा घर होगा, दहकती अगीठी, आश्रय और आराम। इस विचार के आते ही मैंने अपनी रफ्तार और तज कर दी। यद्यपि धुध गहरी हो रही थी, मगर रास्ता वर्षो स जाना पहचाना था। मैं घर पहुच ही जाऊगा।

बहुत दर तक मैं धुध मे चलता रहा। धुध गहरी होती गयी। अधेरा बढ़ता गया। अधेरे के साथ-साथ तूफान भी तेज होने लगा। पर न जगल खत्म हुआ न कडे नाले का दर्रा दिखाई दिया।

'कहीं मैं रास्ता तो नहीं भूल गया !'

बड़े नाले के दर्रे में एक विशेषता है। यहां पहुंचकर जोर से आवाज लगाओ आवाज गूंजकर, चार-पांच बार घूम घूमकर वापस आती मालूम होती है।

मैंने जोर से आवाज दी, "हा-हा आ।"

हा-हा आ।' मेरी आवाज बारिश में भीगती हुई, घायल पक्षी की तरह फड़फड़ाती हुई, रात्रि के अंधकार में खो गयी। कहीं से कोई गूंज सुनाई न दी।

'हा-हा आ' मैं फिर जोर से चिल्लाया।

'गाव, गाव'—उत्तर में उत्तरी झक्कड़ की चिंघाड़ आयी।

अब स्पष्ट हो गया कि मैं रास्ता भूल गया हूं। मुझे कुछ पता न था, मैं कहां जा रहा हूं, किधर जा रहा हूं। धुंध वृक्षों में भर गयी थी, झाड़ियां में भर गयी थी खाई-खड्डों में भर गयी थी। और इस कारण खाई और खड्ड घाटी से समतल दिखाई पड़ते थे। हर घड़ी खाई-खन्दक में गिर जाने का खतरा था। हर कदम पर मौत के आंचल की सरसराहट सुनाई पड़ती थी। मेरे सारे शरीर में सनसनी थी। मेरे दांत किटकिटा रहे थे। फिर भी मैंने चलना न छोड़ा। यदि मैंने चलना भी बंद कर दिया तो ठंड के मारे मेरा रक्त भी जम जायगा।

थोड़ी दूर चलने के पश्चात मुझे सफेद सफेद धुंध में ऊंचा-सा द्वार दिखाई दिया। वह द्वार हवा में जैसे अधर था। उसके चारों ओर धुंध छायी हुई थी। मारे प्रसन्नता के मेरे मुख से चीख निकल गयी। दौड़कर मैं द्वार पर पहुंचा और जोर-जोर से द्वार खटखटाने लगा।

थोड़ी देर बाद द्वार खुला और एक बुढ़िया बाहर आयी। उसके हाथ में एक बड़ी लालटेन थी। उसने लालटेन उठाकर मुझे अच्छी तरह घूरा। फिर बड़े कर्कश स्वर में बोली, ' क्या है ?

"मुसाफिर हूं रास्ता भूल गया हूं तूफान में घिर गया हूं।"

उत्तरी झक्कड़ का एक झोंका आया और द्वार जोर से खुल गया। बुढ़िया ने अंदर जाते हुए कहा, 'अंदर चले आओ।"

अंदर गया तो एक बहुत बड़ी खोह दिखाई पड़ी—बहुत ऊंची और

बहुत गहरी। खोह की चट्टानें कई जगह से फट गयी थी, और प्राकृतिक रोशनदान से बन गये थे। इन रोशनदानो से ऊपर की चट्टाना पर जमी हुई बर्फ साफ दिखाई पड रही थी।

मैंने खोह के इधर उधर दृष्टि दौडायी। कुछ जानी पहचानी-सी खोह प्रतीत हुई। एक कोने मे झरना गिरकर खोह मे जा रहा था। अंदर ही-अदर बहुत सी चट्टाना पर विचित्र झाडिया उगी हुई थी। छत से बर्फ के बडे-बडे झाड लटक रहे थे—बिल्लौर से भी अधिक सुदर और श्वेत। खोह के बीच म एक बडी मेज थी और उसके सिरे पर एक भीमकाय युवक बैठा हुआ अपनी भूरी दाढी खुजला रहा था। उसन सफेद समूर का एक फरगल पहन रखा था। जब वह मुस्कराता था, तो उसकी आखें बिजली की तरह चमक उठती थी, और जब वह कहकहा लगाता था तो उसके मुह से ओल गिरते थे।

सहसा बुढ़िया ने कहा, "यह मेरा बेटा उत्तरी झक्कड है। अभी-अभी तुम्हारे साथ आया है।"

एकाएक मुझे सब कुछ याद आ गया। मैं हवा की खोह म था। यह मेरे सामने कुर्सी पर उत्तरी झक्कड बैठा हुआ मुस्करा रहा था।

'रास्ते मे मैंने तुम्हे खूब परेशान किया —उत्तरी झक्कड न कहकहा लगाते हुए, बडे प्रसन्नता भरे स्वर म कहा, 'मैं तुम्हे एक गहरे खडड म फेंकने वाला था, पर मैंन तुमको छोड दिया—हा-हा-हा!"

"तुम इसे खडड म फेंक देते तो मैं तुम्हे तुरत इस थैले म बद कर देता।"

अब मेरी दृष्टि दीवार पर लटके हुए बडे-बडे थैला पर गयी। चार थैले थे।

मैंने बुढ़िया से पूछा, "तुम्हारे बाकी तीन लडके कहा हैं?"

बुढ़िया न बडी कठोरता से कहा, "तुम्हे कैसे मालूम कि मेरे तीन बेटे और भी हैं?"

मैंने कहा, "मैं इससे पहले भी इस खोह म आ चुका हू।'

"कब? और कैसे?'

"एक कहानी के साथ।'

बुढिया जोर से हसी।

"तुम्हारे जसे भूख के लिए मेरे पास कोई पाचवा थला नहा है, वरना तुम्ह भी उसमे बद कर दती। इस खोह म कोई नही आ सकता। यह तो मेरे बेटे झक्कड के आने का समय था कि मैंने द्वार खोल दिया, वरना तुम्ह तो इसका द्वार भी न मिलता। चलो, कोई बात नही। तुम आ गय हो तो इस अलाव के पास आ जाओ, नही तो तुम्हारी हड्डी तक सर्दी म अकड जायगी। मैं तुम्हार लिए दूध और शहद लाती हू।"

उत्तरी भक्कड न होठ चाटते हुए कहा, 'मुझे भी भूख लगी है, मा !'

"तुम्ह भी सब कुछ मिलेगा पर तुम अपन दिन भर के काम की रिपोट तो दो न।"—बुढिया न मुझे दूध और शहद का भरा कटोरा दते हुए कहा।

उत्तरी झक्कड न कहा, "मैं उत्तरी ध्रुव से आ रहा हू। वहा देर तक आरोरा बाट पालिस की रोशनिया से खेलता रहा। सफेद रीछों का बफ पर दौडते दखता रहा। आइसबग आधे से ज्यादा पानी म डूब हुए थे और एक समुद्री जहाज बफ को काटता हुआ धीरे धीरे आगे बढ रहा था। मैंने एक हवाई जहाज क साथ दौड का मुकाबला किया, जो पहला बार उत्तरी ध्रुव पर उडने आया था। वह तेज दौडा, तो मैं भी तेज दौडा। जब वह मुझसे भी तेज दौडा तो मैं उससे भी तेज दौडा। परतु अत म वह मुझसे आगे निकल गया। वह मानव का पहला जहाज था जो उत्तरी ध्रुव पर उडा और नयी दुनिया और पुरानी दुनिया के बीच सबसे छोटा रास्ता मालूम किया।

बुढिया बडे ध्यान से सुन रही थी।

उत्तरी भक्कड ने कहा 'वहा से नीचे आकर मैं साइबेरिया के टगा म चला गया और स्लजो को खीचने वाल द्रुतगामी कुत्ता के साथ दौडता रहा। टगा म नय नय शहर बसाय जा रह थ। नय-नय कारखानों की चिमनियो से धुआ निकल रहा था और सकडा-हजारो मील बजर क्षत्र म पहली बार फसल बायी जा रही थी। और लाखा आदमी कधे स कधा मिलाकर काम कर रह थे।'

बुढिया की आखें खुशी से चमकने लगी। वह कुछ कहने वाली थी कि द्वार पर जोर से खटखटाहट हुई। वह मेरी ओर मुडकर बोली, 'यह मेरे बेटे दक्षिणी यक्कड की खटखटाहट है। मैं इसे खूब पहचानती हूँ। यह मेरा सबसे प्यारा और चहेता बेटा है। यह दक्षिणी समुद्रों पर से आता है और मेरे लिए सदा भाति भाति के उपहार लाता है।'

बुढिया भागी भागी द्वार की ओर गयी जहा उसका बेटा द्वार खटखटा रहा था। इतने म उत्तरी झक्कड अपनी कुर्सी से उठा और उसने दूध का भरा एक मटका उठाया और गटागट उसे खाली कर दिया। फिर उसने शहद का एक बडा मटका उठाया और उसे भी एक क्षण म खाली कर दिया। फिर वह निश्चित होकर अपनी कुर्सी पर आ बैठा।

इतने म द्वार पर चीत्कार सुनाई पडा। हम दोनो ने घबराकर उधर देखा। बुढिया घबरायी हुई, व्याकुल, अपने बेटे दक्षिणी झक्कड को सहारा देकर ला रही थी।

दक्षिणी झक्कड की आख नीली थी। मस्तक चौडा था। सिर पर तोते के हरे पखो की टोपी थी। गले म दक्षिणी समुद्री द्वीपो के मूगो और कौडियो की माला थी और लाल फूलो के हार। उसके विशाल वक्ष पर पाम्पास घास उगी हुई थी। और जब वह चलता था तो उसकी पग ध्वनि म लाखो चरागाहो के करोडो पशुओ के गलो की घटियो का मधुर स्वर सुनाई पडता था।

परन्तु आज उसके सिर पर तोते के हरे पखो वाली टोपी जली हुई थी। उसके गले के हार के फूल मुरझाये हुए थे। उसके वक्ष पर उगी हुई घास जल गयी थी। और जब वह चलता था तो उसके पगो से मौत का राग सुनाई पडता था। वह धीरे धीरे अपनी मा की बाहो का सहारा लिये हुए मेज की ओर बढ रहा था, और मैंने देखा कि उसके शरीर के दाहिने अग पर सब जगह आबले ही-आबले पडे हुए थे।

उत्तरी झक्कड झटककर उठ खडा हुआ। उसका चेहरा क्रोध से तप कर लाल सुर्ख हो गया, 'तुम्हे किसने मारा है, भाई? मैं उस पाजी का सिर तोड दूगा, उसे जिंदा बर्फ म गाड दूगा।''

दक्षिणी झक्कड हाफता हुआ एक कुर्सी पर बैठ गया। मा भागी भागी

उसके लिए दूध और शहद का मटका लायी। दूध और शहद पीकर उसका जी जरा सभला तो मा न पूछा, "मेरे बट को लेकर धरती से आकाश तक आज तक कोई परास्त न कर सका। फिर बता वह कौन दुष्ट अन्यायी है, जिसन तेरे शरीर पर य घाव और आवले डाले। मैं उसका खून पी लूगी।'

दक्षिणी पवनखंड ने मा को जबर्दस्ती कुर्सी पर बिठाते हुए कहा, "आवेश मे न आओ। पहले मेरी बात सुन लो। मैं दक्षिणी ध्रुव से आ रहा था। मैंने ह्वेल मछली का शिकार करने वाले जहाजों की मदद की। समुद्र मे लहरें पैदा की। लहरो मे रास्ते बनाये। गर्म पानी की धारा को ठडे पानी मे ले गया और फिर दोनो को मिला दिया। फिर मैं दक्षिणी द्वीपो मे नारियल के वक्षो से खेलता रहा। सुन्दर स्त्रियो के हवाइयन नृत्य देखता रहा। मैं बादलो को उडाकर ब्राजील के वनो मे ले गया और हवाना मे लाखो घोडो की टापो के साथ दौडता रहा। दौडते दौडते जब मैं थक गया और तीसरा पहर होने लगा तो मैंने घर की राह ली। हौले हौले चलता हुआ जब मैं नवादा के रेगिस्तान से गुजर रहा था, तो सहसा किसी ने एक गोला मेरे ऊपर फेंका। एक क्षण के लिए इतना प्रखर, प्रचड प्रकाश फैला कि उसके सामने करोडो बिजलियो की कौंध फीकी थी। अगले क्षण ऐसा ताप बढा जसे सूर्य पृथ्वी पर उतर आया हो। होले-होले एक पीले, नारगी और कत्थे रंग का विषैला बादल उठा और मेरा गला घोटने लगा। मैं चीखता, चिल्लाता खासता नवादा रेगिस्तान से भागा। लेकिन यह देखो, मेरे बदन पर फिर भी ये आवले पड गये और मेरे सिर की खाल लाल होकर उतरती जा रही है।

बूढी मा के नेत्र सजल हो उठे। उत्तरी अक्खड भावना से विह्वल होकर भाई की ओर बढा ही था कि दक्षिणी अक्खड चिल्लाया, 'मुझे मत छूना, मेरे पास मत आना। मा का सहारा लेकर ही मैंने भूल की है। लोग कहते हैं उस विषले गोले का धुआ भी विषैला है। जिससे भी छू जाता है, उसे भी गलाने लगता है।'

मा कुछ कहने वाली थी कि द्वार पर फिर खटखटाहट हुई। मा मुडकर द्वार की ओर जाने लगी। द्वार खुला और फिर एक चीत्कार, पहली से

भी अधिक मार्मिक और कातर सुनाई दी। हम सब द्वार की ओर देखने लगे कि अब क्या आफत टूटी। मां फूट-फूटकर विलाप कर रही थी और अपना सिर पीट रही थी, और उसके पीछे पीछे उसका तीसरा बेटा पूर्वी घक्कड़, लंगड़ाता हुआ चला आ रहा था। उसके सिर के बाल एकदम सफेद हो गये थे, और शरीर में खाल उतरकर लटक रही थी, और बाहों और टांगों से रक्त बह रहा था। और वह एक आंख से अंधा हो चुका था।

पूर्वी झक्कड़ एक चीनी था। वह अपने घर में सबसे अधिक बुद्धिमान गंभीर और शांत-स्वभाव माना जाता था। उसकी रिपोर्ट, जो वह मां को सुनाता था, सबसे अधिक रोचक और विचारपूर्ण होती थी। उसने बहुत कुछ देखा सहा और अनुभव किया था—दासता और दरिद्रता, शोषण और विदेशी शासन लोहे, कोयले और चाय के लिए मानव का व्यापार। उसने बहुत से आंसू देखे थे। बहुत सी कठिनाइयां झेली थीं। बहुत-सी छोटी छोटी प्रसन्नताएं और नन्ही नन्हीं मुस्कराहटें जैसे काम करते-करते थक जाने पर जुगनू की भांति दमकता हुआ गीत प्रेम से भरपूर एक सजीली दृष्टि यौवन की महक में बसा हुआ किसी का कंपकपाता स्पर्श। उसने जापान में चेरी की कलियों से कहानियां सुनी थीं। ह्वांग हो के चीनी मल्लाहों से मेहनत का राग सुना था। बर्मा में धान के हरे भरे खेतों के बालों में बड़े प्रेम से उंगलियां फेरी थीं। भारत के कारखानों में मजदूरों को इंद्र धनुष से रंगीन वस्त्रों के ताने-बाने पूरते देखा था।

वह हर रोज आकर अपनी मां को जीवन और श्रम, साधना और महनशीलता की कहानियां सुनाता था। उसकी मुस्कान में विशाद की एक हल्की सी धनक होती थी और उसके शरीर से लौंग, इलायची जीरा और उष्ण प्रदेशों के घने जंगलों में खिलने वाले अजनबी फूलों की महक आती थी। उसकी वाणी में बाली द्वीप की स्त्रियों के सौंदर्य की-सी कोमलता थी, और जब किसी की बेवफाई का जिक्र करता, तो उसकी आंखों में इंडोनेशिया के ज्वालामुखी पर्वतों का लावा चमकने लगता। यह तीसरा बेटा—पूर्वी झक्कड़, सचमुच सब बेटों से निराला अनोखा था। आज तक उसे किसी ने लड़ते झगड़ते न देखा था। उसने अपने को यह अवसर नहीं

दिया था कि वह उसे थैले मे बद करे।

मा ने चिल्लाते हुए कहा, 'यह तुम्हे हुआ क्या है? तुम तो कभी किसी से नही लडते थे। मैं तो तुम्हें अपना सबसे सभ्य और सहनशील बेटा कहती थी।

पूर्वी झक्कड ने कराहते हुए कहा, 'बडा दर्द हो रहा है, मा! ऐसा दर्द तो आज तक मैंने कभी नही महसूस किया। बडे-बडे दुख उठाये हैं मैंने, पर ऐसा दुख आज तक नही देखा।"

"किसने तुम्हे यह दुख दिया?" उत्तरी झक्कड सहसा क्रोध मे आकर मुक्का तानते हुए बोला।

"मुझे मालूम नही।

"कैसे मालूम नही? तुम्हे मालूम होना चाहिए।' दक्षिणी झक्कड आगे बढकर बोला।

पूर्वी झक्कड ने हौले हौले कहना शुरू किया, 'यह सब कुछ बहुत ही साधारण रूप मे शुरू हुआ। मैं यानसी नदी के किनारे किसानो को चावल के खेत तयार करते देख रहा था। फिर वहा से आकर जापान मे एक चरवाहे की बासुरी का गीत सुनने लगा। फिर वहा से प्रशात महासागर चला गया। मैंने जापानी नौकाओ के बादबान खोल दिये और लहरो मे अठखेलिया करके मछलियो को बुलाने लगा। बडी सुहावनी धूप थी। समुद्र इतना शात था, उसका रग इतना निखरा निखरा नीला था कि मुझे उसकी गहराइयो मे रग रग के मूगो के गलीचे बिछे दखकर नीद आने लगी। सहसा एक जोर का विस्फोट हुआ। समुद्र का पानी हजारो गज ऊपर को उछला। समुद्र मे एक गहरा सा भवर नजर आया और ताड, नारियल पुष्पो और लताओ, अबोध बालको और सुदर, कजरारे नैनो वाली कामिनियो से सुसज्जित सुशोभित एक छोटा सा द्वीप, जिसके तटो से सौदर्य और श्रम की महक आती थी, सहसा मेरी आखो के सामने उस भवर के गर्भ मे समा गया। मुझे अभी तक वहा के वासियो की हृदय-ग्राही चीत्कारें याद है।'

पूर्वी झक्कड ने अपना सिर अपने हाथो मे ले लिया और मेज पर झुक गया।

खोह मे कुछ क्षणो तक पूर्ण निस्तब्धता रही। केवल झरने के गिरने की आवाज सुनाई देती रही।

कुछ क्षण पश्चात उसने अपना सिर उठाया। उसकी एक आख जल चुकी थी परतु दूसरी म एक आसू अभी तक झलक रहा था।

उसन धीरे से कहना आरभ किया, 'दूसर क्षण एक बहुत बडा बादल, गोभी के फूल की भाति फैलता हुआ अतरिक्ष के बीच मे चक्कर खाने लगा। उसका रग पीला, नारगी और ऊदा था। उसम विषैला धुआ भरा था। वह विषैला धुआ मेरा गला घोटने लगा और मैं वहा से चीखता-चिल्लाता भागा—कोरिया से जापान, जापान से फिलीपीन, फिलीपीन से सिंगापुर और सिंगापुर से आस्ट्रेलिया। अचानक आस्ट्रेलिया के एक रेगिस्तान मे मैंने फिर वही विस्फोट देखा—वैसी ही चमक वैसा ही धडाका, वैसा ही धुआ। यह जो तुम मेरी खाल जगह जगह से उधडी हुई देखत हो, यह उन्ही विस्फोटो का परिणाम ह।

सहसा दक्षिणी झक्कड अपन पूर्वी भाई के सामने जा खडा हुआ और उसे अपने शरीर के घाव और आवले दिखाये।

"क्या तुम्हारे क्षेत्र म भी इसी प्रकार के विस्फोट हो रहे ह?' पूर्वी झक्कड ने चौंककर पूछा।

दक्षिणी झक्कड ने खामोशी स अपना सिर झुका लिया। बूढी मा ने व्याकुल होकर बडे चिंतित स्वर म कहा, "यह ससार को क्या होता जा रहा है? इससे पहले भी मेरे बेटों ने मानव के युद्ध देखे हैं—जब हवा म तीर सनसनाते थे जब लोहे की गोलिया चीखती हुई कान के पास से गुजरती थी, जब गोले फटकर तबाही फैलाते थे। परतु मेरे बेटो के शरीर पर उनका कोई असर न हुआ था। अबकी बार यह कैसी आग है, जो सैकडों मील तक सब कुछ झुलसा डालती है।'

"जब स ससार की सृष्टि हुई है, हवा के बेटे आज तक घायल नहीं हुए।' उत्तरी झक्कड ने विस्मित स्वर म कहा।

"परतु अब क्या होने वाला है?"

'सब मर जायेंगे हवा के सब बेटे मर जायेंगे।

इम सबने घूमकर देखा, 'यह हवा का चौथा बेटा, पश्चिमी झक्कड

बोल रहा था। वह द्वार पर खड़ा, एक सुंदर सूट पहन और हाथ म हैट पकड़े, हम सबकी ओर एक व्यग्यपूर्ण मुस्कान क साथ देख रहा था। वह हवा क बेटा म सबसे अधिक सुंदर और सजीला था। उसकी वाणी में आकषण उसकी आखो मे नश की चमक, उसके होठो पर मुस्कान और उसक पावो म नाच की थिरक थी। वह हौले हौल एक नयी धुन गुनगुनाता हुआ खाट क फश पर अपने नय बूट बजाता हुआ, नाच की गत पर थिरकता हुआ हमार पास आया। हमार पास आकर उसन अपनी पतलून की जब से चादी का एक प्लास्क निकाला, और उसे अपन मुह स लगाकर गट-गट शराब पी गया। फिर एक सुगधित रेशमी रूमाल स उसने अपना मह पोछा और हमारी ओर दखकर नाटकीय ढग से कहन लगा, 'सब मर जायेंगे हम सब मर जायेग, मानव। मानव ने मरने का निश्चय कर लिया है। वह इस युद्ध म हम सबका मारकर स्वय मर जायेगा।"

'तुम क्या कह रह हो, मर बच्चे ? मा अत्यत भयभीत और व्यथित हाकर बाली 'आज कैसी साम आयी है ? मेरा जो बेटा आ रहा है, मौत का सदश लकर आ रहा है।'

म जिधर से आ रहा हू" पश्चिमी मक्कड उसी लहर म बोलता गया वहा दिन रात मोर्चेबन्दिया हो रही है, खाईया खोदी जा रही हैं, धरती क गम म हथियारो की फक्टरिया स्थापित की जा रही हैं, बम-बार और लडाकू हवाई जहाजा क लिए विशाल अडडे बनाय जा रहे हैं कारखाना म विषली गैसो क सिलेंडर ढल रह है। इस बार मानव जाति एक विस्फोट स अपन-आपका उडा दन वाली है। इसलिए पियो, मजे स पियो, जी भर कर पियो।'

पश्चिमी झक्कड ने फिर वही चादी का फ्लास्क निकाला, और उसम शराब उडेलकर फिर मुह स लगा लिया।

मा न कहा, अगर हवा के बेट मर गये, तो जिंदा कौन रहगा ?"

उत्तरी झक्कड बोला "हम धरती की कोख म बीज डालत हैं, फूलो म सुगध पदा करत है। पहाडो पर जगल उगात हैं और तरसत हुए मदानो पर वर्षा बरसात हैं। हम शुष्क और उष्ण प्रदेशो मे शीतल पवन का झोंका बनकर जात है और जमा दन वाली सर्दी को अपन सास की आच स

निघलान है। बहार हमारे दम में है, और वनस्पति का अस्तित्व हमारी सांस से है। मटी का खमीर और अंगूर की शराब हमारे प्रभाव से है। जब कोई खिड़की के नीचे खड़ा होकर अपनी प्रेयसी के लिए वायलिन बजाता है, तो वायलिन के उस राग को हम उसकी प्रेयसी के कानों तक पहुंचाते हैं। इसलिए रागिनी का अस्तित्व हमारे दम में है और प्रेम के प्राण हमारे दम से हैं। और मानव हममें इस प्रकार रहता है, जैसे मछली जल में। इसलिए अगर उसने हमें विष देकर मार डाला तो स्वयं भी एक क्षण जीवित न रह सकेगा।"

अब हवा के चारों बेटे मेरी ओर देख रहे थे।

मां बोली, "हम तो हवा हैं, पर तुम मानव हो। तुम क्या कहते हो? इस विपत्ति के टालने का उपाय क्या है?"

"कोई उपाय नहीं, कोई उपचार नहीं। हम सब मर जायेंगे।" पश्चिमी झक्कड़ शराब के नशे में लड़खड़ाकर बोला।

उसकी मां ने क्रोध में उसको घूरा और बोली, "इसके बाद भी अगर तुमने अपनी बकवास बंद न की तो मैं तुम्हें थैले में बंद कर दूंगी।"

पश्चिमी झक्कड़ ने अपने होठों पर अंगुली रखकर कहा, 'शिशु! बहुत अच्छा मां, मेरी अच्छी मां, अब मैं कुछ नहीं कहूंगा।'

अब हवा के चारों बेटे मेरी ओर देख रहे थे।

मैं अपनी कुर्सी पर बड़ी विकलता में कसमसाया। अंत में मुझे बोलना ही पड़ा।

मैंने कहा, "मैं अधिक कुछ नहीं जानता। परंतु विद्वानों और ज्ञानी पुरुषों से सुना है कि इस धरती और आकाश के बीच में कहीं स्वर्ग है। उसके अंदर एक वृक्ष है। यह ज्ञान का वृक्ष है।'

"वही पेड़ न, जिसका फल आदम ने खाया था और फलस्वरूप स्वर्ग से निकाला गया था?'

'हां! अगर तुम मुझे वहां ले चलो, तो शायद उस वृक्ष से इस संकट से बचने का कोई उपाय मालूम हो सके।"

"तो यूं कहो कि तुम फिर उस वर्जित वृक्ष का फल खाने पर तुले हुए हो।" दक्षिणी झक्कड़ ने मेरी ओर गहरी दृष्टि से देखते हुए कहा।

"कोइ हज नही है वल्कि मैं तो समझता हू कि मानव की महानता इसी मे निहित है।"

"पागल हुए हो ? मदा के लिए नरक म झोक दिये जाओगे।"

"इसकी तुम चिता न करो। केवल मुझे वहा ले जाओ। फिर मैं सब देख लूगा।"

उत्तरी पक्कड न अपनी मा की ओर देखा। मा ने धीरे स अनुमति म सिर हिलाया। कहने लगी 'यह इसके जीवन मरण का भी तो सवाल है। तुम इसे ल जाओ।

दूसरी सुबह उत्तरी पक्कड ने मुझे अपन कधे पर बिठाया और मदानो, जगलो, रगिस्तानो और पवतो के ऊपर उडन लगा। यहा से समुद्र, ताल और नदिया चादी की लकीरें दिखाइ पडती थीं। हम लोग हजारो मील ऊपर ही ऊपर चल जा रह थ।

"क्या स्वग आकाश म ह ?'

नही वह धरती क भीतर है। परतु इसका ज्ञान बहुत कम लोगो का है क्योकि उसका द्वार बहुत ऊचा है। उसक द्वार पर एक पक्षी का पहरा ह। इस पक्षी का एक पख जीवन और दूसरा पख मत्यु है। उस द्वार की आधी मेहराब बफ की बनी हुइ है और आधी धूप की। उस द्वार क दो पट हैं—एक दिन का दूसरा रात का। यह द्वार बडा ही विचित्र है। जब मनुष्य इसम म गुजरता है तो यू मालूम होता है जस मौत क मुह म म गुजर रहा हो और जीवन की ओर जा रहा हो।'

मैंन कहा 'मुझे ज्ञान का वक्ष दखने की बडी चाह है।'

उत्तरी झक्कड न कहा दखन म यह वक्ष खास विचित्र नही है। यह एक सीधा-सादा वक्ष है पर बहुत ऊचा। इसका तना लबा और रुपहला है। सार तन पर कहा कोई टहनी नहीं, जिसका सहारा लकर मनुष्य इस पर चढ सक। बस दढ निश्चय और निरतर परिश्रम से इस पर चढना पडता है। चाटी क बिलकुल ऊपर जाकर इस वक्ष म एक टहनी फूटी है। इस टहनी के ऊपर केवल एक पत्ता लगा हुआ है। यही वह वजित फल है।'

"मुझे ले चलो, तुरत वहा ले चलो।" मैं अधीर हाकर बोला।

"अब हम अपनी मजिल के निकट आ रहे हैं"—इतना कहकर उत्तरी झक्कड ने बादलो मे गोता मारा। और मुझे सुनाई पडा जसे चारो ओर आगन बाजे बज रहे ह। मैंने महसूस किया जसे हल्की-हल्की सुगध चारो ओर फैल रही है। धूप और कपूर का धुआ चारो ओर स मेरी चेतना पर छाता जा रहा है। मेरी आखें आप ही आप बद होने लगी। थोडी देर बाद जब मेरी आखें खुली तो मैंने अपने को स्वग के उद्यान म पाया।

यहा जितने फूल थे, सबके आखें थी। वे तितलियो की भाति अपनी टहनियो से उड सकते थे, इसलिए उन्हे तो तोडने की आवश्यकता न पडती थी। यहा जितने पशु थे वे वक्षो स फलो की भाति लगे हुए थे। यह मोर का वक्ष था। इसका हर पत्ता मोर का पख था। यह कोयल का वक्ष था, इसका हर पत्ता कोयल की भाति चहचहाता था। यह बदर का वक्ष था, इसका हर पत्ता बन्दर की भाति एक टहनी से दूसरी टहनी पर उछलता कूदता फिरता था। यहा हर सुगध का रग था और यहा की परिया सुगधो के रगीन वस्त्रो म लिपटी फिरती थी। उनके शरीर बिल्लौर की भाति पारदर्शी थे।

परियो की रानी मेरे पास आयी। बोली "तुम ज्ञान का वक्ष देखना चाहते हो?"

'हा'—मैंने सिर हिलाकर उत्तर दिया।

"ज्ञान का वक्ष देखने का एक दड होता है। तुम उसे भोगने को तैयार हो?"

"हा, वह दड क्या है?"

"तुम्हे प्रेम त्यागना होगा।"

"त्याग दूगा।"

"विलास?"

"वह भी त्याग दूगा।"

'यमन?'

"सब त्याग दूगा।

"देखो, ज्ञान के वक्ष पर चढने चढते तुम्हारे वस्त्र तार तार हो जायेंगे

तुम्हारा शरीर काटा स छिन्‍ जायगा, तुम्हारी हथलिया और तुम्हार तलवा म रक्त बहन लगगा।'

काई चिता नही।

तुम्हार लिए न्नि नही हागा, और रात नही होगी। तुम न धूप म बैठ सकाग न छाव म, न राग दख सकोग, न नृत्य दख सकाग।"

मुये सब कुछ मजूर है।'

तो आओ मर साथ।'

ज्ञान का वृक्ष बहुत ऊचा निक्ला—मेरी कल्पना, मर अनुमान स भी बहुत ऊचा। बादल उसक मध्य म मडरा रह थे, और वह उनस भी बहुत ऊपर आसमाना म बात करता दिखाई पडता था। उसकी चाटी पर एक टहनी बाह की तरह निक्ली हुई थी, और उसक साथ एक पत्ता लटक रहा था—पान की शक्ल का, या आदमी के दिल की शक्ल जसा।'

यही वह वर्जित वक्ष है।' परिया का रानी बाली "और इसी क पत्ते पर तुम्हार प्रश्न का उत्तर लिखा है।"

उत्तरी झक्कड न कहा, "हवाए मर जायेंगी, अगर तुम इस प्रश्न का उत्तर नही लाओग।

पान के वक्ष पर चढना अत्यत कठिन था। दा हाथ ऊपर चढता था, ता एक हाथ नीचे फिसल आता था। बीच म बडी बडी रुकावटें आयी। पहले ता प्रेम आया जा मेर नयना की ज्योति और आत्मा का शृगार था और जिसस मेरा जीवन स्पदित था। उसे छोडकर आगे बढना पडा। आशा के सारे आमू नटक देन पडे। एक को छाडकर शेष सब इच्छाए, कामनाए त्यागनी पडी। फिर चारो ऋतुए आयी और अपन समूचे हथियार लायी। बहार क फूला न इशारे किये। फिर गर्मी एक चिलचिलाती प्यास की भाति शरीर क अग अग म घुसकर बछिया का तरह वार करती रही। फिर जाडा आया और हड्डिया को बजान लगा और बर्फीले भाला से शरीर को गोदन लगा। फिर शहतूतो की सुगध आयी और अपन पास बुलान लगी।

'हवाए मर जायेंगी हवाए मर जायेंगा —नीच स उत्तरी झक्कड चिल्लाया।

जब शहतूत की सुगंध आयी तो बहुत से विचार आये, बहुत से संशय, बहुत-सी शंकाएं आयीं—'इस तपस्या का कोई लाभ? इस बलिदान का कोई उद्देश्य? इस उम्र को यूं गवाने का कोई फल?' और कानों में भांति-भांति के संगीत बजने लगे, कितने ही कमल से सुंदर पगों के पायल झनक उठे कितनी ही निगाहों की कोमल भावनाओं को मोहने लगीं, कितने ही खजाने के मोती परों में बिखर गये।

मोह और माया की समस्त मोहकताएं, अपना आंचल पसारकर खड़ी हो गयीं।

परंतु उत्तरी हवकड़ की आवाजें बराबर कानों में आ रही थीं, "हवाएं मर जायेंगी, हवाएं मर जायेंगी।'

चढ़ते चढ़ते जब सब छूट जाते हैं, और मार्ग में कोई नहीं आता तो नीरवता और निस्तब्धता आती है। ऐसा अनुभव होता है जैसे सब कुछ समाप्त हो गया है, सब कुछ शून्य के गर्भ में समा गया है, कोई साथी नहीं, कोई संगी नहीं कोई साथ में सांस लेने वाला नहीं। तुम हो, और कोई नहीं है। मनुष्य जब इस अनुभूति से गुजर जाता है तो बुढ़ापा आता है। शरीर शिथिल और अंग निःशक्त हो जाते हैं। मंजिल एक गज रह जाती है परंतु साहस जवाब दे जाता है—'छोड़ दो, विश्राम करो! छोड़ दो विश्राम करो!

चोटी एक फुट रह जाती है परंतु संकल्प जी छोड़ बैठता है—छोड़ दो, विश्राम करो छोड़ दो, विश्राम करो! आंखें बंद कर लो और इस तन से नीचे रपटते चले आओ। नीचे रपटते चले जाने में कितनी राहत, कितना आनंद है!"

'हवाएं मर जायेंगी, हवाएं मर जायेंगी।

मैंने अंतिम प्रयत्न किया हाथ बढ़ाकर कंपकंपाती अंगुलियों से टहनी का पत्ता तोड़ लिया।

पत्ते का तोड़ना था कि ज्ञान का वृक्ष बैठता चला गया, धरती के गर्भ में धंसता चला गया। उसकी ऊंचाइयां धरातल में समाने लगीं। और दूसरे क्षण मुझे महसूस हुआ, मैं उसी खोह में हूं। मेरे हाथ में इंसान के दिल की शक्ल का एक पत्ता है। और पत्ते पर केवल एक शब्द लिखा हुआ है।

"शांति।"

"शांति ?" मैंने निराश होकर कहा, "इस एक शब्द से क्या होगा ?"

"मुझे दिखाओ"—मेरे कानों में एक मधुर-सी आवाज आयी। मैंने मुड़कर देखा परियों की रानी खड़ी थी। मैंने पत्ता उसके हाथ में दिया।

परी ने उस पत्ते पर अपने हस्ताक्षर किये और मुझसे कहने लगी, "अब इस पत्ते को तुम सारी दुनिया में ले जाओ और घूम घूमकर लोगों से हस्ताक्षर कराओ।"

"मगर हस्ताक्षरों से क्या होगा ?" मैंने फिर निराशा के स्वर में पूछा।

परी ने मुस्कराकर कहा, "जब शब्द से शब्द जुड़ता है तो कालिदास और शेक्सपीयर बनते हैं। पत्थर से पत्थर जुड़ते हैं तो ताजमहल बनता है। जब हस्ताक्षर से हस्ताक्षर जुड़ेंगे, तो वह जंजीर तैयार होगी, जिसमें संसार के सारे युद्ध चाहने वाले बंध जायेंगे।"

सहसा मेरी समझ में सब कुछ आ गया। मैंने शांति के उस पल्लव को अपने वक्ष से लगाया और खोह से बाहर निकल आया।

खोह के बाहर तूफान थम चुका था। चारों ओर सुनहरी धूप खिली हुई थी। दूर दूर तक घाटियों में शांति की घंटियां बज रही थीं।

प्रखर ज्योति

बचपन की कहानी है। मेरे माता पिता मर चुके थे और मैं अपने बाबा के पास रहता था। बाबा गाव के स्वामी थे और उनकी गणना गाव के धनी जमीदारो म होती थी। उनके व्यक्तित्व की छाप आज भी हृदय पर अकित है। याद आती है तो शरीर म एक झुरझुरी-सी दौड जाती है। गठा हुआ शरीर, लबा कद, गलगुच्छे, आखें कबूतर की तरह लाल-लाल और वाणी म शेर की सी गरज—एसे मनुष्य को देखते ही मनपर आतक-सा छा जाता है। आजकल एसे आदमी कम ही देखने म आते हैं। मुझे याद है जब गरजकर वे मुझे डाटते थे, तो मेरा सारा शरीर थर्रा उठता था, और यदि हमारा बूढा नौकर जुम्मन मुझे न बचा लिया करता, तो अब तक मैं अवश्य ही दूसर लोक म होता।

उन दिनो मै तीसरी कक्षा म पढता था। मेरे दादा मुझे किसी के साथ खेलने नही देते थे। मेरा घर दूसरो म बिलकुल अलग थलग, एक ऊचे टीले पर था। मेरे बाबा दिन भर शराब पीते थे और जब शराब नही पीते थे, तो हुक्का पीते थ, और जब हुक्का नही पीते थे तो सोते थे। इतने बडे घर म दो नौकर और एक माई थी, जिसका पीला मुरझाया चेहरा देखकर चुडैल की याद आती थी। प्राय वह बैठी बडबडाती और अपने से बातें करती थी और कभी अपने पीले गदे दात निकालकर एसा वहशियाना कहकहा लगाती थी कि मेरे शरीर के रोगटे खडे हो जाते थे। अक्सर वह मुझे स्वप्नो मे दिखाई देती। मेरे ऊपर अपने पील-पीले दात

निकाले चढी चली आती। जब वह दिखाई न देती, तो बाबा की लाल लाल क्रोधित आखें घूरती दिखाई देती। मैं चीख मारकर बिस्तर से उछल पडता। फिर जुम्मन मुझे पुचकारकर सुलाता और घटा तक मेरे पास बैठा रहता था। मैं अपनी नन्ही-नन्ही उगलियो से उसके अगूठे को पकडकर सोने की कोशिश करता और अत मे उसकी थपकियो से गहरी नीद सो जाता।

मैंने अपने पिता को न देखा था। जब उनकी मृत्यु हुई, तब मैं माता के गर्भ मे था। जब मेरी माता चल बसी, तब मैं केवल तीसरी कक्षा मे आया था। इसलिए माता पिता के लाड-प्यार से मैं वचित ही रहा। मा की याद भी बहुत धुधली धुधली है। बार-बार कोशिश करता हू, परतु उनकी आकृति आखो के सामने नही आती। मैं याद नही कर सकता कि वे कैसी थी। केवल उनकी गर्म गर्म गुदगुदी गोद की कल्पना कर सकता हू और उनके भरे भरे स्तनो की जिनसे मैं दूध पीता था, और उस सुगध को सूघ सकता हू, जो उनके शरीर से निकलती थी। वह सुगध अभी तक, वृद्ध अवस्था के बावजूद मेरे नथुनो म बसी है।

परतु जब मैं बच्चा था, तब माता पिता की याद नही सताती थी। एक नीरवता, एक अधकार, इस घर मे छाया मालूम होता था। कमरे बहुत लबे चौडे दरवाजे बहुत ऊचे ऊचे और छतें आकाश से बाते करती मालूम होती थी। हर समय ऐसा लगता था जैसे सब कुछ टूटकर सिर पर गिर पडेगा। इस प्रकाशहीन सूनेपन मे अपना मास भी अजनबी मालूम होता था।

घर से कुछ दूर नदी किनारे एक पनचक्की थी। पानी उसके पाटो के तले से निकलता था, और दूसरी ओर ढलान पर सफेद झाग उडाता हुआ ओसीले मोतियो की फुहार बिखेरता, नीचे घाटी की ओर बहता था। पन चक्की के पाट अब चलते न थे। पर किसी जमाने म यह पनचक्की चलती थी। परतु मेरे बाबा को सहन न था कि उनके घर के इतने निकट पन चक्की हो और गरीब किसान और नीच जाति के लोग आकर अपना आटा पिसवायें स्त्रिया वहा इकट्ठी होकर बातें करें, ठिठोली करें और शोर मचायें। इसलिए पनचक्की बद हो चुकी थी, और पनचक्की के अदर

भाग की झाडिया उगी हुई थी, जिनमे नीलराज की कोमल बेल के चौडे-चौडे पत्ते और बडे बडे फूल विस्मय स आखे खोले दिखाई पडत थ। कदाचित वह यह न मालूम कर सके थे, कि वे यहा क्या खिले है, जहा कोई उन्ह नही देख सकता। यदि व किसी बाग म, किसी चश्मे क किनारे, किसी बाट म उग होन तो भी कोई बात होती ! परतु यहा मै अवश्य इन्हे दखता था। साझ के विषादपूर्ण वातावरण म जब हवा के पाक हल्की हल्की सिसकिया लेत है, और दिन भर की थकी हारी तितलिया भग के कामल तुरयो और नीलराज के फूलो से लिपट जाती है, उनकी मादक सुगध से वे मुग्ध होकर सो जाती हैं तब मैं घास पर लेटकर उन्ह दखता। मै उनकी गहरी नीद के नशे को अपनी पलको पर महसूस करता। फिर झींगुर और मजीरे बोलने लगते। पानी के किनारे मढक टर्रान लगत। और यह नशीला, गुजारमय उदास वातावरण मेरी पलको को इतना भारी कर दता, कि मैं वही सो जाता। जुम्मन ने बहुधा मुझे वही, चक्की क पास सोया पाया था। वह मुझे यू सोता दखकर चुपक स गाद म उठा लता और घर लाकर बिस्तर पर सुला दता। और सुबह जब मैं उठता, तो यह जानकर बडा हैरान होता कि मैं घास पर नही, मखमल के गद्दे पर सोया पडा हू। न पानी है, न फूल है, न मढक है न तितलिया है। वही साय-साय करता हुआ घर है, वही ऊची ऊची दीवारें ह, और वही बाबा की लाल-लाल डरावनी आखें है।

कभी कभी म पनचक्की स भी आगे चला जाता था। घाटी पर चढ कर, और पुराने मदिर की टूटी फूटी इमारत स गुजरकर, उस बडी चट्टान के पास जा पहुचता, जो नदी के पश्चिमी किनारे पर थी। चट्टान खडी थी और पानी, बूद-बूद करके, ऊपर से नीचे गिरता था। इस पानी म गधक और चूना घुला हुआ था, जिसस धरती पर तिकोनी और चौकोनी शक्लें बन गयी थी। चट्टान पर इतनी काई जमी हुई थी कि छून म मखमल और साबुन के झाग-सी कोमल लगती थी। काई कही स हरी, कही स ऊदी, कही से गहरी कासनी थी। यहा पर एक छोटी-सी खोह भी थी, जिसके अदर किसी ने चारो ओर सिंदूर पात रखा था। मैं अक्सर सिटलो और छिपकलिया को यहा सोत हुए देखता। कभी कभी कोई जगली

खरगोश अपने लंबे लंबे कान खड़े किये हुए हवा को सूंघता दिखाई देता और फिर एक छपाके में, सफेद ऊन का गाला बना हुआ, दौड़ता हुआ आंखों से ओझल हो जाता।

बस, यह पनचक्की, यह बूंद बूंद गिरता पानी और यह खोह—मेरे एकांत के साथी थे। यही मेरे संगी, सहचर और स्नेही थे। घर में मेरा जी न लगता क्योंकि बाबा स्कूल के लड़कों के साथ भी खेलने न देते थे। घर से बाहर किसी मनुष्य की शक्ल दिखाई न देती थी—इतना अलग-थलग था यह घर। यह भी पता न लगता था कि स्कूल से लौटने के बाद लड़के कहां समा जाते हैं। क्या उनके घर में भी यही भयानक एकांत है!

एक दिन की घटना है कि मैं दोपहर तक अपने साथियों के साथ खेलता रहा। उस समय पेड़ का हर पत्ता, घास का हर गुच्छा, जंगल का हर टिड्डा मेरा मित्र बन जाता अपने और जंगल के जीवन के उन रहस्यों का उद्घाटन करता, जो मानव ने आज तक कानों में नहीं सुने और आंखों से नहीं देखे। कितनी रोचक कितनी महत्त्वपूर्ण और कितनी बहुमूल्य होती हैं वे कहानियां, जिन्हें हम बड़े होकर भूल जाते हैं। काश, हम उन्हें याद रख सकें उन्हें उसी क्रम, उसी सच्चाई, उसी भावपूर्ण ढंग से संसार के सामने रख सकें, जिससे हमने बचपन में उन्हें सुना था। तब शायद यह जीवन बदल जाये यह सारा विश्व बदल जाय, उसका अधःपतन, उसकी प्रकाशहीनता उसकी अज्ञानतापूर्ण स्वार्थपरता बदल जाय, वह एक नये प्रकाश, नये रूप और नये आह्लाद में जगमगा उठे। काश, मानव बचपन की उन कहानियों को याद रखे जीवन के उस रोमांचकारी रहस्य को याद रखे जो उसने जल की कांपती हुई क्वारी बूंद से, नीलराज की अलबेली कली से घास के कोमल अंकुर से और हवाओं में उड़ते हुए पतझड़ के अंतिम पत्ते से सुना था। मेंढक अब भी टर्राते हैं नीलराज के फूल अब भी मुस्कराते हैं, चट्टानों से पानी अब भी बूंद-बूंद टपकता है, परंतु मानव के कान बहरे हो चुके हैं, आंखें अंधी और बुद्धि मंद हो चुकी है। अब वह खरगोश और फूल से नहीं, बारूद और खून से खेलता है, और रात दिन रोता है और नहीं जानता कि वह क्यों रोता है। वह नहीं जानता कि उसने अपने बचपन के साथियों के साथ धोखा किया है। उस

मालूम नही, उसकी आत्मा म किस गद्दारी का जहर छलकता है, उसकी आखा म किस टीस के आसू है। वह अघा हो चुका है और अघेप्न म जिन भयानक स्वप्ना का दखता है, उन्हे अपन जीवन मे व्यवहार का रूप देता है।

यद्यपि मैं अब बूढा हो चुका हू, और जीवन अस्ताचल की लालिमा की भाति प्रति क्षण डूबता चला जा रहा है तो भी मुझे वह दिन अच्छी तरह याद है, जब मैं इतवार क दिन अपन साथिया क साथ खेलता रहा। मैंन अपने साथिया स कहा था कि मुझे भूख लगी है, मैं घर जा रहा हू। मुझे याद है, उस टिड्डे न मरा मजाक उडाया था। उसन कहा था कि वह तो घास क गुच्छा पर फुदकत फुदकत अपना नाश्ता कर लेता है। फूल एस मुस्कराया था, जस कह रहा हो कि वह तो खाना ही नही खाता। हवा म कपकपाता पत्ता कह रहा था कि वह तो हवा ही स अपना भोजन प्राप्त कर लेता है। उसन मेरा मजाक उडाया कि हम खाना आग पर जलाकर बनात है, तरह-तरह की गध क बघार देत है और इस जल गध-पूर्ण खान को खाकर दिन भर खट्टी-खट्टी डकारें लेत है। और इस पर अपन का बुद्धिमान, सभ्य और स्वस्थ समझत है। सच मानिए बचपन म य सब कटु सत्य अपन साथिया स सुन थे। परतु अब मैं कुछ नही सुनता, अब मैं गद्दार हू, वे मुझसे बातें नही करत।

खर, मुझे बडे जोरों की भूख लगी थी और मैं वहा स चल दिया। भगवान जान यह कस हुआ कि मैं रास्ता भूल गया और घाटी के नीच आन क बजाय, घाटी पर आ निकला। यह अजीब स्थान था—सुनसान और वीरान, पथरीला और खुश्क। चारो ओर लाल लाल बजरी फली हुई थी। सिर पर सूरज चमक रहा था और पानी का कहीं निशान न था। मर निकट शीशम का एक पड था। जड के पास से उसके दो तन हो गय थ। ऐसा लगता था, जस य दो तने नही है, दो आदमी हैं जो उकडू बठे मुर्गी हलाल कर रहे हैं। मैंन देखा कि मैं रास्त से बहुत दूर आ गया हू। रास्ता, जो मेरे घर को जाता था, बहुत नीच रह गया था।

मैंने इस पड का सहारा लिया और इसके दोना तनों के बीच से पसाग कर आगे बढा। यहा पर कभी विटप का वृक्ष रहा होगा, परतु किसी न

इस वृक्ष को काटकर जला दिया था। धरती में कोयले दबे पड़े थे और आस पास की मिट्टी भी जली हुई दिखाई देती थी। विटप का वृक्ष यद्यपि जल गया था, फिर भी उसकी जड़ें फूट आयी थी। उन्होंने अपनी नन्ही-नन्ही लचकीली कोमल बाहें धरती से बाहर निकाल ली थी। और वे बाहें अब हरे-हरे पत्तों के झुरमुटों में छिप गयी थी।

मेरे लिए यह स्थान, यह दृश्य, यह वातावरण बिलकुल नया था। मैं घुटनों के बल बैठकर इन हरी भरी टहनियों की ओर बढ़ा। सहसा हवा चलने लगी और विटप के पत्ते हर्ष से नाच उठे। मैं जब उन हरी भरी टहनियों के समीप पहुंचा तो जैसे सारा संसार ज्योतिर्मय हो उठा। कोई गाने लगा कोई नाचने लगा, किसी के पायल झनक उठे, शहनाई बज उठी, और कुमारियों के कहकहों के स्वर बिखर गये। यह सब कुछ मैंने अपने कानों से सुना। और आंखों से जिज्ञासा और मन में खोज की सनसनी लिये मैं टहनियों की ओर बढ़ता गया। मुझे अपनी ओर आते देखकर विटप की टहनियां सहसा बोल उठी, "आओ आओ, नन्हे बालक, तुम भी इस हर्ष, इस उल्लास, इस अनंत नृत्य और असीम आह्लाद में लीन हो जाओ।"

मैं और आगे बढ़ा। मैं देखना चाहता था कि ये शहनाइयों के स्वर और कुमारियों के कहकहे कहां से आ रहे हैं।

मैंने पत्तों को इधर उधर हटाकर अंदर झांका।

क्या देखता हूं कि इन पत्तों के बीच काले चमड़े का एक पुराना बक्सा पड़ा है और उस बक्स के अंदर सांवले-से रंग का एक प्यारा-सा बच्चा पड़ा है। बच्चे के बाल घुंघराले थे। आंखें छोटी छोटी थीं। परन्तु उन आंखों से निकलती निगाहें इतनी पैनी थीं कि हृदय में बरछे की तरह चुभी जाती थीं। उसके मुख पर मुस्कान न थी, विषाद भी न था, जिज्ञासा भी न थी। बस, वह चुपके से लेटा था और जब मैंने उसे अपनी बांहों में लेना चाहा, तो वह बड़े शान्त भाव से मेरी गोद में आ गया। उसका भरा भरा मांसल शरीर मेरी प्यासी आत्मा को तृप्त करता चला गया। मैंने अनुभव किया कि बच्चे को गोद में लेते ही नृत्य की झंकार बंद हो गयी थी। शहनाई के स्वर मौन हो गये थे। कुमारियों के कहकहे एक साथ निस्तब्धता में बदल गये थे।

बच्चा अब मेरी गोद म था। मैंने बच्चे से पूछा, "तुम कौन हो ?"

बच्चे न बडे शात स्वर म कहा, "मैं प्रेम का देवता हू।"

मैंने पूछा, "तुम यहा अकेले कैसे रहते हो ? तुम्हें डर नही लगता ? मुझे तो अपने कमरे म भी डर लगता है।'

उसने कहा, "मैं क्या करू, मुझे यहा अकेला छाड दिया गया है।"

मैंने उसे उठा लिया और चलन लगा। चलते चलते मैंने उमस कहा, "मैं भी अकेला हू। आओ, हम तुम इकट्ठे रहग।"

एकाएक उसने पूछा, "तुम्हारा घर कहा है ?"

मैंन उगली के इशार म अपना घर दिखाया, "वह हमारा घर है। यहा से जो पगडडी नीचे को जाती है, यही हमारे घर को जाती है। मैं अपन बाबा के पास रहता हू।"

उसने कहा, "ओह, तुम अपने बाबा के पास रहते हो ?"

मैंने कहा, "हा, मेरे माता पिता मर चुके हैं।"

वह बोला, "मेरी मा भी मर चुकी है।"

मैंने देखा उसकी आखो म आसू छलक आये।

मैंन उसे जार स छाती से लगा लिया और कहा, "चलो हमार घर। हम दोनो साथ रहग।"

उसके होठो पर एक विषादपूर्ण मुस्कान आयी। उसने धीर से कहा, "मैं तुम्हारे घर नही जाना चाहता। मैं यही रहूगा।"

यह कहकर वह मेरी गोद से उतर गया और फिर टहनियो क झुरमुट म लोप हो गया।

मेरा विचार है उस समय मैं उसके यो बातें करने और इस प्रकार चले जाने पर तनिक भी विस्मित न हुआ। मैंने कदाचित यह भी न सोचा हागा कि यह इतना नन्हा सा बच्चा कसे बोलता है या किस प्रकार चलकर झुरमुट मे गायब हो सकता है। न मुझे उसके एक उजाड स्थान पर मिलने से, न उसके बातें करने से विशेष अचरज हुआ। मैंने यह भी ध्यान न किया कि प्रेम का देवता भी कोई विशेष व्यक्ति होता है। मैंने प्रेम के देवता का उसका नाम ही समझा। मुझे उसकी यह बात भी असाधारण न लगी कि उसने मेरे घर जाने स इकार किया। सच पूछो तो मेरा भी जी उस घर म रहन को न

चाहता था। इसलिए मुझे इस घटना मे कोई रहस्यपूर्ण बात मालूम न हुई। हा, इस बात पर अचरज अवश्य हुआ कि मुझे आदमी का बच्चा मिला था, और वह भी सिर से पाव तक नगा, और इतना प्यारा, और भरे जगल म बिलकुल अकेला।

घर जाकर मैंने बाबा से इस घटना का जिक्र किया। जुम्मन भी वही खडा था और बूढी माई भी आकर यह किस्सा सुनने लगी। वे सब लोग चुपचाप मेरी बात सुनते रहे। मैंने देखा उन दोनो म से किसी ने मेरी बात का प्रतिवाद नही किया। मेरा विचार था, मेरे बाबा मुझे पीटेंगे। परतु वह कुछ न बोले।

कुछ ठहरकर उन्होने पूछा, 'वह नन्हा सा बच्चा तुमने कहा देखा था? वह जगह ठीक ठीक बताओ।"

म वह जगह बताना भूल गया था।

मैंने कहा, ' उधर घाटी म एक जगह है जहा चारो ओर लाल लाल बजरी बिखरी हुई है। वहा घास का एक तिनका भी नही है। हा, शीशम का एक पेड है और बिटप का एक जला हुआ वक्ष, जिसकी जड म से अब नयी-नयी टहनिया फूट आयी है।"

'बिटप का जला हुआ वक्ष यह सुनते ही मेरे बाबा का रग उडा। फिर वे धडाम से धरती पर गिर गये। जुम्मन भय से घिघियाने लगा और बूढी माई—वह हसने लगी। एसी भयानक वहशियाना हसी मैंने अपने जीवन म कभी नही सुनी। न ऐसी हसी फिर कभी सुनने की इच्छा रखता हू।

उसी रात बहोशी की हालत मे बाबा चल बसे। बूढी माई बिलकुल पागल हो गयी और कपडे फाडकर गाव म फिरने लगी। बाबा के बाद मैं ही गाव का स्वामी था। नबरदार और जैलदार भी। जुम्मन अब मेरे कमरे म मेरे साथ सोता था क्योकि बाबा और बूढी माई के चले जाने के बाद मुझे इस घर मे और अधिक डर लगने लगा था। कभी कभी जुम्मन मुझे अजीब सी दृष्टि से देखता और पूछता, "क्या तुमने सचमुच उस बच्चे को देखा था?'

और मैं कहता, "मैं कोई झूठ बोलता हू? चलो, फिर किसी दिन

वहा चलें। मेरा विचार यह है वह बच्चा अभी तक वहीं होगा—बिटप की टहनियां के पीछे। तुम चुपके से पीछे पीछे आना। मैं उससे पहले बातें करूगा। फिर मैं उसे गोद म उठा लूगा। तुम आकर उसे मुझसे ले लेना।"

अत एक दिन मै और जुम्मन वहा गये। परन्तु अजीब बात थी कि न अब वहा पत्ते नाच रहे थे, न शहनाइयो के स्वर और न कुमारियों के कहकहे सुनाई दे रहे थे। मैंने बार बार टहनिया और पत्तो को हटाकर देखा, वहा कुछ न था। केवल एक ओर मिट्टी में दबा काले रग का चमडे का बक्सा पड़ा था, चारो ओर लाल लाल बजरी थी और शीशम का पेड और बिटप का जला हुआ वृक्ष, और वही पगडडी जो मेरे बाबा के घर की ओर जाती थी।

जुम्मन का रग फीका पड गया। उसने मुझसे कुछ न कहा। थोडी देर बाद बोला "चलो घर चलें।'

फिर समय बीतता गया। और मैं बडा हो गया। तब मुझे बताया गया, मेरे बाबा को गाव की एक कुमारी से प्रेम हो गया था—अगाध प्रेम। कुमारी गर्भवती हो गयी। सहसा बाबा को दो-तीन मास के लिए बाहर जाना पड गया। लौटे तो पता लगा कि उनकी प्रेमिका के बच्चा होने वाला है। किसी ने बहका दिया, यह बच्चा उनका नही, किसी और का है मेरे बाबा बडे सदेही, सकीर्ण हृदय और कानो के कच्चे थे। एक दिन जब वह लडकी मेरे बाबा से मिलने उसी घाटी पर बिटप के वृक्ष के नीचे आयी, तो मेरे बाबा ने सन्देह, क्रोध और ईर्ष्या भाव के अधीन उसे वहीं मार डाला। वे नम्बरदार थे, जैलदार थे, सबसे धनी जमीदार थे, इसलिए बच गये। किसी को उनके विरुद्ध बोलने का साहस न हुआ। मेरे बाबा ने बिटप का वह वृक्ष भी जला डाला, जिसके तले वे मिला करते थे, जिससे उसकी कोई भी निशानी शेष न रहे। उनकी प्रेमिका इसी बिटप के वृक्ष के नीचे मारी गयी थी। वह प्रेम का प्रतीक कदाचित् वही बालक होगा, जो उस स्त्री के पेट म था और जो कई वर्ष बाद मुझे जले हुए बिटप की टहनियां के बीच मिला।

और वह लडकी उस बूढी माई की बेटी थी, जो अब पागल हो चुकी थी।

वह हरी भरी घाटी उसी दिन स बीरान हो गयी। वहा घास तक पैदा न हाती थी। पहाड की चाटी से लकर घाटी क उस कोने तक, घाटी का वह भाग वनस्पति से पूणतया वचित हो गया। कितन अचरज की बात है कि लोग इस बात पर विश्वास नही करत। उन्ह यह कहानी सुनाता हू ता व समझत है कि मैंन शायद स्वप्न दखा था। मैं बच्चा था, बिटग की टहनिया म सो गया और फिर इस खूनी काड न स्वत मेरी उप चतना म करवट ली।

परतु यदि यह स्वप्न भी हो, ता भी मैंन इस यथाथ से अधिक स्पष्ट और विश्वसनीय रूप म दखा। कस अपनी आखा पर विश्वास न करू? मैंन वहा उस बच्चे के अतिरिक्त, न उस लडकी को दखा, न छुरे को न जलत हुए बिटग का। अब सोचता हू शायद वह प्रेम का दवता ही था, जिसन मेरी छाती से लगाकर अपना तीर बाबा की छाती म पार कर दिया और वे इस चोट को सह न सक। परतु मेरा विचार है, मेर बाबा इसस पहले ही मर चुके थ। वे जीवित भी थे, तो मुर्दो स बदतर। और आज हमार बीच लाखो कराडो एस आदमी है, जो रात दिन प्रेम का सहार करत ह—किसी बिटग के नीचे, किसी सोफे के किनारे किसी घर की चारदीवारी मे। व अपनी प्रेमिका की हत्या कर देत है, और नही जानत कि ऐसी हर हत्या कही न कही किसी हरी भरी घाटी को बीरान कर देती है। वे किसी निर्दोष असहाय और अबोध बालक को अकेला छाड दत है, और वे नहीं समझ पात कि उनके लिए जीवन और ससार इतना सीमित क्यो हा गया है चारा आर लाल लाल बजरी क्यो है, धरती के सोत क्या सूख गये है और उसका कण कण क्या करुण क्रदन कर रहा है।

य लोग कुछ नही समझ सकत और अधे पथिको की भाति उस बजर, बीरान पथरीली पगडडी पर चलत चले जात है, जो मेर बाबा क घर को जाती है।

परमात्मा

परमा मां की आखें क्रोध स लालहो गयी। उसने क्रोध भरी दृष्टि स स्वग के बडे पुजारी की आर दखकर कहा, "हमीरपुर ग्राम म पासी किसान और उसका परिवार कितने दिना स फाके कर रहा है, और तुमने अभी तक उसके लिए कुछ नही किया ?"

बडा पुजारी थर थर कापने लगा। हाथ जोडकर बोला, "प्रभो, मन तो बडी चेष्टा की है, किंतु क्या करू, बेचार का भाग्य ही एसा है। कोई युक्ति कारगर नही होती।"

"कस नही होती ? परमात्मा ने अपने दड को फश पर मारकर कहा, और समस्त ब्रह्माड म प्रकाश वर्षा-सी हो गयी। 'चलो, हम देखत हैं, पासी किसान हमारा भक्त है। वह प्रत्यक समय हम याद करता है। यह हमारा धम है कि हम विपत्ति के समय उसकी सहायता करे।'

"सत्य वचन प्रभो !' बडे पुजारी ने माथा टककर कहा।

पासी किसान न द्वार खोला।

बडे पुजारी ने अपन साथी की आर सकत करके कहा, "यह परमात्मा है।" पासी किसान परमात्मा के चरणो में गिर पडा।

"मेरे धम, मेर मान क रक्षक ! मुझ पर दया करो। दो दिन स बच्चे भी भूखे हैं। उनका बिलखना मुझसे देखा नहीं जाता। अपने भक्त की

सहायता कीजिए।"

परमात्मा ने पूछा, 'तुम्हारे पास अनाज था वह क्या हुआ?"

बड़े पुजारी ने खाता देखकर कहा, "तुम्हारे पास दस बीघे भूमि है। इस वर्ष हमने वर्षा भी काफी मात्रा में स्वीकार की थी। वह सबकी सब तुम्हारी भूमि पर पड़ी। इस खाते में वर्षा का सारा हिसाब लिखा है। इस वर्ष बजट में हमने अकाल भी नहीं रखा, केवल किसानों की भलाई के लिए, ताकि उन्हें किसी प्रकार की शिकायत न रहे। इस पर तुम कहते हो कि तुम भूखे हो।

किसान ने हाथ जोड़कर कहा "प्रभो! मेरे पास थोड़ा-सा अनाज बचा था, वह भी बनिया उठाकर ले गया।"

परमात्मा ने अपना दंड फर्श पर मारा और धरती भय से कांप उठी। कई स्थानों पर भूकंप के झटके आये और हजारों मिट्टी के घर गिर पड़े। परमात्मा ने क्रोध भरी दृष्टि में इधर उधर देखा फिर कहा 'पुजारी, हमें उस बनिये के घर ले चलो।'

जो आज्ञा!' बड़े पुजारी ने हाथ जोड़कर, माथा टेककर कहा।

बनिया घबराकर बाहर निकला।

बड़े पुजारी ने कहा "आप परमात्मा हैं!

'जी' बनिये ने बत्तीसी बाहर निकालते हुए कहा ही, ही, ही! चींटी के घर भगवान आये हैं। निर्धन, भूखा बनिया, भला क्या सेवा कर सकता है! किंतु फिर भी जो कुछ है, भगवान का दिया है। आइए, भीतर आइए पधारिए!'

कुछ क्षणों में परमात्मा के चारों ओर बनिये के बच्चे-बाले इकट्ठे हो गये और नाचने लगे। एक बच्चा कंधे पर चढ़ बैठा और एक ने जेबें टटोलनी आरंभ कर दी। तारों के जवाहरात ओस के मोती, चांदनी के तार सूर्य का सोना सब कुछ जेबों में से निकाल लिया और फिर अपनी मां की गोद में डाल दिया।

बनिये और उसकी पत्नी ने भगवान को आसन पर बैठाया और गले

मे हार डाले, और फिर बोले, "भगवन ! हम आपके लिए इस गाव मे एक तिमजिली धमशाला बनवाना चाहते ह, परतु हम निधन हैं। हम इतना धन दीजिए कि हम ।"

एकाएक भगवान की आखें अगारे की भाति चमकने लगी। उन्होने क्रोध म कापते हुए स्वर म बनिये को टोक्कर कहा, "तुम्ह लज्जा नही आती ? तुमने पासी किसान के घर से अनाज उठा लिया। अब बेचारा भूखा मर रहा है।"

बनिय ने दडवत की और धरती पर सिर रखकर बोला, "मेरे पास जो कुछ है भगवान का है। किंतु एक विनती है। पिछले वष अकाल पडा था, तब मैंन पासी किसान का चार मन गेहू उधार दिया था। पासी ब्याज समेत मूल चुकान को राजी था। इसलिए जब फसल तयार हुई, तो उसन अपनी इच्छा से मुये अनाज लौटा दिया।'

' चार मन गहू पर ब्याज कितना होना है ?" परमात्मा ने पूछा।

"कवल चार मन, भोले बादशाह ! दीनदयाल, बस चार मन !'

परमात्मा ने बडे पुजारी की ओर देखा। उसने खाता खोला और पन्ने पलटकर बोला, "इतना ब्याज उचित है। खात मे लिखा है।"

बनिय न प्रसन्न होकर कहा, "मैं भगवान के आदेशो के विरुद्ध कोई काम नही करता। हा, वह जो गाव का जमीदार है, वह बडा अत्याचारी है। किसानो का बडा दु ख देता है। बलपूवक अनाज हडप कर लेता है।"

परमात्मा न बडे पुजारी का आज्ञा दी कि वह जमीदार के यहा चले।

परमात्मा को जाते देखकर बनिया गिडगिडाया और बोला, ' और देवता, वह मेरी तिमजिली धमशाला ।"

जमीदार के घर मुजरा हो रहा था। वह बडे आदर से पेश आया।

"आइए, आइए, परमात्मा जी। यहा इस कुर्सी पर बठिए—इस कुर्सी पर, मेरे निकट। यह दखिए, मैंन जयपुर से नयी नाचने वाली बुलायी है। इसकी कमर का लोच देखिए। इसका नाच—हाय-हाय ! बडे दिनो के

बाद आपके दर्शन हुए हैं। बचपन में एक दो बार मां के साथ मंदिर गया था, (हंसकर) आपकी सूरत अब तो पहचानी नहीं जाती। कई दिनों से सोच रहा था कि मंदिर में आपकी नयी मूर्ति की स्थापना करा दूं, परंतु क्या करूं, लड़ाई के कारण खर्च इतने बढ़ गये हैं कि ... । खैर, मैं प्रण करता हूं कि अगले वर्ष आपकी नयी मूर्ति अवश्य स्थापित करा दूंगा।'

परमात्मा ने कहा, ' हम उस पासी किसान के बारे में ... ।"

'हाय, हाय ... क्या अदा है !" जमींदार ने नाचने वाली की ओर देखते हुए कहा।

भगवान ने बड़े पुजारी की ओर घूरकर देखा, किंतु वह नाच देखने में इतना लीन था कि उसने कोई ध्यान न दिया।

लाचार परमात्मा को फिर कहना पड़ा, "उस पासी किसान के संबंध में हम ... ।'

'अजी आप किस कमीने की बातें करते हैं? वह तो साला बड़ा बदमाश है। उसके पास भूमि है, वह वास्तव में मेरे पिता की दी हुई है। मेरे पिता ने प्रसन्न होकर दी थी। वास्तव में मेरे पिता को धरती देने का कोई अधिकार ही न था। संयुक्त परिवार की संपत्ति किसी गैर किसान को कैसे दी जा सकती है? यह तो सरासर गैर कानूनी कार्यवाही है। मगर वह तो ऐसा जानिए कि मैं जरा आपका भक्त हूं। केवल अपना भाग लेता हूं—अनाज में से केवल एक तिहाई भाग। वरना देखा जाय तो वह भूमि मेरी है।

परमात्मा ने पुजारी से कहा, "खाता देखो !'

"अयं ?" बड़ा पुजारी अभी तक नाचने वाली की ओर देख रहा था।

परमात्मा ने चिढ़कर कहा, "खाता देखो, यह भूमि किसकी है?'

बड़े पुजारी ने खाता देख भाल कर कहा, "जमींदार सच कहता है। धरती का मालिक वही है।'

जमींदार ने कहा "देखा भगवन, आपका दास भला काहे को झूठ बोलेगा? अरे ! आप तो उठ खड़े हुए। जरा गाना सुनिए। अरे भई मुन्नू, जरा पान बनवा लाना। वह जरा ... अ र र र, उधर न जाइएगा हुजूर ! उधर पर्दा है। हां यह रास्ता है।' वास्तव में मैं स्वयं चाहता

हूँ कि किसानों की सहायता करूँ। परन्तु क्या करूँ साहब, मालगुजारी इतनी है कि तोबा भली। इलायची लीजिए। तनिक रियासत के हाकिम से मिलिए। यदि वह मालगुजारी कम कर दे तो सारी कठिनाइयाँ दूर हो जायें।"

चपरासी ने कहा "इस पर्चे पर अपना नाम, पता और काम लिख दीजिए। साहब इस समय सर फराटा मुकर्जी से बातें कर रहे हैं।"

भगवान ने पर्चे पर अपना नाम लिख दिया।

चपरासी पर्चा लेकर भीतर गया। थोड़ी देर बाद बाहर आया।

बोला, "साहब बोलते हैं, पांच मिनट ठहरो। वे अभी खाली होते हैं। साहब ने बड़े पुजारी को भी सलाम बोला है।"

पांच मिनट बाद पेशी हुई।

रियासत के हाकिम ने बड़े कोमल और विनयपूर्ण स्वर में कहा, "वास्तव में सर फराटा मुकर्जी से भेंट का यही समय निश्चित हुआ था। इसीलिए आपको प्रतीक्षा करनी पड़ी। नहीं तो, क्षमा कीजिए, मैं तो आपकी प्रजा का सेवक हूँ।'

'पासी किसान भूखा है। आप मालगुजारी बहुत लेते हैं। यह बहुत बुरी बात है।'

"देखिए देखिए, आवेश में न आइए।' हाकिम बड़े नम्र स्वर में बोला, 'मुझे रियासत का राज काज चलाना है। इसके लिए रुपया चाहिए। रुपया कहाँ से आयेगा, यदि मैं किसानों से मालगुजारी न लूँ? आजकल चारों ओर की रियासतें वैरी हो रही हैं, इसलिए शस्त्र बनाने वाले कारखाने लगाने पड़ रहे हैं। इन सब खर्चों को पूरा करने के लिए मालगुजारी और लगान बढ़ा दिये गये हैं। इसमें आखिर पासी किसान ही का लाभ है। नहीं तो रियासत के साथ साथ उसकी धरती भी दूसरी रियासतों के पास चली जायेगी।"

बड़ा पुजारी बोला, 'हाकिम ठीक कहते हैं।"

हाकिम बोला, "मैं तो सदा से आपका सेवक हूँ। किंतु यह तो

सोचिए कि क्या यह मेरा धर्म नहीं है कि मैं रियासत की रक्षा शत्रुओं के हमले से करूं?"

बड़ा पुजारी बोला, "हाकिम ठीक कहते हैं।"

चौबे जी मंदिर के द्वार पर खड़े हुए भंग घोट रहे थे। मंदिर के चारों ओर फलदार वृक्षों का बाग था और बाग में मिली चार एकड़ भूमि, जिसमें अनाज, सब्जी-तरकारी सब कुछ होता था।

परमात्मा ने कहा, "यह अनाज तुम पासी किसान को दे दो।"

चौबे ने भंग का लोटा चढ़ाते हुए कहा, "बावले हुए हैं आप? यह अनाज यह फल, यह फुलवारी सब भगवान के अर्पण हैं। और जो वस्तु एक बार भगवान के अर्पण कर दी जाय उसे कोई दूसरा मनुष्य नहीं ले सकता। क्या आप परमात्मा होकर इतना भी नहीं जानते?"

परमात्मा ने बड़े पुजारी की ओर देखा, और बड़े पुजारी ने परमात्मा की ओर। फिर बड़े पुजारी ने सिर हिलाकर कहा, "चौबे जी ठीक कहते हैं। शास्त्र में ऐसा ही लिखा है।"

सायंकाल को थके हारे दोनों साथी पासी किसान के द्वार पर वापस पहुंच गये। पासी के घर के भीतर से रोने पीटने की आवाजें आ रही थीं। छोटा लड़का भूख से निढाल होकर मर गया था।

और किसान की पत्नी अपनी छाती पीट रही थी।

पासी किसान ने पूछा "अनाज लाये?"

परमात्मा ने सिर झुका लिया।

बड़ा पुजारी बोला, "धीरज धरो पासी किसान—धीरज के अतिरिक्त और कोई चारा नहीं।"

'हाय मेरा लाल! हाय मेरा नन्हा चांद!' पासी की स्त्री बिलख उठी।

एकाएक परमात्मा का चेहरा प्रसन्नता से खिल उठा। उसने सिर

ऊचा करके कहा, "पासी किसान, आओ हम तुम्हे और तुम्हारे समस्त परिवार को स्वर्ग ले चलते है।"

पासी किसान बोला, "वहा खाने को क्या मिलेगा?"

पुजारी ने कहा, "वहा खाने को कुछ नही मिलता। वहा केवल परमात्मा के रूप की छटा-ही छटा है।"

पासी किसान ने कठोर स्वर मे कहा, "परमात्मा के रूप की छटा तो यहा भी है।" और यह कहकर उसने द्वार जोर से बद कर लिया। परमात्मा और बडा पुजारी चकित और दुखी होकर बाहर खडे रह गये।

जब वे दोनो विभिन्न लोको से होते हुए अपने स्थान पर वापस आये तो बडे पुजारी ने चुपके से परमात्मा के कान मे कहा, 'देखा आपने ये किसान कितने कृतघ्न हैं? स्वर्ग मे भी नहीं आना चाहते।"

परमात्मा ने रोषपूर्ण स्वर मे कहा, 'दया करो, नरक मे डाल दो सबको।'

बडे पुजारी ने मुस्कराकर कहा, "इसका मैंने पहले ही से प्रबंध कर दिया है।"

